व्यायां भाषा या अपने विन



र्गरःळग	I
गविदे सुग्राश्रुय शुं इस गाव्या र र गाय्य र र्स्नुव से	
वक्के'नवे'नेस'म'न-१५'म।	2
नर-र्ने त्युन-प्रदे-रेस-प्र-न-१५	13
नेशःश्चेःश्चेन्द्रःश्चेःनःलेव्यत्रःश्चेत्यःनन्त्रःया	21
য়য়য়য়ৣয়য়য়য়য়য়য়ঀঀয়	N
कुन्से र्वा अया शुअ की त्यस नर्वे न रहें त्य	35
त्रः ये दः ग्रीः नक्षे दः देयः नर्वे दः द्धंयः न १९५४ ।	37
क्रियाशस्यायन्त्रम्।	41
म्यान्नेवावश्राक्षेत्रकान्नेवान्यान्येवान्नेवान्नेवान्ये	44
शेशश्चित्वश्चुं सुश्चार्शः दर्वे स्वा	47
श्चि.धेश.रेश.ट्रेंच.ग्री.दूर.योशज.रे.पत्र.क्षेत्री	51
रेसामानविष्यदेर्देन्सीर्देन्यासयान्सार्स्यान्यदेशनुरादह्य	•

न्ग्रम:ळ्य

प्रि.पर्स्य.क्षेत्रा	58
यःयःवज्ञशःजुःसर्देन्'तुःचेत्रःकुंषःने।	62
यात्र दुः सेवायान्द्र त्यास्य स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था	64
ग्रम् छेत् कुर् से निवेदे सायस की इसामाव्य	
হা-ক্রুন্-গ্রী-অমানর্ব্রন্-ক্রেঅননপ্র-মা	82
र्श्चेर्ग्यु प्रयानर्गेर् रहेयान निर्मा	87
क्षावर्त्ते म् कुर्ग्यो व्ययः नर्ते र् कुष्ण न निर्मा	93
इयापर्चे राज्ञासे प्राण्डी प्रसामर्थे प्रसामन्त्री स्थापनि प्रमा	104

कु नड्या कु न्या न कु न कु न्या महिंदा कु या महिंदा क

शेर-श्चन-प्रय-प्रह्म-प्रग्निम् अपनिष्ठित्र

नेवावर्डभावेदायाद्वसम्भाक्षायाद्वीभादाद्वाक्कुत्वसारेदासेत्राह्याक्ष्याः क्ष्या क्ष्य

यविदेः भुग्वाश्वया हो ह्या यविया र र या श्वयः विदेश भुग्वाश्वया हो स्था या विया र र या श्वयः

२००१ वि.स्.ची.प्रम्भूत्वे.प्रम्था । श्वी त्राची श्वी त्री त्राची त्राची

वक्रे नवे ने अपान निम्म

वक्रेनिरेनेसम्। नर्नेन्युनमिरेनेसम्। नेस्सूरेशेन्न्सूरेन येव संदे द्वयान विदासदी | द्वार्सि दी न स्रायान दारे दि दि सा तु सि द यदे से इसम हमा हे भे मारा प्रा हे के ले प्रमा हु से प्रा हुन सा प्रा र्भे गुवरळं राया खुका र दें र ग्रेका हिया या अळव र ये हे वा स बुवर ये वा नक्कित्रमा विष्ठाव्यायाक्षात्रेत्रायरार्यायाविष्ठाव्यावाया वयास्तियः यात्र्रीं व्यामार्शेनायाः हैया यात्रा वया मश्रीम्यासास्यसाम्बद्धान्य वित्रम्य नित्रम्य स्थानित्र स्थानि स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र र्शेयाशर्देर्ने । नेर्श्वेर्ग्धेयाधियाधियाळयाश्वर्भायाहेशाधिशः याडेया'य'याडेया'शेशशक्याश'हे'येया'यर'व्याश'रा'य'यहेद'दश'अदय' र्भेयमारुवाळग्यावरार्मेयाग्रीयायरयाश्चेयाशुग्रूराहेरा रेप्यायासु में कुर इन्नेग येदे विमया है जुगागम। यर क्याया में निर्मे जुगाने मटावि.य.पशिसार्टा सालसार्च्यासहरूपारायासारावियात्वाश्वसार्द्वीतस्य इगाक्षरायायादह्यातुःक्षेरामदेश्यायाञ्चेयाप्ययाद्वाय्वराचेरा कें बुद निर्देश प्रक्रिया के निर्देश प्रक्रिया है विद्वार के प्रक्रिया है विद्वार के कि कि कि कि कि कि कि कि कि नुःश्चीरःमदेःसदयःश्चेशावस्यानुगाःस्वाधेवःधेयः। विनःनि । देवेःस्यायः इ.क्रॅट्-ल्ला, चर्च, खं.क. चाष्ट्र भारत्र कर्म क्ष्राची क्ष्र मान्य स्थान प्रत्य क्ष्र न्या क्ष्र स्थान क्

प्रत्यास्त्रम् विषय्यात् विषयः विषय्यात् विषयः विषयः

ये न या वा स्टर्स प्राप्त विद्य हम्म स्ट्रिस्य स्ट्रिस्

ने दस्य गरी दरम्य या शुः श्चेया कु स्वात्व स्वात्व स्वात्व स्वात्व स्वात्व स्वात्व स्वात्व स्वात्व स्वात्व स्व ૽૽ૢૺ૾ૹ੶ૹ੶ૢ૾ૺ૾ૡ૽ૼૼૢૼ૽ૹ૽ૼૼૹૢ૱ૹૢ૱ૹૢૣ૽ૢૢૢૢૢ૽૽૱ૡૢ૿૽૱ૢ૽ૹ૽૾ૼ૱ૹ૽૽૱ૡ૱ૢ૽ૢ૽ૢૢ૽<u>૽૽૾ૼૺ૾</u>ૢૢૢૢૺ देवे हे अ शुः क्रें म सुम वी मे वा या ग्री के या थू नु या यह या है। के म सुर वेया पात्र द्वी ह्वाया शुर् नगर लेया वित्र द्वी रहें र न गरे स्वा नहर र्श्वेययाग्रुयायुयानेयाग्रियानुययाश्चायीयाञ्चा ग्रिन्याग्रीयन्यन्यानेता धे भे अ दे 'नरे 'सूगा'न हर सूँ अअ गारुअ रहें र नर रेगा अ गारेग 'ह दर' यदे भेरायायाय भूर हिटा दे विसायदे ही ह्वासा सु प्येर भेरादिर ही । स्यायाया पि.कु.रटा र्या.रटा याद्येय.रटा वि.य.र्यया.रटा वि.य.र्यया.र्यया केरःभ्रमा इ नदे नन रे वियापदे ही ह्वाया शु ही न हो भू से विया र कुर्ग्येशनस्यापदे सुन्नेयापदे द्वी ह्वायासुन् स्वदे दर्गा उर्म्सुः से वर्जुदार्दे। दें द्रम्म अर्थी वदाह्या अर्था दुः चाल्ये स्वाप्त विष्य चुः चात्र विष्य अर्था चुः चात्र विष्य अर्था यदे न्यीय वर्ष नुराह्म वर्ष नु न वर्ष न न स्व श्रूर न प्रकर में।।

देवे हे अ शु पद् भी अ ग्री सुद सेवे से पा अ ग्री के अ ग्रू प् स् अ अ अ अ स विसाया वर्षे स्वीरा सुरार्से विसाय दे ह्वासा सुराया साया से विस्तु है र र्शियाया ग्री देवा या वि द्या ग्री से महिया थे भेया वे हे द्रेश्याया ग्री श्रेराश्रें श्रॅराइवायवे केशायायाय क्ष्राचिता है विसायवे ही ह्वासा शुप्यासा यःश्रेवाश्वासदेन्द्रेन्द्रस्रशःग्रेन्धेन्द्रभा सेदेन्वस्य विस्वादिन्धेन्द्रवाशः शुःसुशःग्रीः से 'हें द्रायाय वर्षा न वरा न तुरा वहुः न ते । वृष्णा स्वरे न्नरःसं वेसायदे धे ह्नासा सु सु र्से न्या सु र इमालारेटररुकुःनदेरन्त्रम्यायार्केम्यायाय्युटा रटाकुर्ग्येयानस्या यदे दे वेय पदे ही ह्याय शु सूय दे वेय से वेय या एप से केंद्र इस्राची वट हेरा राज्य विषय स्ट्राची खेर चार है। से वार से हिर से च वेशः ग्रुः नः नुन्। तुरः दशः नुः नः र्श्वेः विनः विनः निनः विश्वाने ना से नः दशः म्रो स्वाप्त्यर स्वाप्तिया स्वापतिया स्वाप्तिया स्वापतिया स्वापत रायासे सूना नसराययायया वितासित सुति सून नाय हुन है।

नड्र-र्र-र्ना गावक्षःवक्षः श्रेट्या र त्युं विद्य न्युं विद्य न्य

ने स्वात्विद्धान्त्र विष्णा क्षेत्र स्वात्वित्त विष्णा वि

विद्यान्य विष्ट्रिया प्रति हे या शुः महा निव्यान क्षेत्र निव्

नेश्वान्द्रम्यविवानकुन् दुवे गुवाहेषा नविवासवे कुनान्द्रान्य राज्या ब्रूट्यायाची अपने ब्रूट्याया स्टर्स्य अपने स्ट्रिक्यी विद्याया प्रत्य न्ना सदे के सक्र से हैं न निर नदे दें न में सिन सदे दस सिन है न नेवर्र्द्रित्रां नेदर्भेदर्भदर्भेदर्भदर्भेदर्भवर्भेदर्भेदर्भवर्भित्रम्भद्भविष् वकराया ने भूरावकरानवे क्रेन दी भ्रीताया प्यताकन ग्री रें कुरानी कुरा वस्र १८८ द्री सदे त्या स्रे वस लिया सार है तस की सार्हे हिंद सार्हि नश्रूवाग्री द्वारायर पेर्टि पा द्वेदे र्रा प्रविव उदा पीव प्राय श्रूर पा दिर्या है। श्वेरःगवे रें कुर मे अर्द्राया दुवा श्वेर छे श्वेर र् श्वेर पवे वर वर वर दे वह वे ब्रूट न त तुह न जी ही है दें य द य है दें द से न य छी ब्रूट न प्र न स धेवर्ते ने यः सूर्य न र सूर्य वेश ग्रम्य विशेष

देवे हे अ शु श्रूट न दि न विंद न विं

देर्-ग्रेश-विन-स-क्ष-तु-सूर-पश्र-ग्रह-केश-दृदश-सदे-सूर-शर-दे-न-द्यर-र्रित्सन्सर्सेर्सेर्से स्कुर्नित्रकर्त्या देवे क्रेत्रे दे स्कूरिया सत्कर्ते से मुद्राची सुद्राचस्र अठद्राद्र स्राये स्रायः स्राय्य अप्तायः स्रायः स्राय नुवे इतिरामी अर्रा सार्य है नवे इतिरामी अयर्र साम्या है अ गुःर्मेषानमा क्षेप्रदेश्यविराग्चे प्रमुख्यास्य स्थानिय स्थित स्थित स्थित स्थित स्थानिय स्थान र्रे अः बुदः १९८ ग्रे : इस्रायर प्येंद्राया सेदे : रदा विदाय सेदाया प्याय : वेदस्य है। श्रुट्यादे र्रे क्रूट्यो अर्ट्य राष्ट्रया श्रूट्यो रेवा हि श्रेव राष्ट्रय न्या दे वर्तते सूर न वर्तुर न धेत्र व हि रेवा द अ है वेद से व स ही सूर न प्रम नः अधिव के । देः वः श्वरः नः अके दः यः दरः विवः हः श्वेरः यः वेरः है। दिवे हे अः शुःसकेन्यानिव्यानिक्तानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक्षानिक् र्सून् ग्री के सून् ग्वान्य ग्वायदान्य या सक्स्य राग्री स्वा त्र्या स्वा स्वा स्वा क्षे.ये.क्रूट्रश्रद्धयात्रायात्रायात्रक्ष्यत्यात्रक्ष्यत्या दे.वे.दयः यादेवदः वी.लगः कुरःस्था कुरः इस्या भ्रेरः पादे र तुः सदे व्या र तुः सदे र स्वा स्व र गदेः रें कुर वी अर्र् र स दुग क्रें र वें वा है। क्रें र वी क्रें या से र वा स नन देंगामी विमाले न्यर से प्यर देंद्य है। ब्रेट्म निक्क है द्वी प्रमुख निक् निवासायदे विवाले निवास निवास निवास के न शुःकुन्द्रमाञ्चन्यवे मुन्योभने व्यवे श्वराचा व्युत्ता विश्वेष वशासुन्यार्सेषायाणीःसूरावान्यरावासाधिनार्ते। ।देग्याहेरार्हेनार्द्रार्हेना मळेत्रसंविशानुर्वे ।देःषदाहेरार्वे नार्वे भूतायाःषुयावादाषदाक्षे प्रतासरा

हुद्दानित्ते सुर्श्वेस्त्राण्डे स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्त

गुवर्हेग्राम्प्रिन: न्दर्वेस: सदे: नर्नुर विदर्वेद स्वेद ग्वेस ग्वेस ग्वेस न्नायाञ्चर्द्राण्येशान्त्रायाक्षात्तेराक्ष्रेरायरान्गराययायदेर्भूरानायळरा मी। दे यश मान्त्र मदे महिशासूर सम्भाग मान्त्र मार प्यार से प्रकर नदे धेर्गीकेशमदी सूर्यान्गर्यसमित्रस्ति सस्ति गुन्हेंगायार्थे न-१८ विसायि नर्ने प्रत्याति । विदार्श्वित वात्रसावाययः नवायः हे विदायीयः वियामान्ध्रात्ते दे दे दे राज्यान्य स्थान दे स्थान वियामान्य स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स मदे मदे नदे राष्ट्र राष्ट्र रम्म रामा विष्या मारा प्यार से प्रकर मदे प्येत से से मन्त्री सूरम्यसकेर्मियेसकंदिन्त्री गुद्रम्गियार्थेन्यर्मिस्यस्येस्यर र्'तर्वराविराक्षेत्राचित्राचालायार्यातालाशक्षश्राणी श्रूचात्वश्राचेतार्धेशाचिता राष्ट्रातुते क्रेंद्राश्रद्भवाष्यस्य सदे श्रूद्राचायक्रम् ही। दे यशामान्वरायदे सदे गहिरासूर रगरायावद गर पर है। वहर नदे पीर ग्री ने राय है। सूर नःहेरःर्वेनःग्रीः सळव हेरः पेवर्दे॥

स्यःश्रृंत् श्रीःत्र्यः यावयः वाष्यः द्वाः प्राः याः श्रृंतः श्रृंत

ने 'क्षूत्र' प्रकर्म प्रते क्रें त्र प्यान प्रते में त्र प्यान प्रते क्ष्र प्रते क्षेत्र क्

बूट अळे ट वें न न शुअ दें ट न शवा दि र न र स र म वे अ र दें वा र प

स्थान्यःश्राम्यःश्राम्यःश्रे व्यान्यः स्वान्यः स्वान्यः

र्ते त श्रू र निर्मे से प्राप्त के प्राप्त

क्रूॅंट हेट खुयर दु : होट पर हे स धेव हें।

र्भात्रास्थाः स्वर्धेस्थाः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्

ही र दें र नार्यायायाया निर्माणया है र हि र वार्या र वह वा में । इस र हे र मार्थायायाया के राज्या है र हि र वार्याया र वह वा में ।

दक्के नितं में स्वाप्त प्रति म्हासाय विस्ति । विस्ति में स्वाप्त प्रति । विस्ति में स्वाप्त प्रति । विस्ति प्रति । विस्ति प्रति । विस्ति प्रति । विस्ति ।

नर-र्ने त्युन-परे-रेस-पन-पन-पा

गिरुश्यानरार्दे विद्युनायवे रेसायान्त्रन्याते। दे व्हरावके नार्वेदा वन्रावर्षेषार्अं अप्रीशः दुरः वन् वार्षे वार्षेराया ने वुरावदे के रेन्। ॻऻॺॺॱॺॺॱॺॗॸॱॸॸॱॾॕऀॺॱय़ॱऄढ़य़ॺॱॺळ॔ॺॺॱॸ॓ॱढ़ॺॱऄढ़ॱॸॖॱॾॖॱॸढ़॓ॱक़ॗॸॱ शेस्राने श्रीताविश्वस्यान्यान तस्य मारी विवाले विवन्ति विवित्ति । व्यास्रीःर्रेयः तृः क्रुर्याः ते व्यवस्य स्थायः वर्षे वर्षे वरः देवे स्थ्यः युवायः धेवा ने निर्दर्श्वासक्रान् श्वेरामिस्रान्ग्राम् से बुरन् निर्मात्राम् ह्याश्रा श्री के प्रदा प्रमार्थ श्री का त्रा के प्राप्त का से प्राप्त के प्रा र्रे। ।दे प्यर पक्के न र्देन म्याय की न वित्र प्रम क्यूम पि क्रूम रेदेन ने माथ यने नरमें दिख्या है र लेव प्राया के साम है पा है प वक्के न दिन वासवा की सेससा ने नम दिवास सा की ख़ुत है वा की न की न नि सेससाग्री हेर ये दा ज्ञाराया नहेदाद्या ग्राट र भ्रे विग्रूर ग्री से दे हसारा ठवानी नरार्ने हुरानी खुराठवाह्म श्रीवानी सुरार्धे हैरायायशार्ये नायाश्र में नितं रहें या ग्री भार दें भागात भाषा वश्वान दें।।

तरार्दे म्यानासान स्वास्ते से सम्म ने स्वास में स्वास मे स्वास में स्वास मे

र्यस्तिन्दिर्यस्तिन्दिर्धिन्द्रपिन्दिर्विः द्विः द्वि

द्र्यास्य विद्यां भ्रत्य स्थानि स्था

वृश्वित्यम्द्रित्ये विद्यान्य विद्य

ह्यत्त्रभा तर्वे न्यान्ये न्याय्ये न्य

श्रेरामी इसम्मर्भाती भेरायश हुरादरा श्रेरायळें यादरा है अदरा

श्चित्रपानम् सान्ता सर्वेत्रपम् त्युनापते श्चित्रपा वेत्रासर्हेत् त्यत्रान्त्रन् र्दे। कें कर्रा ग्री हिरासरा ने रेरा सबयान गान र्ना धेन प्यरा स्री निय सेन र्केंग्राय, यात्राय, श्रीत्राय, याद्री स्त्रीत्राय, श्रीत्रीत्र, श्रीत्राय, श र्षेर्प्यश्रदेशप्राधेर्। ग्रायाने विगानर्त्रत्यश्री निर्मेत्रसार्केष्यश्रा विगानन्त्रभी अवस्पके कुरासे ग्रुश हे । धरानस्रे ने हे न ग्रुन हे । ग्रुन श र्शे दे सूर ग्रुश हे विया यत्त स्या यत्त स्व स्व स्य स्व से स्व से से से से होता क्षिम्याने भ्रे भ्रे भेराये ताय प्राचिताय राय स्थित प्राचिताय राय स्था । वयानन्त्रभी सम्मानके कुराने भेत्र वित्र स्थाने बे वेंदि त्या कृति न सम्बद्ध स्था सूत्र पाति विव सूत् सूत्र स्था स्था सी या श्वेदःवादःवर्गः ने वदःदेवःवावयः भ्रवयः ग्रीः ददः विवः वक्तः द्विः हिवाः यानर्वित्रायदे सुराद्रा निष्य स्था न्या न्या न्या निष्य स्वाया निष्य स्वाया निष्य स्वाया निष्य स्वाया निष्य स्व दिन्यासयः सर्देवः न् : चुर्या ने : वसः दिन्यासयः ने देः न विव : पदे : कुन्यो सः हेर ये द नु अ द अ ख़ वा अ र्थे वा हु यह अ रादे हेर वे च गु व रा दह हु अ सहसर्न्य नर्ने वि सुर खुरा सूर निवेद सुन सं धेद हैं। । नर ने वि हेद था वक्के कुर हे रहं अ जुरा गर नर शेर रर या नर हैं या नर है या नर हैं या नर है या नर हैं या नर है या नर हैं या नर है या नर हैं या য়ৄয়ঀ৽ঀৢয়৽हेत्रअर्वेदःषदःषयःয়ৢ৽ঀয়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽ हेन हैट परे दे प्रश्राणेन सूस्राप्त दिन प्राप्त का प्रमान नरः अदे 'दर्दे अ'गिबे 'यथ'गिशुर्। वि'ठेग नर देवे 'के 'कंद 'विग'न द्व' द्

गश्रदश्याने स्टास्टानी विवानी निवानी निवानी

विं विश्वान्त विर्वाणयम् न्वार्थस्य न्वार्थस्य विश्वान्त विश्वान्त विश्वान्त विश्वान्त विश्वान्त विश्वान्त विश्वान वि

अरःश्चे त्राक्षे नः न्दा धूरःश्चे नः न्दा नर्दे अर्थः विकानिक्षः नः श्चे नः स्थानिकः विकानिक्षः नः स्थानिकः विकानिकः विक

न्ना-हु-भीन्-त्यानाश्व-भित्त-हु-त्योत्य-भाग्य-भन्-भाग्य-मित्य-भाग्य-भित्त-भ्रान्त-भाग्य-भित्त-भ्रान-भ्रान-भ

यहर्ष्याची । व्याप्त विद्या व

र्मरळॅन्ग्री। वह्रमत्त्री वह्रमत्त्रीयः प्रत्येवः म्यान्यात्रीयः व्यवस्त्रात्त्रीयः विष्यस्त्रात्त्रीयः विष्यस्त्रत्त्रीयः विष्यस्त्रत्ते विष्यस्त्रत्ते विष्यस्त्रत्त्रत्ते विष्यस्त्रत्ते विष्यस्त्रत्ते विष्यस्त्रत्ते विष्यस्त्रत्ते विष्यस्ति स्त्रत्ते विष्यस्ति स्त्रत्ते विष्यस्ति स्त्रत्ते विष्यस्ति स्त्रत्ते स्त्रते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रत्ते स्त्रते स्त्रते स्त्रते स्त्रते स्त्रते स्त्

द्रश्रम्पते । इत्रप्रमित्र न्या । वत्रप्रमित्र । वत्रप्रमित्य । वत्रप्रमित्र । वत्रप्रमित्र । वत्रप्रमित्र । वत्रप्रमित्र । व

निर्देगानी हिन्स्य है। न्ह्यूय निर्देश न्स्रें हिन्द्र असे स्टेंना स्थ्रे नुन्द्र भेर्न्य से हिन्स से क्रिया निर्देश निर्देश के स्टेंना स्थ्रे श्री-प्राचिति । भ्री-श्री-प्राचित्र सक्कार्यस्था श्री-प्राचित्र प्राचित्र प

चराईदिः त्र्वाँ द्ध्या ची । विद्या निष्य प्राप्त निष्य निष्

या त्र्या श्रेष्ठ । व्या स्ट्रिं प्राच्या त्रा स्था त्र स्था त्य स्था त्र स्था त्य स्था त्र स्था त्य स्था त्य

स्थानी स्थान स्था

नेशः श्रे शेन नुश्चे नाये वाये वे खंया न विनाया

त्रायश्याश्वर्यःश्वरः। सहर्त्यश्चरः स्वर्यः स्वरं स

यर नन्दि। दियर से से निष्य से निष्य से निष्य से से स्था प्रमानिया मन्दर्निर्देश्यित्रभावश्चित्रभाविः श्वेत्रभाग्नी साम्वर्देश्चित्रभाग्नी साम्वर्देश स्थानी स्थानी स्थानी स्थानी गर्धे अ हे 'शु अ अर्दे दे 'ग हु अ र्थे 'सय पा स स अ शु र प्रदे हें द गु अ श्वेग 'ये ' ८गर-८सर-७.२.४स्थर-इ.र्हेट-स्या-यर्व-इ.स.पहिरा-ग्री-सूतरा-हेट-इययाद्याननयाप्याय्ययाय्ययाय्ययान्। नयाः क्षेत्राः विटाञ्चनयाः नेराक्रम्या यः इवार्यदेशभ्रम्भावस्य सुरामा सह्वार् हिता भ्रामा ने देश इंशाशुर्यायापिकागाय्यकाति।वियायो वियायारे देशायर द्वूराय देश्यदे श्चे पात्र शर्रा पदे शत्र शर्दे सार्श्वेषा प्रवेश श्चेश सार्क प्रशास स्ट्र राषे रापि । न्तुश्रास्य नर्रे ने नदे द्वार्थ के रादह्याया नेदे सुवादे विवासर नर्रे सदि।विवसःश्चे ने न्दरसदे श्चे वाद्या श्चे श्चे वाद्यस्य वाद्यस्य विवाया इस्ट्रिंट ख्राने द्वानिक राष्ट्री व्यवस्त्र का निवस्त वित्ता के प्रत्ये वित्ता के प्रत्ये वित्र के वित्र के वि र्दिःगाव्यः भ्रान्यः ग्रीःग्रवः हिंगाःगार्थः नदेः हुरः ह्ययः वियः वयः सूरः यळेटः र्वेच ग्रा शुस्र देस निवेद भिरा वर दें प्रकेष निवेद प्रिया स्या स्था स्थर खुर्यास्यायायवे देस्यवे भ्रवया सुरवन्दर्या वया धुर्वा शुरावा भ्रेषे सार्वया रे श्वरावि रहे वा श्री अपकराया देवे श्वेषा श्वादिया अवा श्वीप्तरा ग्री:हग्रश्चराद्युट:बेट:देंद्र:ग्रयारादेवे:देग्रशद्य:ध्रे:संबिग्गीरा षि.वियो.पट्टेश.सप्ट.रेयेश.श्री.केर.सक्त्रम्श.श्री.र्य.श्री.य.धर्मा.स.र्टर. ख्यायार्थेयायी हेर वियायार स्यायह्या हेर विया से स्याय स्था ८८.स्.रे.से.से.से.यद.से८.स.चेश.व.सं८.तर्याश्रासद.याचे.८८। से.यायश शु:८८:सूर.केट.सक्समा श्रुर.यदे सुसमाधित या

म्याम् विश्वास्त्रित्वायायश्चन्त्रात्ता भीत्राप्त्राचित्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् विष्ठात्र्रम् स्वास्त्रम्

सरयान् सुरामेशामी सायमेया द्धया है। सरया ने ही सदि में निदे दिया वॅर्ग्यादे स्ट्रेर्मी नर्ने र पॅर्म्सर सरय वहुमा नर्मन निर्मे । निरम दरसें सेरसेरसेंदी है दें सक्षेयान दे है या साम्य नियान विकास या वरः विव र तुः श्वानवि । दे व व न बुर हे सुर र वे र न व व र र व व र र व व र र व व र व व र व व र व व र व व र व व वक्के.य.ज. विया यो. यर. यो. जेश सारया श. स्यशाद युराय विदेश विस्रशः यशः गुनः पंभेदः प्रभा शः सुनः ग्रीशः वहें दः प्रनः ग्रेना सुनः ग्रीशः सुनः यर होता । बे कुर मे अ अ र व र होता कुर कुर मे अ कु अ धर हो नि । अर अर से लिया यत् व से ए या व सुर या शर स हो हो सु गैर्भाञ्चेत्रायराग्रुरायरायराष्ट्रराष्ट्रराये ते श्चे तरागिहराणा वे स्ट्रराञ्चाया न्यास्य स्वाप्त्र । दे निष्या यत्त्र सेंदाय दे द्रिया पद सुदाय स्वाप्त से क्षे श्चेत पर ग्रुग पायम में र में र में ते निर ते ग्रुर या अवव से नर्वे र यर्वे । दे विगानर्तु से रामन्त्र सुराम् स्था से तामरा हु सामा स्था सम्मात्रम् मान्यात्र स्वामान्य स्वाम नःवःलरःकुरःग्रथरःध्रथःश्चेवःयरःग्रुथःयःष्यःम्रदःयगःव्युशःयःवेः नक्षःगिहेशः न्दान्यागिहेशः सर्वे वित्रस्त्र संसे त्तुरार्थे व्याया नर-र्देर-स-क्रे-सरय-ग्री-मान्य-भ्रम्य-स्य-म्य-मान्य-रेस-सर-माश्र्रसः या अहेर विजेय प्राप्त श्रम्यो अम्य विष्य विष्य विष्य विष्य

सेर्स्राद्या द्वीः सामाश्वसास्र राजवित्तर् राजवित्तर् राजवित्तर् यशने गहिशार्धे ना से नित्र ग्रम् से मार्थ में शु:विवा:वे:न्गर:न्यर:क्यय:द्र्यय:ब्रेव्यय:ब्रेव्यय: न्गर:वें:वय:दरः र्।तुःचःरुअःयःम्दःहेःयःयशःर्वेचःयवेःस्ट्रिंन्वाशुस्रःदरः। वेवाःयेःदसरः र्रे त्यम् श्रे र भ रागमारा विग स्रे सायम र्त्रे न सदे सहै न गर्म साय र तुरा इस्रेश्वेरार्वे या स्याप्त प्राप्त प्राप्त विष्ति विष्ति विष्ति विष्ति विष्ति विष्ति विष्ति विष्ति विष्ति विष् वश्चर्यंत्रेत्रेर्भेवरहुः अन्तरे क्रुट्र श्रेश्रश्चाहिश्चर्या शिष्ट्रमाची द्रदशः यानियाने मिले पर्यापियों रातुः स्पूर्याम् भूया मिले स्वापा रेतिः <u> २२४.४.५५४४४५४१६२२५४५४४५८।</u> यलग्यालूप्रेस्ट्र क्रुट्र चाहेश ग्रीश द्रायायाय वाश्या श्रुय ग्रीश प्रीय प्राया कवाश दे वयाग्रेव कुते कुराणराश्चे श्वरायेषाग्चे कुरायरार्थे रावते क्षेत्रयाग्चेयारे मुट्राद्युः अपाशुअः प्यद्रास्य स्ट्रास्य स्वास्य स्वास्य द्वास्य स्वास्य द्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास र्श्वेसामान्त्रेरान् हीनसाक्षानु प्रतान्तुमा ने न्यामेसानी सान्तुमार्गे क्षान्तुमार्गे ने हेशप्पत्रत्यवाः भूतिः देवे विवादि भूति स्थेतः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स कुं नवे न्त्रम्य कुं न्त्र विन्य के न्य के मान व्यासी मान या के न्या क नमुन्। धेन्ने अःध्रयःयः वार्धे निर्दे न्त्रः में वार्यः महारा ने सानितः वर्तुर:वर:वर्गुर:र्रे।

दे 'क्ष्र-स्राच्याक्षत्र प्रस्त विषा विषय स्रोत स्रोत स्राच्या स्

यदेः न्द्रभः वाबिरः नेदेः श्रेटः नुः विवा निवे नश्च न्यः विवा विश्व श्रान्त । श्रेयः विवा निवे श्रेयः विवा निव यद्वे रः विवु रः निवे श्रेयः विवा निव्य निव

देशत्रश्रास्ताः श्रीः श्र्रेन् श्रीः स्त्रान्त्रस्त्रः श्रीः सक्ष्याः स्त्रान्त्रस्त्रः श्रीः स्त्रान्त्रस्त्रः स्त्रान्त्रः स्त्रान्तः स्त्रः स्त्रान्तः स्त्रान्तः स्त्रः स्त्रान्तः स्त्रः स्त्रः स्त्रान्तः स्त्रः स्त्यः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः

यशः भुभाविषा भुन्दा विश्व विष्व विश्व विष

यहिशामिहिशास्त्र में त्रा क्षेत्र क्ष

स्रुट्गादे स्वय्त्र न क्रम्य क्रम क्रम्य क्

याश्चितायहें वाश्ची न्द्रस्य स्थान स्थान

यश्रासहस्यान्य श्री देवे के से स्था उत्ते देवे सुरा हुँ न उत्त सुरा नःयगःर्ते नः ग्रे क्यायरः विन् व्यायन्ति । व्यायन्य विष्यायन्य विषयः विवायन्य विवायन्य विवायन्य विवायन्य विवायन ह्ये। देवे के खुरार्श्वेद खुर वद हुर या राये दा वे वे द्वाराय राये दा व्याप राये दा याग्रेत् कु यमान्त्र ग्रेत् भ्रे। देवे के सेसमा उत्देवे सुमा से तु श्रूर गी न'वेश'ग्रु'न'र्दा वर्गुद्दान'श'श्रेष त्रु'न'र्न्, न्युं नदे मुरायराद्यायर मुरायर द्वाराय द्वाराय द्वाराय द्वाराय स्थार द्वाराय द्व नदे सुर पर न्या सं र कु न न र त तुर न से से से से न न त्या से दे से र कुं नवे कुंट देश पर कुं न लेश गुन प्रतिहर न व्यासिव विस्था कुं। नेते के खुरा ग्री सुनरा हैं टाइसरा प्रजुट हैं। । सदय दु क्र नरा ग्राम्प्रेस् अस्ति वर्षा वरम वर्षा व वर्षाववुद्दावहुवा वेदायरावाशुद्रवा श्री।

विवान्ये कवाश्वर्याद्वी विश्वश्वर्यात्वा निव्यश्वर्यात्वा निव्यत्वा निव्यश्वर्यात्वा निव्यश्वर्यात्वा निव्यश्वर्यात्वा निव्यश्वर्यात्वा निव्यश्वर्यात्वा निव्यश्वर्यात्वा निव्यत्वयः निव्यत्व निव्यत्वयः निव्यत्यत्वयः निव्यत्यत्वयः निव्यत्यत्वयः निव्यत्वयः निव्यत्यत्यत्वयः निव्यत्यत्यत्वयः निव्यत्यत्यत्वयः निव्यत्यत्यत्वयः निव्यत

भ्री. बुंश. चुर्स् ।

श्री. चुंश. चुंस् ।

श्री. चुंश. चुंस् ।

श्री. चुंश. चुंस् ।

श्री. चुंश. चुंस् ।

श्री. चुंस ।

श्री. च

ने त्यून्य नर्ते स्वर्ण न् क्षेत्र स्वर्ण स

यस्यविस्पर्मा नस्रें विस्राञ्चरायविस्पर्धातविस्पर्मा श्रुप्ता श्रुवाः श्रुमः विह्नेमः नवेः वसायहिमः नश्रुसः प्यमः प्रमा प्रमः प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा है। कुर्वसम्बस्यामी प्रकेषा नरहें। क्रेम्याम्स्याम् हरावसा हे गशुअन्दरम्भाराहिः सुन्तानिवासमुवन्यते भ्रामशुअस्ति न् होदारा धेव या हैं ग्राय देश विवेद के या शुरा में दे दि स्मान विवे समुद्र-पदे वसामी अने गासुसान्दिया सुर्मे हिन्दीन पीदा है। ने प्यान दक्षे न वेंद्र'ग्राराथ'द्रद्र'स्राय'हे 'क्षु'य'यिवेद्र'याश्चर्याये । सुराद्रे वेद्रा द्र्याद्रे वेद्रा श्रेयश्चर्तित्र श्रुप्तश्च श्रूप्तरादे बुद्दिया इस्राय श्रीप्तर्य भूपर्य श्रीप्त ब्रूट अके द विच पाश्रु अ रेंदि पाश्रय दिन पठ श पा धिव या वर दे दिन हु अ राहि सुन्तानिव समुव राति। देश रागासुय राया ना रावे कु सुरा रा र्सून मदे बुद पहुना नी द्वा मदे क्षु खुरा धेर विदा क्षे न दूर क्या महे क्ष्रनानिव सम्भावी न्यासंन्यायी क्षु स्रमास्य सम्भास्य हिंदि हिंदा साम वियात्राने वारायात्राचे स्रीया त्यस र मुस्य स रे प्येत हैं।

क्ष्या अभिन्न स्थान स्य

क्ष्यात्रकर्तात्राच्यात्रच्यात्र

यूर-प्रावशः युरा-द्रावशः युरा-द्रिशः यु

स्त्री स्वर्धेत प्रती प्रत्या प्रती प्रती प्रती प्रती प्रती स्वर्धेत प्रती प्रती प्रती स्वर्धेत स्वर्धेत प्रती प्रती प्रती स्वर्धेत स्वर्येत स्वर्धेत स्वर्येत स्वर्धेत स्वर्धेत स्वर्येत स्वर्

विश्वास्त्र विश्वी क्षात्र न्यात् विष्या क्षात्र क्

श्रूपार्थाः ग्री:याययः इयः पावनाः श्रूयः पत्र वरः पहुनाः देवाया।

७७ | वि.सं.यी.२.यह् .धं.४.ता ।
स्व.भी भायने .धूं टायाययः न ग्री ट्रायायः न ग्री ट्रायायः न ग्री ट्रायायः न ग्री ट्रायायः न ग्री प्रत्यायः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्व

नग्रात्यक्षात्र्यक्ष्यात्रम्यात्य्वे स्थात्य्य । वित्र त्रु स्थात्य वित्र त्रु स्थात्य । वित्र त्रु स्थात्य वित्र त्रु स्थात्य । वित्र त्रु स्थात्य वित्र त्रु स्थात्य वित्र त्रु स्थात्य वित्र स्थात्य स्थात्य

वह्रासर्वित्रनिक्षात्रित्रम्यार्देवाधनास्त्रमात्री।

म् अत्याष्ट्रभाम् भाष्ट्रमान्यभाष्ट्रभाम् भाष्ट्रभाम् भाष्ट्रभाम भाष्ट्रभाष्ट्रभाम भाष्ट्र

क्रुन्से देवा सावाश्याकी त्यसावर्षित रहेवा

के ट्रे.ज.पट्टेर.क्याश.सं.श्रट.क्री.श.जश.मी.संश.चवया.पळट्.स.ज. द्धया है। इना हु न विदासों | दिन से ही कुन से दिना सामा सुसाया न से दिन रेयाग्रीरें ५ अळव नडयाग्री द्वापादर्वे २ ५६ । हे न्या रेयाग्रीरें ५ अळव बेर्गी:इवावर्डेर्जियायान्नियायान्त्रीर्द्यायाग्री:देवार्पावायान्य लर.सुर.री रे.चाश्रस.त.इस.चेट.द्विचाय.ग्री.वर्चय.चे.यरय.क्य.यह. धेर्यासु,र्या,रायवु,र्राक्ष्यारा,षविष्यादे,जयार,क्षेत्रयायक्षेत्रा,यक्षेत्र यःषेंद्रःग्रदःश्रवःभ्रेत्भे स्वायःभ्रेद्रायःभ्रेष्वे वरःद्रेग्यस्य प्रायः समुद्रानित्यसानर्भ्रिसामासेदामिते नभ्रेद्रानिसाम्बर्धा यट.रेट.लुर.री बैटश.पर्यश्राश्चरश.भेश.ग्री.शुर.क्ष्र्रा.जूटश.बैक.शुर. भ्रामाश्रुस्य द्वा भ्रुट्या बे द्वीत्र प्राभ्रे भी नर दें माश्रुस है देवा स दें दिस्स मास्त्रव्यात्रेश्चित्रित्र्यात्रित्रात्र्यात्रित्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

यदे र्ह्मेश्वास्त्रीत्र स्वादि क्रूॅर-हेर-हेग्रथ-पदे-क्रूॅय-बेद-पदे-ख्रुदे-क्य-दर्बेर-य-वृद्य । यर-ध्रेद-बेग्-मन्द्रम् भेर्तिवासावाश्वराष्ठी स्टायसाष्ठी सामान्द्रमदे नर्से नर्से न त्याग्रदासवरासान दुवे श्रेदाया वासे के स्वासा त्रासेदा ग्रे श्रेंदाया निता वर्षावर्द्धर कु दर्वे ष है। व्राधेद की व्यक्ष की शर् ब्रेंब पाया निवास रहे क्रम्भारी यमार्म्या में भारक्रा मुर्भार्म्य स्थारी स्थार्भ स्थित क्रमान्त्र र्श्वेट-स्व:मिय-तथा सर-मिय-म्या-स्व:तयः मिया-स्याम्यः स्वेट-सः गश्याग्री नर:र्:नर्गेर्वित्रयारेवे हेयाशुः स्वायाग्रीयार्स्वायान्त्रया ग बुगरु भु त्यु न सदे रहे य है ग वह र दे ने र य र य हैं। वे र र र । य पर गुनःहेते कुन्से शुः हमायम। य र्रेयः नुः श्रेतः यदे कुन्यदे यमा श्रेमः स नदुःभवे नर्नु नर्ने न्त्रा ग्रह्म अवर प्रक्रम् कु नर्म्म अन्तर्भे न्यो यसर्-तियोश्रास्तर्भःसर्-देश्रिश्नर्भेश्ची । नेरास्तिवाश्रासर्-तक्दा कु'न'से'सेन'र्ने वियागसुरयायदे'सेन ने'सूर्व'यरसेन सेनायप्र कुर्भेर्पिग्यदेख्यायायानहेत्रत्यावळदाकुर्येश्चेर्परद्युर्रे वा श्रुविसेन्दी निन्नार्रस्य वीष्य श्रीयाय द्वी श्रीन्य श्राय दे नर'नर्गेर्'रे'त्रु'सेर्'ग्रेर्ब्र्र्य'रा'नहन'न्य'स्य'स्य'क्रुय'रा'रे। यर'धेत' वेगानन्त्रम् कुन्से देगासदेन्द्रायस ग्रीस सदस मुस्य प्राधित प्राधित है न्वाची वस कुर प्रस्थ सरस कुरु प्रायास प्रेत्र प्रदे वित्र प्रस्य प्रदे हिन है। देरर्र्याययायासूनायाययाग्रीयार्स्र्वर्यायहनायाद्यापीवाग्री। १८८ स्थार्ट्र स्थार्थ्य श्री त्र स्था क्षेत्र स

व्यासेन् ग्री नक्षेत्र देस नर्गेन् स्थान नित्र मा

यहेबाकात्रकात्रक्षेत्रात्तर् स्वाकाक्ष्रात्त्र स्वाकात्रक्ष्यात्र स्वाकात्रक्ष्यात्र स्वाकात्र स्वाकात्र

वर्चेम् रेस्रम्प्रत्रेत्व वर्सेन्यवर्षेत्रस्य वर्षेत्रम्य वर्यम्य वर्षेत्रम्य वर्यम्य वर्षेत्रम्य वर्यम्य वर्यम्य वर्यम्यम्य वर्यम्य वर्यम्य वर्यम्य वर्यम्यम्य वर्यम्यम्य वर्यम्यम्य वर्य

मुंश्नेश्वान्त्रं स्वान्त्रं स्व

नश्चित्राचित्र कुः अळ्वः प्येन्ते । नश्चितः त्यायाचित्र स्यायवित्र स्यायवित्य स्यायवित्य स्यायवित्य स्यायवित्

यंविता हैंगामश्रामहग्राश्वर्यम्ब्रीयायिः ह्यापर्धेत्रणेत्राध्याने स्थाप्येत्र स्याप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्य स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्याप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्य स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्याप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्य स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्थाप्येत्र स्य

नवि'रा'दे। ग्रा-वा निर्वा के ना के न क्कें दर्भान्ते वा वर्भान्दार्भे मान्दा विभी भारता विष् नेशाया दुर वर द्वर विवास दर थे नेशाया थर द्वा सर द्वर विवा यन्तर्वावीयाश्वरस्यायवेन्दरास्यावेसन्ता याश्वस्यवे स्वास्यावेयाः र्हेग्र रे अ भी ग्वर भूतर सुर देंग में । दे प्यर न भे द रे स वेंग सर क्षेत्रायात्रयात्र व्याच्यात्र वित्तेत्र प्रत्य प्रत्ये प्रत्य वित्र प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प क्ष्ररावळरासी तुर्वायवे नराते। यया प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता प्र रेशर्श्यावेगर्भग्याययासूर्यात्रह्रार्धित्वराधरास्त्रेग्ये सकेर्ये सुर्धायाया ने सूरमार्था सूरमा महतारी से प्रकरमा विषय के प्राप्त मान्य । रान्दा भ्रम्यानम्बर्धार्यः यहाराधुन्यं साम्रीकासदिनः सुस्रामाभूनः वाक्षयः बूद्राचह्रवार्धे भूत्राचार्षेवायाव्यायो भूत्रायायदात्वायात्राच्या श्चेत्राग्री न्यात्रा विश्वाया द्वा विश्वाया विश्वाय विश्वाया विश्वाया विश्वाया विश्वाय वि

यानभ्रेत्रहें वायावियावियावि कार्येत् हेटा अळ्ययावित्ययानभ्रेत्रेया रग्रायायायह्रम्यार्वेनायरायह्यार्वे । षोःवेरायाषराद्यायराद्वर र्वेन'यादी नभ्रेन'रेस'सवर'ष्ठेन'न्स'हेनास'रेस'य'त्स'यावे अन्याधिवार्ते नेयावाययेवायाद्देश्वराचन्त्राचिवादेवाद्देशायदे न्ग्रीयःवर्षिनःनेसःग्रीसःग्रस्यानन्नःयः वः व्हन्ने वसः स्वाः वहनःसेनः नर्ग्यश्रयाश्वराद्राधेतेराकुषादरामेशाश्चेशामवेग्वर्रेशामेवर्गीःहिरा नन्यार्वेद्रायात् नक्षेत्रित्रेयात्रीहेन्यायायार्वेनाय्यम्क्षेत्राययान्यात्रे नक्केन्द्रिस्य स्ट्रिया संधित या नक्केन्द्रिस स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया स ८८। टे.सबर.हेव.सदे.क्ट.इसस्य र्स.स्र.रावना.ए.स्ट्री रगस्य रहे वस्र १८८ संस्ते सार स्मूर देवा वी सावास्य सेट दे स्वर वाया है ट सेंद ८८:चलानरकेतालगाम्हेगामी दुगाळ पहिंद्र अर्चेन पाने वर्मेट देश रवाश्वायायायह्रदायार्षेवायाद्या देख्ररावे ह्राश्चियायाद्वीता ग्री नर वर्हेना नुराय दी। नक्षेत्र रेस रन्या या या सम्मित्र परि स्वर प्येता स न विवा ले प्यत्य वु उसा की निर्देश हैन निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश निर्देश नन्नायान्। देवे : काञ्चारम्या अध्यय । उत्यय देवा यो अः ग्रथ्यःश्रेटःदेःवरःवःवार्वेटःक्षरःवर्देगःव्रथःयःवे। वक्षेतःदेशःवःवार्वे व्य नह्रवास विनाय प्राप्त ने सम्बन्धित स्वते स्वतः सार्थे के नाय स्वति सार्थे व किं स्पानि नर्स्रिस्याः स्वित्र्याः स्वित्र्यः स्वित्र्यः स्वित्र्यः स्वित्रः स्वतः स्वतः

क्रियाश देया यन्तर या

मिश्रम्प्रियाम् अप्तह्म्यार्थिः देश्या ह्या ।

गहेशमाने यान्ते वा खुरान्ते वा नगान्ते वा सेसरान्ते वा सु सुर्या देर् ग्रायया बुर दिष्या मी देय पर है द्वा ए हैं र न स्याप ह क्रिन्ते सु दुन्न स इत्योय यस नासुन देस खून्न इस नेवन देस स यथा सुअर्नेवरम्ग्निवर्,नश्यावयरम्ग्निवर्न्रस्य न्यान्नेवर्न्रस्य रेसाराष्ट्रराजन्त्र क्रिंतामया क्री खेरु प्रार्थ से साराप्र में जिल्ला ग्रम्भेस्यान्नेत्रन्त्रस्यामदेन्नम् गुरान्या सेस्यान्सेन्या रेस्राम्भ्याम् क्रियाम् रेस्राम्याचेस्याम्य विस्थान्य सम्प्राम्य देशाम्य स्थान्य सम्प्राम्य सम्प्राम सम्प्राम्य सम्प्राम्य सम्प्राम्य सम्प्राम्य सम्प्राम्य सम्याम सम्प्राम्य सम्प्राम सम्प्र सम्प्राम सम्प्राम सम्प्राम सम्प्राम सम्प्राम सम्प्राम सम्प्राम नसूरे हिन् सर्ड अपीत् ही निर्मित्य सारवायान ने अपीत् में वर्षा सरे कुर्धे अरा हैवाशरेशय अर्भर्ष्र अवाश क्रें राजा प्रवापन वा द्वा हिन्द गुरुद्याने। ने प्यत्प्यम् व्या द्वा मी स्र स्पूत्र प्र वस्य मान्त्र मान्त्र सुरु द्वेत्र द्वेत् र्रेग र्रेग र्रेग दिया द्वेत द्वेत प्र देत वर् हेशन्तर्परित्रे विदेशमाने अभि हिराद्वा कुर्वि ।

नश्चित्राचित्र देशान्त्र विष्ठ स्वाप्त स्वाप्

यर में र सूर है। अव्यानावना हु हु र हु र हि स हि स या या हु र नि र नि र क्रूंट नी 'थे 'ने रा नर्झे सरा निट हे 'यरा यह रा मदे हे रा है न हु पाया सूह वस्र अरु । वर्ष क्षेत्रम्यास्य भ्रानित्रवादर्भित्रवी ह्यायार्रम्य क्षेत्रकी सुरु निव लेश मित्र मु अळव पे निव निव मिवि सुरु म् मुन् मीरु नर्यान्ते स्ट्रान्यया भ्रेष्ट्राय्याया स्वाया स कुर्यायन्यावयात्राच्यात्री सूरावेवाययात्रेवायरात्र्यात्राच्या इस्रायरः १ न्याये द्वायाये ने स्थाय के ने स्थाय न्वेत्रःयः नश्चेनः हेवार्यः पार्वेर्यः गादेः कः प्येनः ने । ययः वेनः स्यमः वर्धेः कुंवाः वः य्यमा न्दारी सुमान्ने वात्र मान्ने वात्र विद्या स्वापनी सुदायूदा वहुवा वावर्य वाश्वय द्यी स्ट वाद्र्य थे वो वाश्वय द्यी वाद्र्य श्वय द्यी वि र्रे हेते न तुरुष मान नियान हेत तथा श्वेर मित में र देवा में उत्तर्भ हें र र्र्भ-श्रे-श्रे-श्रे-र्द्रवाची क्रू-त्र्यश्री द्वाति क्रू-त्रेते क्र-द्वात्यश हुर नवे सूर नवे पो भी या से सामा ख्या नवे व व सारवा नवे व नु पर्ये सा राधिता दगाद्रवेत्रश्चेः श्चात्रभूता भूता है। दगायी सभीता हु सावते सुदार्वा सयानु कु नायसान्ने दासरा गुर्सा है । कुरा स्वायान् ग्रेरा से नित्र हैं राजदे। इयादर्रेराधेवायमाने स्राम्हिनायरे स्रिम

न्यान्नेवन्यश्रोस्यान्नेवन्नः वर्षे स्वा

 गहिरामान्नेत्रत्वरासेस्यान्नेत्रत्यां कुषाणिनाने। तमः क्रियायानहेनायमाभ्रेरावादे स्यान् रहें वामायर में माने विना हेर है । मी :ळ:११२। माडेमा :५८: नडरा हा न :५८: प्यता :मी :ह्यू ८: ह्यू २ :मीदे : श्रेश्वित्रारायाः विसायदेः सूरायदेः धोः विसायसा सुरायदे । प्राप्ति व दशसेस्रान्नेत्रन्त्रस्यायरावहिषायाधिताने। स्वरास्त्रान्हेवेयासुरा विव विकायका प्राप्तिव विवासम्यक्षेस्य प्रमुप्तावे साम्प्रम्य यायासुर्यास्य सार्चेत्यानराग्ची र्द्वेतायान विष्यात्र स्वयया उत्ते प्रया न्नेव धेव वा श्रेवर मी वनशमिक भगाय नहेव वशक्षेर मित सम्बर् ख्याः अः अः खुअः धरः में वः हे 'श्वेदः यादे 'हु दे दि दरः यो 'शे 'वेया अः धः वः हुरः इस्र (वृत्रायात्र या वेसा ता शुस्र गुराया यया गुराय दे दे दि । य वे १ वे ता यरः भ्रेर्भ्रायायया सेयया द्वेत्रः श्रेष्ट्रिया या विष्या । विष्या यश्रिस्यायदे भ्रिम् श्रिम् हुरियावयापाट नुस्य स्थापट हिंदा पायवे वकराया देवाग्यराश्चेरायाराचेयायायकरावाउयायावयायाववार् चेया रायाक्षेयकराविदा हॅरावल्ला श्रेराविकान्नेरात्रा श्वेरःग्रामः क्रुरः वेयः या क्रयः श्वेरः ग्रियः वृत्ते मः वेयः यः धेवः धरः से श्वेग्रयः मित्रे विवा यो या विकास की विक्षेत्र वादे स्वार्त मित्र या वात्र देवे अधुका स सर्रामावमः मस्यारा स्त्रामाना स्त्रामाना स्त्रामाना स्त्रामाना स्त्रामाना स्त्रामाना स्त्रामाना स्त्रामाना स्

श्रेमार्चित्रावित्राचित

यहिश्राञ्चर छ्रा बर्ग यह से प्राप्त के श्राम धित स्था है श्राप्त के श्राप्त

श्चेताः कुः त्रार्दित्। याययः ग्रीः तरः ग्रीः हवायः वळरः द्धंयः दृदः दे द्वययः ग्रे हे अ अ श्रुव भन्ते। ग्रिव रु अ शु में अँ क्रूँ र न न न । ग्रिन रु प्रकें न न न नकुषानःश्रेष्राश्राभ्रम्भनशाद्दा यसात्राभ्राम्याभ्रामानभूमान न्दा हिराम्ब्रुश्यम् कर्त्रत्याय व्याप्ता सक्तिकेन्याची यावे वापके न्यान्या वयान्यास्य सेसयान्ने वया नस्ययाने प्रमूटा नरहे न्नु सम्मासदि पर गुर कुन परे रेस परे क्यान १८ र् ग्रह्म र्शे । दे सूर्य ने न क हो द के दें र न हु या अव क द ही सूर अ के द हिं र गशुसर्दिन ग्रम्य न्दर नरुषा या प्यदाहे या सन्नुत प्यता प्रमा के ता देवीं या श्री ने न्वाके विश्वास्त्र भीत हु स्वान इस्य से से विष्या ग्रामा सुम हु में से स यदे र्श्वेत्र राष्ट्रेश यदिश श्रूट र्याश रायवाया यायश श्रूट या द्या रायश रा व्यार्चि रह्या ग्री व्यास्रावदावायदान्या पारा क्षु तुते स्नूराव त्या विवा प्रर नमा भ्रम्याने न्या हु मने सेंद्र श्रु म्यू या में साराधित हैं। यस नुया ही बूट सकेट वें न मा शुक्ष र्शे मा शामा न मुक्त विचा मा शे मा न मा शो मा सा धी न है। किताक्याईत्रस्थार्जेत् वृष्ट्याया क्रायन्तराक्राक्रिक्तिक् ने न्वा अर न्दर अर न् वे अर अर न्य का स्र न्य के भी का से जा अर कुः वैंग्रर्भः ने 'न्या'यद सर सेंदि नर न् 'में स्रार्भर स्रार्भ स्रार्थ से है 'स्रेर

धेन्न्यः विश्वान्यः श्रुः नः धेन् विश्वाः श्रुः नः विश्वः श्रुः विशः श्रुः विश्वः श्रुः विश

शेशश्नित्रव्याञ्च त्याञ्च त्या

भ्रम्भू त्रुस्यस्येस्य निवाद्य स्त्रुम्य स्त्रुम स्त्रुम्य स्त्रुम स्

विष्ठश्रार्श्वास्त्र विष्ठा वि

याय्याया होते देश होते विकाम श्री के प्राप्त होता । या क्ष्म क्षेत्र क्षेत्र

 क्री.क्रिट्टी यश्चिमश्चर्टिन्नेश्चर्यं विद्याक्षेत्र निकान्त्र क्रिट्टी यश्चिम्य विद्या स्थाने विद्या स्थाने विद्या स्थाने विद्या स्थाने विद्या स्थाने स्था

रेस्रायाग्रुस्रायदे श्रुप्तुर्यादे र्चिनास्य गुनायत्र्यान् इटर्ने व ग्री वैद्ग्याययायार्च्या ग्री पर्द्र्या स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स ल्या द्वामी स्वामी स्वा गुनःसर्वे स्रे रागवे इत्विं र गुरे देवे दर र गुन र या वर स्र र र गुन र या वर स्र र र र गुन र या वर स्र र र र र इस्र श्चेत्र श्चे स्पर सेवे श्चे स्व हु श्चान स्व श्चे स्ट र न न न ल रे पर कुन्देन् अन्यादेशायी विवास्त्रे याते विवास यान्यानुनर्देरान इत्राप्ता कुयान प्रेत्र यापार्ये वाया ग्रीयाया स्वराध्रम मिं तर निवेद दे। दिया थ्या राष्ट्र वार्या श्रीय राष्ट्र विव री सुद रो स्था यहिराग्री यहिया अदे खुरायरा श्रु अदे श्रु त्व्यु न सदे र् र र श्रु खुरा स्वारा यायमार्वेष्यमार्भा हो तमास्यमा हो से स्वायमा वरायार र पर्देर परितर वर्ते निवे देव दे विश्वास्त्र दर्गे द्या सह के व स्वयं सह स्वयं सह के व स्वयं सह के व स्वयं सह स्वयं स्वयं सह स्वयं स्वयं सह स्वयं स्वयं सह स्वयं स्य यशिवः यः भूं अवटः क्ष्र्यः ग्री । विदः यश्च अत्ये विदः यश्च विदः यश्च अत्ये विदः यश्च विद

सक्ष्यः नुः श्वः स्वावितः द्वः स्वावितः स्वावित

ख्रमःश्रुनःख्यायात्रीं नार्यसः कवायाव्यायात्रीं श्रुम्सः विष्यायाः स्वायाः स्वायः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स्व

* वित्रास्त्र स्वर्धियात्र स्वर्धियात्र स्वर्धियात्र स्वर्धित स्वर्धियात्र स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्

च्रानिश्वाणिक्यान्ति। वित्यविश्वाणिक्यानि स्थानि स

ने प्यतः त्रेश्वाश्चायायाः भूति । त्रेश्वे वित्रायायाः वित्राधीः वित्राधीः

 ने दिन्न कें ब्रिक्स के स्थान के स्थान

र्म्वाशिर्द्रन्याश्रयावेश्वर्ष्यात्र्यात्

र्त्त्व वर्ष्णेवर्षेवर्षेवर्ष्णायद्वर्ष्ण क्ष्रेत्वर्ष्ण्य क्ष्रेत्वर्ष्ण क्ष्रेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्ष्ण क्ष्रेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वरेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्वर्षेत्वयः क्ष्रेत्वरेत्वर्षेत्वर्षेत्रः क्ष्रेत्वर्षेत्वर्षेत्वयेत्वर्षेत्वर्यत्वर्षेत्वर्षेत्वयः क्ष्रेत्वर्षेत्वर्षेत्वर्षेत्वर्षेत्वत्वयः क्ष्रेत्वर्यत्वर्यत्वरेत्वयः क्ष्रेत्वर्यत्वयः क्ष्यत्वर्यत्वयः क्ष्यत्वर्यत्वयः क्षेत्वर्यत्वयः क्ष्यत्वर्यत्वयः क्ष्यत्वर्

बासायाने साम्राज्ये निर्देशिया सिर्मा साम्या मित्राया सिर्मा साम्या सिर्मा साम्या सिर्मा साम्या सिर्मा साम्या नदुवे अह्या मुयाद्वयया ग्री यो विष्य ग्रीया श्रीया न्यूया न्यूट्या है । विष्टु ग्री हिंद दे वहें तरे र अ श्री अ वर्ळ ८ कु न मर भे त्या गुरु स्वा श्रुदे र तु भेर वि ग ये अर्केन अन्तर्ग्ना दश्यक्त सेन ग्रीन् श्राप्त न न मास्य प्राप्त है श न्नर-न्-नश्चर-नशःश्वर-सकेन-र्वेन-नशुस-र्थेन-नु-वर्वे-नवे-र्श्चेन्न-नवे-र्श्चेन्न-ग्री:देर्गम्ययः सर्वेद्रायरः ग्रुम् देःयसः संस्थः हः श्रीदः सदेः ग्रुटः सेससः ग्री खुर्या हेत्र दे . यु त्या स्था विष्ट्र स्था विष्ट्र विष्या विष्ट्र विष्ट् गन्ययायार्थे गान्धे न्वरावि या के गान्वरावसूरावया वि स्रस्याने हेन य-देव-ग्री-देद-पार्ययासदेव-द्-ग्रुर्यात्र्यादे । यस द्वेत-पदे नुद्-यह्ना गी । श्चरःचित्रा देव्यःश्चित्रादिः बुदःवह्यायः चहेत्र्वरार्धः सद्याधेः यः शुः रेट्यायळरावराधे र्रेनायदे बुद्यह्या यर्नेन्त् चेट्याधेन हो देयायः ग्रथः भ्रुवःवया यक्षवः से न्वः स्राययाययः मुःवः वहेवः परेः न्ने यः न्वरः नभूर-हे-देर्-वाश्वासळेंद्र-धर-होर्-धर्वे । दे-दश-वेर्-वाश्वा मूर्याक्ष्यान्ता नेदेःद्वा. हु. बुदायह्वा स्वायायायाया यान्याया मशर्देव श्री देंद्र ग्रम्य पर्वेच हिर्देश देव देव देव देव देव पर्वेच निर्देश हैं वेशमाशुरशमाने भ्रम्

र्दे त्र श्रुं न नश्रू अय्यया अळ्व श्रेन ग्री न अय्य न अर्दे त श्रुं न ज्यू अय्य या अर्दे त श्रुं न ज्यू अय्य अय्य अर्दे न स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व स्व क्षेत्र स्व क्षेत

याधिवारावे भ्रेम देयावायळवा भ्रेमावा के विष्या प्रयास्य स्थिता प्रयास्य स्थान बुद्दियानी सुर्ध्दान्य पर्दे द्वायदा से प्यवदा दे। देव में केंद्र या राया विवास्त्रस्वितः प्रवेत् स्थाने विष्ट्रस्य प्रवेतः प्रवेतः प्रवेतः स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास्त्रस्य स्वास् ग्रुद्रभःचदेः भ्रेतःद्रः क्र्यां क्रियः क्रेत्रः क्रियः क्रियः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः धेव वत्रा र्वे स्रम्य धेव द्वे या प्रति हो स्रवत् हों द्वे दे के हो नवे विगाये यथ वे रूर्य शे त्या शुर्वे न पर माशुर्य है। त्य वर्ने र वर्षेत्रमाने स्रेत्रमाने सुरावह्या या परावहर्षे विस्वास्य स्रित्रमा ग्वर पर सक्र मेर ग्रे ने में के प्राप्त मान स्थान गी अर्भराया विद्यासराय क्रया विषा है गिरी स्ट्रा क्रा सी क्रिया सरी हुर वह्रमास्त्रेत्र, शुर्भास्य पर्देत्र साम्री प्रवर्ते वित्रमास्य प्रवर्ते । वी वात्रस्य प्रवास्य स्वाप्तरस्य स्थित स्वीत स्व यदे भ्रिम् गया हे सळद भ्रेम् ग्री दिन ग्रायय ग्री स्वीत्र स्वाय स्वाय स्व धेव वेरत् व देन वर्षे ग्रान्ययाय वर्षे ग्राय देन र्या वेर्त्य वित्य वर्षे गश्रद्यायाविदा नगरामे अः र्रेन्द्रन्तुः या ग्रुयामे विद्या वर्तते वार्म्य अरम्पा वर्ते वा अरम् से मेन अरम्पे से मेरे वर्तते से स्रिन यदे बुद वहुवा दे क्कें रास्रवय देव की केंद्र वास्रय की कुर वार्षे स्वस्था स्ट्र नः धेन नमा समाधे सम्पर्धन नम् धेन । निर्देश सुरान सुन समित समित मुःदिन्याययःमुःद्भूनःवार्षः नःसेन्यम्यासुन्यः पन्नयायःवि विदेशः

रात्रेस्त्र हिं त्रिक्ष क्षेत्र स्वर्ध हिंदि क्षेत्र हिंदि क्षेत्र हिंदि हिंद

देशक्षात्रभाक्षेत्राचक्षेत्रभाक्षेत्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभाक्षेत्रभावतः विकान्त्रभावतः विकान्य

र्त्त्व न्यान्त्रीत्र ने कि निर्देश्य के प्रत्ये क्षु स्वते क्षे स्वते क्षु स्वते क्ष्य स्वते क्षु स्वते क्ष्य स्वते क्षु स्वते क्ष

र्वि'त'रे। सर्भेत्रेन्नेग्'राप्टा कुर्भेरेव्ग्'सदे'यसपर्वेप्'र्धः सबर-बिर-स्रेसस-दे-स्वास-तस्याय-दर्गा-सदे-स्रे। देव-बी-देद-वासय-वर्षालुग्राराधिव प्रमात्रा दे दिवा श्री दिन ग्राया श्री देश पावर्षा वह्रमानवे से मान्य साम्य है। दे वह वे सुर से समाय प्राप्त मान्य स रान्त्र्यूर्यते भूनशाग्री सूर्यस्ते नित्र में नाम्युसार्स्त्र नित्र में नित्र में नित्र में नित्र में नित्र में दें द्रायायाया सर्वेद सदी नि दें द्राया भी स्वीया दे स्वाया या भी वास दे हि र र्रा । ने प्यर अरअ कु अ रा त्य हे अ ग्राम् स्वा अ न्नु से न ग्री त्य अ त्य तह वा न्वीं यान्ते कुं यक्ष्याने व्यान्यकेन विचाना स्वानि विचानि विचानि नवाःकवाशःवाह्नद्रश्रसः व्यान्य स्तुताः वर्षाः वर्यः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः नगः कग्रारिः श्रूर् से प्रमुद्द निर्दे खुवा ग्री सार्श्वे दाना वा व्यू से श्री सारी प्रमे नः केव रॉशने विंव हेन के ने सम्बर्ध अया नु है ग्राया वया नर्से या नर्षे या निटा दे हैं ग्रथः यदे ख्याया ह्या ये द्यो चे या या या विवाया या विवाया से द मित्रे श्री में प्रदेश नि स्ट्रिंग स्ट्रिंग श्री मित्र स्ट्रिंग स् वयःयःनर्स्रेययःनरःत्। वेयःस्रेनःह्वायःनरःस्रद्यःयेःत्यःपयःर्रेयः ग्री-भू-भ्रे-वर्ष्ट्रन-रेटा द्व-ग्री-द्रन्-ग्रया-ग्रीश-श्रु-श-पदे-द्वा-पदे-सुन-रोरायायमाञ्च यदिः भुः यानञ्चनयानमः नुः वा तुवायाः ग्रीः भुः योः विनः प्रयात् नरे क्रिंट क्रें र न र द क्रुं अदे क्रुं क्रुं न र ने। के र न व्याय के क्रुं निरुष्ट के रेग्रायायद्वे कु व्रुव र्वेट साधिव पाद्या व्याया व्याया विश्वेद र्यो स्वाया विश्वेद राया विश् श्रुग'णेव'र्वे।।

रेशमानविषये देव श्री किंदा ग्रायय क्या ह्या स्ट्रीय स

अःसःरेस्रामःनिवःसदेःरेतःग्रीःदेनःग्रास्यःत्रभःश्चिनःसदेः बुदःबहुगः हुःदर्भः नदेः कुंवाने। देन ग्रीः देन ग्रायाययायया स्वायाया स्विता हुः सूरानरः क्रिंयायात्र देन्याययाने यया क्रून क्रम् वर्षियायान्य यात्र यात्र यात्र यात्र यात्र यात्र यात्र यात्र यात्र या ग्रथानेवे नर्वेव प्रम्कुर पवे कुर वेत् वेर खेर ये केर लेव प्रम् वेर न्ययानी से सका में या खूद के ना में दा मुदा मुका माया नहेद द्वार ना परि श्चु अदे भूर नवेद्राय वर्ष पदे छे। हें व श्चेत वर्ष स्थर श्रद्य पदे श्वर्य रा.रटा रेया.राष्ट्र श्री.याष्ट्रेश.बेट.रे.यहेया.राष्ट्र श्रेटश्र.रा.बेट.यहेया. ८८.२४.स४स.२.५५२म् १६८.वायवाययाययास्यायाय्यायाः या न्यानर्रे अयम् युर्या अयाहे अयम् वर्षे अया वेषाय छेत् सेरी क्षेत्रायम्बर्धनाम्बर्धान्याम्बर्धान्याम्बर्धनाम् । दिवे के बुदावहुणामी पर्दिने हैंग्रथः सः बुदः वहुग् सेदः ग्रदः बुदः वहुग विवासरः वहेंग द्वें राष्ट्रे। देसः क्रियाश्वर श्रुवित्यश बिट विह्या पुर विदेश या विव प्यट प्येट या बिट वह्यार्चेन समार धेन या वहें या छुयारे सा बुर वह्या रूप ववा से प्रोंस र्शे विश्वास्य स्वासी स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत

स्याश्वास्त्रभाश्वास्त्रभाष्ट्

हेंग्रायाया बुरावह्या हु वर्षेया प्रवेश्वर हो। श्रूर्याया बुरावह्या रानेशःश्चरः यरः श्रेंदः राष्ट्रेतः या हे गाडेगः तुः सहसारा राववाः रादे रेदः ग्रयाक्ष्य देवा भ्रेरा मदे यो भेरा सम्बन्ध स्त्र म्या स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् शुन्ता व्यायन्यामर्द्रम् श्री दिन्याययम् विषयः श्री व्यायम् श्री दिन्य यदे बुद वह्या वी यार्डे 'र्ने हिंग्याय बुद वह्या हैं च राय धेव हैं। ।दे प्यद स्रूट सके द रेंच ना शुस्र नाट र दुट पी व वा हिना य पी व र य सा हिना सर्दे न हो । यथा बूट अळेट विंच पाशुक हिंगा सेट ट्रमाशुट स मही रट न विंद न कुट डुदे गुरु हैं गाय हैं अर्थ सुर से स्था ही मधे पर ने द हु विद प्रथा गहिस बूट नी क्वें राय कुट न ताय दर्गे दरा दरा है ना से द र , न त्व द ग्री क्वें दें दि दें न यदे हैं गाया अप्येत यम ग्रास्त्र स्था अत्रेत्र । निर्मात स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य र्रे वि के त र या र य र सूत वाया य र र य य व र स्था य र स र य व र र र र र र ग्री दिन प्रयायकायम्का स्वाप्ति स्वाप्ति हो सः वित्र ग्री का स्वाप्ति हो ते । कुंवाची शर्हेवायायायीत्रावाशुरया देत्राग्राम् छेत्रावयया उदायाचितः मः र्से नवर न्यय खूर पो भी रान्यय नवर में दि नाशुर यशा ने सामानि मदेन्द्रिन् मुन्द्रिन् प्राययन्ता देन्यस्य यहस्य सदेन्यु प्राय स्थित ।

यहिश्रःश्वेद्द्रप्तिः विश्वेद्द्रप्ति। विद्यान्त्राश्वाद्द्रप्तिः विश्वेद्द्रप्तिः विद्यान्त्राश्वेद्द्रप्तिः विद्यान्त्राश्वेद्द्रप्तिः विद्यान्त्राश्वेद्द्रप्तिः विद्यान्त्राश्वेद्द्रप्तिः विद्यान्त्राह्यः विद्यान्त्रविद्यान्त्राह्यः विद्यान्त्राह्यः विद्यान्तिः विद्या

दे त्रविः श्रें व पदे बुद दह्या य देश बुग्र श द्या श देश देश य उ विगासहरामाधेवावेषा रेसायायमा बुरायह्यानेरायहेवायायवमा या अर्ने विरावे त्यवरा से अर्थे विश्वास्त्र स्थान स्वाप्त विश्वास्त्र । ग्रथर-र्-तश्चर-क्रु-थेर्-ग्रट। नश्चर्याः चेत्र-वेव्ययः चेत्र-वेव्ययः है। देशस्याशसंदेख्याहेवायायावसावसावेशक्षेत्रक्ष्यायादे देवात् यार्चेषायात्र वृहानाः भूत्रयाः शुःत्रतायि के विष्या विष्या विष्या विषया नक्षन्याययान्वराधेतीः देयायया ह्वाना हो न्तरहो न्तराहो वा वाया व्या कुंव कर पा शे र्रें न परे हुर पहुंच प्रमुन परे अर्क्व स्था व न हुन या स्व ८८:रग्रायायाया विवासायराद्याः विवासायीया । स्वापुः याययायाः वेदा नहवःया । नगरः ध्याः केनः नरः वर्षेनः नगुरः वश्या । वेशः श्वेनः नश्याः यथः ग्राह्मराम्यात्र्यः म्राह्मराम्यात्राची । व्यवस्थितः प्रमानम्यात्रात्राम्यात्रात्राम्यात्रात्राम्यात्रात्राम्य कुट्रास्याचुर्ते प्रमृत्यापात्र दुःपात्रसात्रास्य स्थित्सार्यते सळ्त्या स्सर्या प्रमुद्रा नरःदशुरःर्रे। । । ननरः धुनानी खें नः नन्न न कुनः न स्वा वे वे जन्म निर्मा धुगानकुर-रेविसी पाठेगासे। ५८-से नकुर-वे स्वित्र प्रदे बुद-पहुगापदे

कुर्ययर खेर्या धे अप्रकृर्ये रे अरश कुर्या वितरे खेर प्रवासित र्वे दे त्यः श्रेंद्रायः वेश्वायं दे वर्षेद्रः श्रे द्रा श्रुद्रः प्रद्रः देवा सदे वर्षेद्रः वहें तः खूना समः वनमः है। हस्र राये तः ने हिन ताः में न राख्ना से विना वर्ने तः मदे वनराय श्रुं न माले राज्य हो नही ता श्रुं राज्य राज्य हो श्रुं राज्य राज्य हो स्वामे प्राप्त हो स्वामे स नेव ह र्श्वेरा से द री र्श्वेर प्राची सुरा प्रिया है। प्राया से प्राची प्राया से प्राय से प्राया वेषिः श्रेषाशः धेर्पः पारः विषा । यहः र्रायहते व्यवः श्रेषाशः शुः यदेः श्रेष्ठाशः ५८. चरुरायदे श्रें ५. याचे । श्रें रायर राग्नी श्रें ५. याचे सक्ष्य है ५. ५८। दे यार विवा । यह प्रायह वे त्यव से वास ग्रुप्त वे हैं साम प्राप्त विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास ने। श्रुं अयो न ग्री श्रुं न मिते यळ व हेन। हिते श्रुं अया वस्य उन श्रून अहे । ले.कि.रेट.र्श्रुंशश्रातरावर्यातारारेटा यहेर.की.ह्र्रायाश्रास्ट्रीटाया बेट.री. ब्रेयाद्यान्ने व्हिन्द्र होन्से न्यी प्रेया के वा ब्रेया दु क्षेत्र प्रेत्र होन्या दे विकास के वा ब्रिया दु क्षेत्र प्रेत्र होन्या दे विकास के वा ब्रिया दु क्षेत्र प्रेत्र होन्या दे विकास के व निव हिर्मेश से दारी हैं दायदे सक्व हिदाधिव हैं। दिर्ग श्रस यदद न हैं द रेसम्बर्भें न्यान्ता हैनासारेसामवे नेनासावित में मुन्यानिसा दरा वसःस्राधेराम्बरार् क्रिंग्डिराद्रा क्रिंग्डेरार्वेष्याः वित्रेष्ठिरा र्श्वे दारा गरियादा है असे दारी हैं दारा या कु अपदे दार वसू या गुरा थेंदा 71

यःत्रव्यश्चरात्रासर्द्रतः नुनुत्रकुषाने।

ने प्यट ही र त्र से द ग्री प्यस ग्री स सुन पर में दे सुद में पदि दे से द त्र स सरसामुसावगुनाळ्यामहिसापिन्द्रो क्याञ्चेत्रमुप्ति । विस्तिस्ति । विस्ति । वि यप्रशामित्राम्याम् स्थान्त्राम् स्थान्त्राम् स्थान्त्राम् स्थान्त्राम् स्थान्त्राम् स्थान्त्राम् स्थान्त्राम् वर्ग्ययःसद्यः व्यव्याद्याः वित्याः वित सरसः मुसः त्युनः पदे वस्य र्सेवः वाडेवा वी । प्रतः रेसि प्रवः प्रसः ही । विर्वर विरिध्याय प्रदा यहियायही त्याविर स्या विर्वाय प्रवित्व बेट्रम्बद्रम्बर्ग्यः श्रम्भः भेद्रम् । न्नः बेट्रश्रम्बर्ग्यः मुक्रान्यः वर्ळर कु वर रेश पदे ग्राट बना धेव वा वह्र अ तु स्त्री र पदे शे धेव पश विया यरर्देरत्व्हरकुःवेशसंदेश्यर्देश्यर्देश्वर्त्रस्थर्देर्त्यःश्चुःख्रार्य्यायः वयाहेवाने वापळंटा कु ना धेवायया वर्जे ना ने ना या ना टायटा या धेवा या भ्रि.च.चक्क् द.वश्वर्यद्वर क्च.च.व्य.वं.क्षे.च.वे.श्वर्या विश्वर्या भ्रित्र व्या वे र्श्वेन प्रते बुद प्रह्मा पर्देश अव्याहेश ग्री द्र्यो श्वें र ह्र अश्व सुद्राया यानहेत्रत्रामें रात्रान्त्रान्ति सक्ताया है सम्भावन्ति । के सम्भा धे वर मे अर्इर अरवे अर्दे न पर ग्रुर कुन महिश ग्रे के न में दिन ग्रे के न ग्रथयः अर्देवः न्: ग्रुर्यः विदा वेदः ग्रुर्यः नेदेः भ्रुरः हेगः नदः येदी क्षेत्रः यः सबतुःर्र्म् न् मुःर्द्र्न् म् राया स्य स्थितः वेषाः सदेः मुद्रा सबदेः न्यः स्वरः बेर्'यसमीर्दिर बुर्'क्ष'राधिर'रस्य देसक्षेत्र श्चेर'मेर्'र्र् समाहेर गुर्स

हें किंदि न्या श्राप्त क्षेत्र क्षेत्

त्रश्ची स्वास्त्र स्वास्त

श्चित्र'देशदेशदेशया नदेश्यके स्विध्ये के स्विध्ये के स्विध्ये स्विध्ये के स्विध्ये स्विध्ये

राक्षेत्रःय। याञ्चयात्रःश्चेश्चेश्चेशःश्चेशःश्चेशःश्चेशःश्चेत्रःशः ह्रें हे याश्चेश्वात्राश्चेश श्वेतःश्चे। श्वेतःश्चेश्वेतःश्चेत्रःशः श्वेतःश्चेतःश्चेतःशः याश्चेत्रःशः श्वेतःश्चे याश्चेतःश्चेत्रःशः श्वेतःश्चेशःश्चेत्रःश्चेत त्रित्रास्त्रीत्रात्र्वास्त्रात्रे । श्रीत्रास्त्रात्रे व्याप्त्रात्रे व्याप्त्रात्रे व्याप्त्रात्रे व्याप्त्र वाश्यत्रात्रे श्रीत्राक्ष्याः श्रीत्रे व्याप्त्रात्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे

श्राच दुःश्रेषाश्राद्मात्राक्ष्या

भ निर्मान्य स्थान द्वार्य निर्मान स्थान द्वार्य स्थान स्थान

स्वास स्वास निया श्री स्वास स

गडिमारायमा मार्च दुरे द्यायाम् मारायी । ज्ञारक्ष्यासे समाद्रमर नेरावगुरारी विशासवे न इवे सेरा हमा मुहसाया व वे वे दे व क्षेत्र ग्रथात्। । यानद्वत्ते द्वरानद्वाया होत्यरान्त्रत्ते। । नत्तर् हुतः हे हे वर्षेट्यायया तुस्याच्याच्याचेषान्या न्वरावीट्सावासुस्रासेयः यानिन्य सेटार्टेन गटा धटा या यथा नरा साम्यन्त्र निर्मार साम्यन यथा यरयाक्त्रयाद्वययाक्त्रीयापारानहेत्या ।यराक्त्ररादेवे नद्वायुया मार्च्याययायदेश्वेटार्ट्रेन्याटापटायायायुट्यार्थे | देयावृत्यय। दटार्ये यश्राभुः र्सूर्या प्रायमुत्या देश्वा विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया सर्हरन्तर्ग । यन्तरुप्रायम्य हिन्नस्य । वियन्त हिन्नस्य ययः गुर्। र्रे हे चेवा पादि लान क्रेन् देश लान क्षुन या व्यापात क्रिन से वेशन्ता भुन्ताम् शुन्ति मुग्नि । स्वामा स्वा या वेशमहिशमा अध्वापर प्राचे त्या रामे के प्राचित रामे हिंद रान्दा ब्रूट्याम्बुयासर्वेद्याययाः भुगासुद्यम्यासर्वेद्यायरः हेवासायः वे सेससन्वेव धेव प्रमाने स्व इसन्द सुर न मुस्स से । १८५ स रह. १८ १ वर्षे वर् ग्वमाने उं अ त्यश्मायश्यन्य न्यन्तर्भ स्त्र सुदारे ।

ग्रे:र्ह्र-१ अ:इ:११२६मामाधःयय। म्वयः१८११मदेशम्बयः

न्द्रती विद्यन्द्रिम् विद्याने प्रविद्याने विद्या विद्याने विद्यान नविन हे वर् ना । रूप्त विन हे नवे रूप्त विन प्रमान विश्व नि हे नवे । वश्रामार्वेन हेन्। ।वर्ने इससासा वे महामहिसा है। वेसाय मधिन वेमा मन्दर्भेरवर्ष्वायाभ्रासम्बद्धार्यात्रेयान्य स्थान्य स् नह्नासने हिन्द्रा नने सर्वेना इक्त्रिं से सुर्य स्थान स्थान र्यः हुः न्यायः यदेः स्रा । ने : यद्वेव :हे :यावसः है : सः सेन्। । विनः यने नः विनः नेशसराम्या हिरवदे विराने देंदर पर्से ना किहें का ने सुरादगाया हि नदे कई सर्दे गुरिन्। १८५ न रेट ५ सेट न भेता हे नदे ५५ न से गर्थे न । र्रम्बिन्येग्रायदे हें में राष्ट्रिन । हे नदे र्म्बिन् हें राष्ट्रे ह्येवा विश्वानवश्रास्त्रम्थान द्वारान द्वारान द्वारान हो। श्री ह्वारान हो। न्हें न् तुः अ र्श्वेष्व अप्यथा क्ष्व में अमें व न् नु सून्य में व व व क्षेत्र क्ष्य के निष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य श्रुर्द्रगवात्रा वेशवतुर्ध्या देवेवत्रोयायास्त्रास्त्रे सवेस्रे सावहः नत्वासायमा पत्वाहेगानिवाश्वरात्राया विमायवेषाहे। वेमान्या सर्विः शुरुः शुरुः वेः वेः वर्षः वर्षः विश्वाय शुरुः यः भ्रेरः शुरुः विश र्रे 'नृते 'कं तुर्रे 'दर्तु त' स' दर्रा । शु 'नृ हे गा स' त्य 'दह्या' स्था श्री । श्री 'स्था से 'हे र यथा वश्वरागर्डेरासेंश्वराश्चेंरायदेश्यदे। यानदुःगहेशायाग्वरहादेरादेः हे नदे दब्द मार्डे द दे। वेश दब्द मार्डे द दे से श र्से द में अपदा वश्रद्धार्यार्वेद्रगीव.ध.त्र्द्रमी.श.व.चन्त्रमी ह्राह्में श्रुद्धार्या क्रिया की क्रिया वा ग्राम् म्रिक्ट्रिक

वेशमधेनम्भीश्राग्वाहार्देन्द्रा नर्द्रकेर्द्रन्द्रा वस्रायदादेन न्दा हैं है र्दिन न्दा देव केव र्दिन न्दा मर्डे रिकट न्दा स्था है र्देन न्दा न्रे से प्रम्पान्या न्रे प्रम्यायान्या के साम्य देन प्रमा उन् अद्येत्र सन्दर् र्रे र्रे र्रे निन्न नि हैन ने निर्माय सदे राष्ट्रे से दार में से स्वर् नदे अन् इनिक्रमा अर्दे न हिन् सु अदे ले तु सु अ दु प व स र्याहर्षियदर्द्धः अत्रा विश्वर्श्विष्यः श्राम्यः वर्षः श्रेटः त्रा द्वे से ८८.लु.चेशक्षेत्रा १८.केर.अ.वु.चक्षेत्र.सूर्। वृत्राटरा ह्राड्र.अ.वु.चक्ष याशुसामा वेसामासाम दुःयाशुसायाशुम्या स्या केदानेया येदे याहेसा यायमा क्षेत्रान्येवान्यरावे नड्डाम्डेमान्छे। । मामरायवे नयरावे नड्डा गहिरामा विरास्याधीनेयायदुःगशुरामा दिःसूरदेःयविरायदुःयविः वि | नियम् में त्यादी यामे से | नि इस्ययायाधी नियम सुवा यन्वा । डेयार्मेम वस्रेट:न्ट्रसम्बन्धरम्याश्रुद्यःश्री।

णेश्वेशक्षेत्राचित्रे ते तु नहें निक्ष प्रति निक्ष प्रति नहें निक्ष प्रति निक

भूते या ।गुन ए सूर न र्वेन पते रेंद्र ने र्वेद या र्शेंद रेंच्याय पते भूते या नर्हेन्द्रसेन्यळन्सेन्यसे। ननेन्यकेन्येविस्स्रे नेग्वन्नवर्यवे ग्रे म्याया । सर्वे गुव फु नहमाय पर्वे । वियम सुरयाया पर दे हिर यमा ह्या. हु श्रुयाया धी ते सुमा । माते यह या हिया या रु रहता विष्टमा श्रुर ह्रियाश्राश्चराय्वे यादेशाया विद्यायी भ्रादे यव्यायायाया । विदेश्या विद्याया । नडु नवे न | निर्वेग नर्डे स्थे भेडे न | निर्वे भे न न न न निर्वे भे न त्वायने निष्यास्य सेवा वेया ग्रम्यास्य से दे या से सार्धे द्राणे सार्वे र्श्वेरायम् देन स्वायायि याय विषय विषय स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया याम्ययाने वसवायामाने यादी ने प्यान्य न सुरा है या मित्र या स्या मुश्राग्री शाबेश शुःषदा । षद द्वा धर हेवाश पदे अदश मुश्राग्री शाश धेव धरामा गुरुषा भेर द्वेव की अर्रे दिया अर्रेव हैंग्र मुव की वर न्वित्यामाधिताया ने वे खें अ क्षेत्र ग्री यात्र स्वाया में विष्या ने विषय निवयागुवाहार्वेनाया भुगाश्रुयाद्वानाकेवार्वेत्रभुद्वानिवाहीः हे र्शे र्शेर् नग्निर्यात्र्यायात्र्यं के स्ट्रान्ता यात्र स्त्राम् म्यान्य स्त्राम् स्त्राम स्त्राम् स्त शु-१८-ले ने श-ग्रे-शु-इस्रश-से स्वार्यात्यात्यात्यात्रात्वादाद्रात्यायाः त्रश्नाचर्रे ख्राधेत्राग्रहा सेंशार्श्वेत्राग्री साद्वार्यस्यात्राचे स्वार्थः विद्वार्थः विद्वार्यः विद्वार्यः विद्वार्थः विद्वार्थः विद्वार्यः विद्वार्य इवाधिवर्ते। देशवाधेभेशविवाधेदे वर्त्रोयायश्याम्य साम्राम्य स्व नन्द्रम्य स्वायायदेखायाचर्ष्याययायद्वात्रम्य गहेशमंत्री देख्रम्य श्याया ग्री भ्राम्य श्रायदे ग्राम्य न दुम् स्री नदे

के । निर्मासके मार्स कुरारा श्रे श्रुत् श्रे मार्स स्वार्थ । स्वित्र स्वे स्वार्थ स्व

गडिग'र्टा थट'अर्देव'चर्हेट्'त्रु'अ'यश'ग्रुट'रा'चलेव'र्च'र्ग्व' र्शेग्रायात्रुवे क्षेटान्। हिन्यम् ही त्यस्य ही में में में सेन्यवे सान्या नरः कर् सेर प्रमानी दें ने प्रेश्वराय के साम मान कर कर के निर्मा से साम के साम के साम के साम के साम के साम के स <u> र्रे हे</u> दे अ क्षे न दु न शुक्ष य पर्दे न दु य न है अ न शुरु अ परि ही र है। क्षे अ गहिरायायया ने भ्रात्राया उपिडेमा इस्राते। स्राया स्रित्या राष्ट्री न प्राया स्राया स्राया स्राया स्राया स्राया ख़्र रेवा न इ निहे अ ५८१ वा या अ ५८२ में निहे अ ५८२ ख़्र रेवा न इ ना शुअ इस्र रें। । पर द विर पर की यस की में में दिने से द रादे स द र खूद है वा नडु'गहिस'हे। सरस'क्रुस'ग्री'सदे'नर'ळर्'सेर्'सदे'सस'ग्री'नर्गाहिर' योः ने अः वृत्तः यदेः अः न्दः वृत्तः हे गाः न हुः गासुसः स्वि। विरुपः गासुद्र अः यदेः ही न वर्देदे दर्भे देश हो वसवाया विषया विषया विषया है। या वसवाया या विषये यद्गर्नात्र्यास्थ्री यान्युत्मायान्युत्मार्थ्ये द्यामद्यान्युत्मार्वेन न्वेयाध्व ग्री यादी क्रुव सबदे न्य क्रिय त्या से प्राय प्राय प्राय स्वी न्रहेन्त्रुः अदे न्वेन्य पर्वे । न्वेन्य प्रायुन् क्रें व प्या नेय प्राय विपरे मन्दा देशायूवे वर्षेया पाति हैगाति श्री माया स्ट्री माया प्रविश्या स्ट्री व्यायान्य व्यायान्य विवास विवा यार कें प्रायदे दें द्या प्रायदें प्राय

श्रीं रायसायासाय इत्वाहे साझाय दिवा छ्याहे। ये विश्वासा देन दिरा विश्वासा देन दिरा विश्वासा देन दिरा विश्वासा देन विश्वासा देन विश्वासा देन विश्वासा देन विश्वासा विश्वास विश्वासा विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास विश

यात्र निविद्या स्वार्थियात्र स्वार्य स्वार्थियात्र स्वार्थियात्र स्वार्थियात्र स्वार्य स्वर्य स्वार्य स्वार्थियात्र स्वार्थियात्र स्वार्थियात्र स्वार्थियात

न्दःश्चे रःनवे अःनञ्जनि शे अर्देन् सर्हे न् त्युः अःनशः मशुद्रशः पवे शः नञ्जः । मशुक्षः से निवे प्रदः से रार्शे सःश्चे न् ग्री अः नश्चनः पवे अः नञ्जनि । ।

र्तः व नगरः गरुः गर्ने शः गरुः गर्ने शः श्रमः गरुः गरुः गर्ने नित्र नित्य नित्र नित्य नित्र नित्र नित्र नित्य नित्र नित्य नित्र नित्र नित्य नित्र नित्य नित्र नित्र नित्र नित

यान्तर्भा व्यक्ति विष्ठित् विष्ठित्य विष्ठित् विष्ठित् विष्ठित् विष्ठित् विष्व विष्ठित् विष्ठित् विष्ठित् विष्ठित् विष्ठित् विष्व विष्ठित् विष्ठित् विष्ठित् विष्यक्ति विष्यक्ति विष्यक्ति विष्ठित् विष्यक्ति विष्ठित् विष्ठित् विष्यक्ति विष्यक्ति विष्यक्ति विष्ठित् विष्यक्ति विष्यक्

वेशमादी र्रेश र्रेन्गी अपन्यानग्रम्य प्रति सान दुः नुगामाधिन है। र्रेन नइःइमान्दरः धरः श्रुं रः र्रे । विकामाशुरकारावे श्रुं र। देका ता धे के का विमा येवे दर्गे दश्या सूर्य से क्षेत्रा रावे यस या सामित्र स्वार्थ स्वार्थ सामित्र र्वे । निःक्ष्रम्य स्वाराण्ये स्नान्य सम्धित चेवा सः यस स्वे सेमः वर्षे वासः वर्राक्षे वर्रा के देवा वर्षा वर वर्षा वर् ५८। वसवाशायवे शार्श्वे नाश्चे नाइना नवशायवे ५ हो नशुः इसाधे नाही दे विश्वराद्यायात्रायायात्रायात्रायात्रात्रम् चुरान्य यात्रश्चानः नुः अविवानी शः क्रुनः न्वायानः यथा न द्वः विवानः गुवः तुः देर्प्यशर्वेद्रित्युर्प्यदेश्यणेद्र्यर्थायन्त्राचन्द्राध्या यर्धेद्रचेवायदेः अप्तरुपाठेवाप्यगात्र पुर्देन प्रम्य श्वा अप्या श्वा अप्या स्वा अप्या स्वा अप्या स्वा अप्या स्वा अप्या स्वा अप्य अप्तरुपाठेवाप्य गाविष्ठ स्वा अप्या अप्य यदे अ महिरादेव महिमा हु न न न मा महिरा म

न्दः र्र्भनः मदेः बुदः वहुणः गहेशः शः न दुः मदेः श्चूनः कः नृदः श्चूनः शः श्चिनः यदे बुद वहुवा राज दुःवादेवा या गुद हु देंद या वहेवा या दे शुँद वसूरा ग्री-नर्गेरमान्यक्षेत्रम् ।ने प्यर्न्स्भेन्ने सम्मन्द्रम् नेत्रम् मासुस्र श्रुम्स् ८८.च२४.स.५४४.सर.ब्रेय.ब्रेच.स.८८। क्वाय.धःश्रेट.८८.तथा.ब्रे.स. ने निर्देशमान्यान प्राचीर प्यान से ने पाने या से साम से न ग्रीः श्चें त्रश्राश्चे प्राप्त दे दिन्दे दे दिन्द श्वा दिन विष्य दिन स्थित हो। कुन श्चेत विषय स्थित स्थत स्थित स् नश्चेत्रस्यास्यास्यास्यास्यास्य स्त्रीत्रस्य स्वास्य स्त्रीत्रस्य स्त्रस्य स्वास्य स्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य थॅर्ने यर धेत नेवा परे अप्तक्त पर विर प्वा क्षेत्र पर विर प्व नश्चेत्रिस्यायवराष्ट्रीत्रायाष्ट्रियारायाद्रियारायारात्रायळ्टाकुःवयुराष्ट्रीःयहया धेरा स्थापनेवप्रत्यापनेवर्थप्राच्यापनेवर्थप्र दे। सर्धित वेगा मदे अर्ग्या सर्के अः ह्रेंत मदे रगा हु अर्भर प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प नेशः र्वेन पर्दा द्याद्वेव शुः भ्रवशः शुः द्याः वी इत्व सुदः वाद्वदः विवः यापिकार्क्षेत्रास्क्ष्रम्यायदे स्रिम् सेस्यान्नेत्रया यहायान्यः कुः सळ्दः भेरित्रे। सर्धिदः वेषाः प्रदेश्यः च दुः परः से ससः यः प्रदः हे सः समुद्रामः र्वेनःमः द्रा सेससः द्रोत्रे भूतसः सुः सेससः वः द्रामः गहेशक्ष्यासद्धर्यापदे भ्रम श्रुष्यायाय स्वाप्त थॅर्ने। यर्धेव वेवा यदे राज दुः यर दें र वेर केव रेवि र्वर वस्त्र र व र्वेन'रा'नविव'र्। श्रु'खुर्यापा'र्यास्य सुर्यात्र्यस्य यथाप्रया निमः

यसाविक्षःळ्यान्त्र्विक्षःयवेःश्चित्रः वित्रः विक्षःयवेःश्चित्रः वित्रः वित्रः विक्षः यस्त्रः श्चित्रः वित्रः विव्यान्त्रः विष्ठः विद्यान्त्रः विद्यान्तः विद्यान्त्रः विद्यान्तः वि

द्रा स्राधिवः वेषाः प्रावस्य प्राधित्यः प्रावस्य प्राधित्यः प्रावस्य प्राधितः प्राध

स्वाश्राभ्रम्भवस्याधाः श्रुद्द्राचित्रः विद्वाद्द्राचित्रः विद्वाद्द्र्याच्द्रः विद्वाद्द्र्याच्द्रः विद्वाद्द्र्याच्द्रः विद्वाद्द्र्याच्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्दे विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्दे विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्दे विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्दे विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्द्रः विद्वाद्दे विद्वादे विद्वाद्दे विद्वाद्दे विद्वाद्दे विद्वाद्दे विद्वाद्दे विद्वादे विद्वाद्दे विद्वाद्दे विद्वादे विद्वाद्दे विद्वादे विद्वाद्दे विद्वादे विद्

त्त्रभाग्ने कुन्द्रेन्यये ध्वान्य कुन्द्रवा व्याने क्षेत्र व्यान

वर्रेट कुट दु सेवास क्रेंट प्र्यू ग्रुस है से सम्बेस क्रिंट वर प्रवेद दें। स्ग्राम् स्रोद्राम् स्राम्यायदे राम्ये स्राम्यावना यदे स्राम्यादे। ध्राया उदाञ्चताञ्चेताञ्चे ताचे ता केदारी या धुवा क्षेटा पा हिटा दु कि वा या प्रेटा केटा द्या वहेंगायकी देग्वर्यवर्वदेश्चेश्चयाया । सरव्यावर्षः वहवास्यवें। वेशामश्यानरामश्रुरशासदे भ्रुरर्भे । दे सूरावयर दे विं व हे दहिन्श रादे प्रहेगा हेत रादे क्षें या गुरानी मात्र या भूत्र या श्रें राय या राष्ट्र प्राया है। वि विक्षेत्रस्वित्रुस्त्र्यात्र्यास्त्रः हिंग्यास्यायास्त्रेत्रः यस्त्रात्ता हिंग्यानेवः ने में अर्था प्रमाने ने प्रमान के विकास के वितास के विकास न्दानेनामान्वरान्दायदार्वे । ने यदायसमी महिं रेवि न्वदान् गुरु ग्री त्यसाने निया मी सामसूसामा त्याने वित्त हिन् ग्री निवाहे या सामित स्थान ब्रेन्ने। अविश्वानुने देवे विना कुरायशा ने प्यराम्य प्रत्या श्रेत्रन् र्गे निक्या अत्याविव इस्र अत्यार्गे नित्य वित्र से नित्य वरेर्ड्सर्यस्य कुरावरार्षेर्यस्य केंत्रायायत् सामाया विदाया धेता वेसा वाशुरुरुप्रस्थायदेन्द्रदे प्रयायायर वायत्याय ययवाय स्तुवाय ग्रीप्तर र् गुरुष्त्रभावत्रभावति । क्रिंत्रण्यत्रभावि । वर्षे वि क्रुवारावे । प्य यगायळेंग । कुन्गुन कुने ने ने न स्यायकें । वियाय के न स्याप्त । नुराने निर्मुत् देया रोसरा द्वीतारा ग्री देया श्री हिंदा नाराया बुद्दियाः स्रे। दर्भामदेख्याः देशाम् स्राम् स्राम् स्रित्र स्रुत्स्रेष्ट्र स्राम् स्राम स्राम् स्राम स्र

यदेन्यत्वित् स्वेस्त्रस्य स्वास्त्र स्वास्त्र

भूषः न बर् न्यदे न प्रति स्त्री स्त्र न न स्त्र स्त्री । स्त्र स्

र्वत् ग्रम् र्श्वः न्यवः न्यन्याः व्यवः य्याः व्यवः य्याः व्याः व

ব্রদ্রমান্তর ব্যাব্দর র র র বা

द्यो नि ति ति स्थित्र के स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वय्य स्वर

हेश्रास्ति है न्द्रात्त्रें क्रिंत् क्रिंत् क्रिंत् हैं न्या हैं

ग्रह्म मृत्रभ्रे प्रविदे श्राध्य श्री द्र्य ग्राविया सुर

२०० वि.सं.गु.र.श्र.स.हे.स्वेर से हु-नहं हू-र प्या र्वेर प्रस्ताना प्रति श्रु स्रेर श्री । गुर हे न प्राप्ति श्रु स्रेर श्री । बुर प्रह्मा है हे प्रकर के दिशा । न्या संग्रास प्राप्त श्रु स्था ।

> युनःसर्केनाःसुःश्चनःप्यनःश्चरःदाः।। श्चःनदेःव्वनसःद्दःश्चेंग्नस्यसःग्रेम।। श्चःनदेःश्चःसःसर्केनाःस्यसःग्रेम।। युनःस्कृतःनरःदुःनद्वाःश्चेंद्रसःविन।।

यायाः श्वराण्यायाः वर्षेत्रः यायाः वर्षेत्। । स्रायायाः स्वरायाः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्य कुंयः निव्नः श्र्रें स्वायते श्रियः श्रायः स्वायः । कुंयः प्टिनः श्रें सः सः श्रेः न्यवः या । कुंयः निव्यः श्रुं सः संशे प्रया । कुंयः निव्यः श्रुं सः संशे प्रया । कुंयः निव्यः श्रुं स्वायः संश्रें या ।

त्रः कुन् ग्री त्यस्य नर्मेन् स्कृत्य न निन्दा

देन् । द्वा क्या वित्र वित्र

चःकुन्द्रा श्रुन्कुन्द्रा क्याये श्रून्द्राचा श्रून्द्राच्या श्रून्द्राच्या श्रून्द्राच्या श्रून्द्राच्या श्रून्द्राचा श्रून्द्राच्या श्रून्या श्रून्य श्रून्द्राच्या श्रून्य श्रून्द्राच्या श्रून्य श्रून्य श्रून्य श्रून्द्राच्या श्रून्य श्रूय श्रून्य श्रूय श्रूय

है हिंद्र श्रीय वर्षेत्र राज्य श्रीत द्या है या व्या विष्य है या विष्य विषय है या विषय है

न्दर्शन्ते। ययानेयाके कुटाव्याम्य प्रमायसम्बद्धाः विवास्त्र । क्ष्याम्य प्रमायसम्बद्धाः विवास्त्र । क्ष्याम्य प्रमायसम्बद्धाः विवास्त्र । क्ष्याम्य प्रमायसम्बद्धाः विवास्त्र । व्यक्त । व्यक्त

यारानु प्तराप्त सुराय दे प्राया विकास के स्वार्थ के स्वर्य के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्व

कुन्शें निविष्यन्तर्थरहिन्नी । इन्तर्थं निविष्यन्तर्थन्ति । इन्तर्थः कुन्तर्थः कुन्तर्यः कुन्तर्थः कुन्तर्यः कुन्त्यः कुन्तर्यः कुन्तर्यः कुन्त्यः कुन्तर्यः कुन्तर्यः कुन्तर्य

यर-रुद्र-नवमा सःसम्वरभे द्वो न दुः श्रूद्र-नदे दुवः विस्रामिन्य न स्वर वया नगरनभूरनिरेनुसासुमा बुरनिरानु निरे सूँसामाने गुरस्सामिन धेव है। व र्श्वे द वाहेश या स्वाय स्वय स्वाय स्वय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वय नशुट्य: इ: सूट्याट गुट्र से सर्था ग्री: इ: सूट्य सर्था पेत्र ग्री: दे व्ययः वेत्रायः शुः से ५ दिन ग्राम्या राग्ने मुन से मार्थ दार्थ प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप् नर-गु-न-अट-रॅं-पॅर्-प-इस्रशक्ष्यार्थ-देस-केत्र-सेन्य-गुन-ग्री-कुर इरमारायमानेमारा इतिरा इत्रुराह्मसमा ग्रहास्त्रमा वृहासमा दु नक्षानर होते । ने न्याक्षेयायर ह्या या साम्या विष्या सामिता रायायन्दिर् हेरा हेशरामाव्यम् श्रीशर्मिश्वयर हे से सूस्रायर से माव्या धरकेत्रधर गुरान इससा सळत् से भ्रिया वर्षे सामा सळत् से भ्रूरान गुरा नः इस्र अः क्षेत्रः स्री रः नर्डे अः धरः नाशुर अः धः क्ष्ररः न भूग्र अः द्रशः द्रगः धरः

चुर्दे विश्वस्थाय देय के दर्भे र पाशुर्य से ।

गशुस्रायायायिया नह्नसान्हेन्द्राच्यस्यायित्रस्याप्तित्राच्या नक्क्ष्यमहिन्त्यः अर्धेश्यायदे नश्यायात्र नहीं । न्याये हे व्यायी हैं वयःरदः धूरः वर्भेदः यद्वः । यद्वः दः पो भीयः यः श्रुवः इदयः वयः यर्केदः राश्योश्चर्रा श्र्याः ह्रेयाः ह्रेयायस्ययाः प्राप्तरास्याः प्रवेषा क्रयश्रायम् प्रत्र्या न्यात्राम् यथा श्री । क्रुन् से देवा या वास्यान्य प्रत्रान्य । सदे र्श्वेन हिंदा न्य प्रत्य क्षा वसम्य व स्था व श्रेंगाः हैयान्ता न्यायिन्यवयान निर्धिया हैया मुख्या श्रेराय प्राय र्देव से मारे मारे कि र हे दिया समाश्रुस दश न निरम्पे र्से मारे स्था ही र्देव व्यट्टी नगरास्त्री श्री श्री मार्था निर्मात्त्र मार्थि स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स् होत्रप्रदे हुत्ते श्रेंगा धेव या हियान वे त्रीम्यामा मानव द्वत्य स्रो या ग्राधेर प्रवेश्वर प्राधेत प्राथा देश मुक्ते अ भ्री स्वर्धे स्थी प्रह्मा प्रस्ति स्वर द्

महिमान्य ते से नाव मान्य स्था मिन्त निष्ट निष्ट

सर्वर के के के त्या प्राप्त के के के त्या प्राप्त के त्या के

निले पर्ने। निर्मा मुनारन प्रवेट वाम्युया स्री म्युयान पर्वेन स्याम्य यः क्कें सर में प्यें न्याय अने में विश्वें त्र अने ने मायहे त न्यायहे त स्वायहे त स्वायहे त स्वायहे त स्वायह <u> ५८:नश्रुवःनर्रेशःगुवःलेशःयःश्रेषाशःवेःस्वः५८ः। श्रेःश्रूदःवः५८:नडुदः</u> ग्रय अर् अर्थे व्याय के व्याय के व्याय के अर्थ के क्षाय विष्य के व्याय के विषय के व्याय के विषय के विषय के विषय वश्यान न्दर्दे न यथा मुख्या । मिविदे क्षेत्र य ने खुया ग्री न्दरह्या ग्री-दर्शित्रार्श्वेद्रग्री-दर्शम्यायार्थे। ग्रास्ट्रार्श्वेद्धान्यायायाः ८८.कै.८८.श.धरु.र्जयाथ.श्री द्रयाश.श्री.श्री.यश.यु.र्जयाथ.द्रश.जशा वु. न-न्-मुर्यापान्-इना-संदिःययान्ने देयायान्ने व्यापाने वाया रादे देवाय द्वा राष्ट्रादे देवाय द्वा में हे दे दे देवाय ग्रीय वश्व देया है। दर्य गुनः अर्केना न्दाय देवा स्वाया प्राया में मुन्य के मार्चे विकार्य देवा स्वाया रे.रे.ज.ल८:८६ूमाचीयाचीश्रेयाचीश्रेयालूर्याच्याचाराचाः त्र्वाः कुं न्याः व्यक्तः व्यक्तः व्यक्तः कुं न्याः व्यक्तः कुं न्याः व्यक्तः कुं न्याः व्यक्तः कुं न्याः व्यक्तः व्यवक्तः व्यवक्

श्चित्रश्

क्ष्मान्त्र क्ष्म

यश्चार्याया विश्वार्याय विश्वार्या विश्वार्या विश्वार्याय विश्वार्य विश्वाय विश्वार्य विश्वय विश्वार्य विश्वार्य विश्वार्य विश्वार्य विश्वय विश्वार्य विश्वार्य विश्वार्य विश्वय

यक्षत्रः याये निष्णः प्रवित्तः वित्तः वित्तः वित्तः वित्तः वित्रः वित्तः वित्रः वित्र

यदे खूदे द्वा पर्वे र दे रे अ प्रवेद अळद प्रवेश अळद अे र ग्रे द्वा पर्वे र ग्री-र्नेव-र्नु-पाश्यम्भःमान्धन्। क्रूंम्-हेन्-हेन्-स्वाश्रामित्रः क्रिंग्-सेव-क्रिंशः विवासितः सळंत्र'नडश'ग्री'क्रव्य'वर्जेर'र्थेर्'मदे'र्धेर'हे। सळंत्र'नडश'ग्री'क्र्व्य'वर्जेर' ग्री-क्रॅन्पुर-हेर-क्रेन-क्रॅस-सर-पाश्रम्य-पान-विवा-देवे-क्रे-क्रेन-हेवाय-यदे हैं भ्राया प्राप्ति न ने दे हे या ग्री यह व न व या ग्री ह्या पर्चे र हे ने या विवासरावर्ष्युराववे धिराने। समारेमा छूटा दुःसम्। क्रेंट हेटा हें वा मार्यदे नेयार्यः भ्वायाद्यादा श्रेताया विष्याद्या श्रिताद्या श्रिताद्या श्रीत्राया श्रीत्राया होत्रप्रदेखें। देर्पायर्भम्भायत् ह्ये देर्दे ह्या अप्यासे हिंदे हिंदे हिंदी अप्यासे ह लर.रेषु.र्वेचेश.रेर.र्वेच.सर.पर्चेच.स.श्र.प्योक.को वेच.सर्गू.र्के.ये.क. न्तरः कुनः ग्रे : शेश्रशः भूग्रशः न्याः में : श्रें दः तुः निहः दाः । से दः हिनः ग्रे : हिनः रे : वहें ताया नवना प्रवे के जुर कुन ग्री से समारे परें मासु से दागर पे वे हिस विवायाक्षीयायायाते। विवायासुरकायायविवायीवायवे सिन्

यहें स्वावश्यी मनस्वे स्थाय स्वावश्य स्व स्वावश्य स्वावश

विशन्दा सळव ससे दारे द्वा रहीं रही। के श्रामस्य रहार दा

यह माहिता हो स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स

क्ते त्यावित्त्रे ने ने त्या सक्त या क्षेत्र स्वा क्षेत्

वर्त्ते म्यान्त्र न्यान्त्र व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्

नक्ष्यं सं ते निर्देश्व स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

द्धान्यायायार्थेन्यायार्थेन्यायाय्याये श्रुत्यान्याय्याये श्रुत्यान्याय्याये श्रुत्यान्याय्याये विष्णायाः श्रुत्याय्याय्याये विष्णायाः श्रुत्याय्याय्याये विष्णायाः श्रुत्याय्याये विष्णायाः श्रुत्याय्याये विष्णायाः श्रुत्याय्याये विष्णायाः श्रुत्याय्याये विष्णायाः श्रुत्याय्ये विष्णायाः श्रुत्याये विष्णायः श्रुत्यायः श्रुत्य

इयायर्ट्टिन सुन्यी यस्य नर्टिन सुंयान निन्या

मशुश्रासायामिश्रेश अळ्वासाद्दान्यस्थायते स्थायते स्था

सर्हें ।

सर्हें ।

सर्हें ।

सर्हें न स्त्रें ।

सर्हें न स्त्रें ।

सर्हें न स्त्रें न स्त्रें न स्त्रें स्तर्भ स्तर्भ स्त्रें स्तर्भ स्त्रें स्तर्भ स्त्रें स्तर्भ स्त्रें स्तर्भ स्

स्थायस्य म्हें न्या स्वास्त्र स्वास

हेर्-ह्र्याश्वासाहिर्-ख्याश्वासायश्वास्त्रात्त्र होर-ह्र्याश्वासाहिर-ख्याश्वासायश्वास्त्र होत्त्र होत्त्र होत् श्वासाहिर-विश्वासायश्वास्त्र होत्वासायश्वास्त्र होत्त्र होत्त्र होत्त्र होत्वासायश्वास्त्र होत्त्र हो

त्दे त्यापि डेवाद् से स्वाका ग्री त्या हु त के वाका ग्री वाका या वि दि ते ते त्यापि डेवाद से स्वाका प्यापि त्या हु त के स्वाका ग्री त्या हु त के स्वाका प्यापि हु त के स्वाका प्राप्त के से स्वाका ग्री त स्वाका के से स्वाका प्राप्त के से स्वाका नि स्वाका के से स्वाका नि स्वाका हु त स्वाका नि स्वाका

णटावारियात्राचे। कुट्रश्चेर्ययात्राम्यात्र्यात्राक्ष्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्र्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्र्यात्राच्यात्रच्यात्राच्यात्राच्य

सः त्या संवेद्धा । विका ना शुर्या संविद्धा । विका ना शुर्या संवेद्धा । विका ना विका संवेद्धा । विका ना विका संवेद्धा । विका ना विका संवेद्धा । विका संवेद्धा संवेद्धा । विका संवेद्धा संवेद्धा । विका संवेद्धा संवेद्धा । विका संवेद्धा संवेद्धा संवेद्धा । विका संवेद्धा संवेद्धा संवेद्धा । विका संवेद्धा संवेद्धा संवेद्धा संवेद्धा संवेद्धा संवेद्धा संवेद्धा ।

णरार्विः तः ने श्रुः नः न्दः क्रिं नः श्रुं वाश्रायश्च श्रुः निः ने ने न्याश्च श्रुः स्त्रे ने ने स्त्रे स

स्रवात्त्रात्त्रेत्त्रे क्ष्यात्त्रे स्रवात्त्रे स्रव

यदः द्वीरा विराद्धता से स्वारा त्या के त्या स्वारा स्वारा त्या स्वारा स्वरा स्वारा स्

लट्राय.क्र्या.च.म्। क्र्रेट्रम्.स्या.भ्यायशिषान्त्री.जत्रानुभायः क्रेयः ग्रम्भासे द्वारा मान्या में मान्य क्ष्मा मान्य म यायर ध्रेत नेवा पाययायया सुरावदे हिनायर पेनायदे ध्रेरात साहिता है। कुर्नेर्विग्याम्बर्मायस्य द्वित हेगाय यस यस सुरावित पर द्रसार्ये दिया है या है या त्राया त्रह्म मुज्यसा मुह्म से दिया है । यह से साम स क्रूॅंश्रास्तरादक्रामु नवे शुराधित् सेत्राया स्वासाय सेत्राया स्वासा रेसायमा नभूषामा म्राम्यास्यासे । यद्वानायासा स्थिया समायस्य म् । यदे । ने सूर वर्षेन पा पर त्रु से द शे देश महिषाय वृत्र का या सूर्य शे रहा वी प्रयार्थ अ श्री अ स्थि । देवे श्री मार्थ अ श्री श्री मार्थ । विवास क्रिं ५ ५ ५ ४ ग्री के निवास तक्ष्य क्षेत्र निवय निर्माय मान्य के निवास हिंदा यर प्रकट कु निर्मित्र से निर्मित्र में निर्मित्र में में प्रमित्र में प्रमित् मि विश्वाश्वर्यात्रे स्वर्धः विश्वाश्वर्यात्र स्वर्धः विश्वर्यात्र स्वर्धः विश्वर्यात्र स्वर्धः विश्वर्यात्र स्वर्धः विश्वर्यात्र स्वर्धः स्वरं स्वर

गहेश्यान्ते। ने न्या त्यस्था स्ट्रान्स्य न स्ट्रिया स्वार्थित न्या न कुन्न नदुरत्देवाःद्वायम्भाराधेराधेर्देन न्दर्भे नुस्ये नुस्ये । यसःस्'न्र्राच दुरः वर्दे वा रहे वा देवा निवास समान्या मार्चे वा से हि । नर्डेश सेत् ग्री हों र न वेंद्र र नश्यानिष्यः नश्चित्रश्चित्रश्चित्राः श्चित्रः श्चित्रः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः क्वाकन्गी प्रयाद्वयम् म्या मुन्ति मुन्ति मुन्ति स्वापायम् निवे स्वापायम् निवे स्वापायम् निवे स्वापायम् निवे स्व न बुद्र क्षे न ससामा न दर्र हिद्र न क्षेत्र सम्म स्टि क्षेत्र साम क्षेत्र हिद्र सिद् शुअ-५-अ-हेंग्य-भदे-दुव-क-१-ग्री-यय-इयश-ग्र-ग्री-श्रुर-यय-५-१ हैं तर्से र रा के तर्रे दे के तर्रे प्रदेश या हे तर्स हो रा कुं तरक परी प्रयास्य र गहेत्र्र्युर्भिरायदेश्वर्यायात्र्यात्र्य्यात्र्यात्र्य्यात्र्य्यात्र्य्यात्र्यात्र्याः ग्रीशादक्र मु।पासदे नर्गी त्यस इसस ग्रामु मुर्गे भी स्रीस त्यस दर्ग मुर्गे वर्तितः यया ग्रीया यर्या मुया परि वया मुयया दे । ग्रु मुर्ग ग्री से स्वायया धेव दें। १२ द्वा वश्य अर्चेट वस वे अर्दर में दूर। क्रें अर्थर हें व सेट्य

केव रिवे केव रिव्हिं अपि हेव रिवास विश्व अपि है अपि प्राप्त केव रिवे वर्त्रेर मे 'द्रेश माहेत कें नाम द्रश्य माश्रुय माद्रा केत सेंदे कुर द्रिः न्रें अपादेव वें नामावयायानि सान्ता देव सें र्या प्रें नास्य स्त्री नास्य सामी न्देशमाहेत्रचिनायात्रारीयानवितायात्रायान्तानुनायान्तान्त्रायरा वहेंगामन्ता कुरादुःश्लेराग्रुयाग्रुयाग्रीन्रेयाग्रेवाच्यां विषा र्यायकुर्पार्या अराधरायायकुर्पारानेयाक्षेत्राकेत्रार्थे अप्राप्त्र नेशःश्चेनःदर्वेदःगेःदर्देशःगहेदःर्वेनःयःदशःशःद्ग्ःयःददः। नेशःश्चेनः कुट-द्वि-स्वाय-प्रदे-द्वियाविष्ठ-विन्य-स्वय-य-य-य-वि-प्र-द्वि-प्र-चदिः न्रें अपादेव दे क्रुव अवदे पो ने अरु प्रहें वा पर से वा अर सर्ने खुवा अर वयावश्चर्यात्रयायाय्यस्य पर्दे द्वायायाय्यस्य श्चर् श्चैनःगहेशःश्चॅरःद्धयःसरःद्वेतःवेगःसः८रःशेःदरःनरःगत्रः।स्रस्यः स्र

हुँ न कुन निर्मित्र स्वाप्त वेँ म कुन हो । स्वाप्त स्

यश्चर्यात्रात्र्वे श्वर्त्यात्रेत्रात्र्यात्र्वे स्वयः विद्या

यद्रे-त्यावाङ्गवादान्त्री कृत्युं-त्वाद्यात्री स्वाद्यात्री स्वाद्यात्यात्री स्वाद्यात्री स्वाद्यात्री स्वाद्यात्री स्वाद्यात्री स्वाद्यात्री स्वाद्यात्री स्वाद्यात्यात्य स्वाद्यात्य स्वाद्यात्य स्वा

त्याने न्वान्यानहेत्व्यायळ्टा कु नवे छ्वादी यर छेत् चेवा यान्ता कु न्या के या के या

देशक् र्श्वेन न्दें त्र गुर्द न्वाद श्रेन रें श्रे श्र्व रा प्य ने स्वाद रा स स्वाद रा स्वाद

पि.श्रमान्यन्तरः व्यापदी सर्धित होगान्यदे यस ग्री सहर प्रिंगिदे यसःग्रीःश्रूवःयःनहनःवसःवळदःग्रुःनदेःळ्यःनसूवःयःधेवःवेरःनःसेः कुःद्धंयाभेष्ट्राचाष्ठेशार्थेद्राधराम्ययानराचन्द्राधर्पेद्राग्री ह्या वर्चेर कुर्यायम ने प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य स्थित स् क्रिंव यथा व्रामेद खुन्य या की याद हो से व्याप्त हो हो हो है व र्रे के भू तु शके पाठे पाय प्रकट कु न न न न स में य पु श्री व स दे य स्था हो । सन्नरः स्वारायसः मीः क्षेत्रः या निनः या निरुषः निनः या निनः । विनः । यदे खुन्य राष्ट्री राज्य प्रताय स्वाय विषय विषय स्वाय स्व दे सर्रेय हु द्वेत पदे यस य श्रुर्य त से श्रूर विटा रट में यस मी सबर वक्रम् मुः र्द्धवार्ये वाषायायायाय स्था सूरावि सुराव भूराव भ रादे अदे अवर द्वेत पात्र अर्थ क्ष का की प्रभूष त्र वा पर्कर की पर नन्द्रायाः सँग्रायाः इस्रायाः स्टानी यसः देवे सुग्रायाः धेत्रत्याः सूर्यः सूर् येग्रथं सम्द्रम् सम्युक्षि वेशः म्रास्ट्रस्थः सदे सिम्।

नेश्व स्थानित्व स्यानित्व स्थानित्व स्थानित्य स्थानित्व स्थानित्व स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य

इयादर्हिनः सुरमेन् ग्री त्यमानर्षेत्र खुयान १९५१

मित्रेश्वास्त्रस्यादर्भेन्त्रस्यायेन्यस्याय्यात्रेश्वास्त्रस्यायःमित यसहिष्ट्रराष्ट्रस्य शुः त्वराचार्ता व्रस्य शुः त्वर्या राष्ट्रे वर्ष्य स्त्रि र् हेर्रुं क्या वे । प्रामित्रि क्रिं हेर् हिर्मास्य स्थान निर्हर श्रीन के त क्रन्थ्र भ्रेम्प्रायाय नदे सु सेन् ग्रेन्ग्रेय परिं र ग्रान्य पर सुर न विग ह वह्रमार्डिट द्रनट नभूर नर्जेन प्रशासकार्भे अपने भेंदि हो द्राप्त भें षरायसार्हेन्यसासराक्षस्यासुरयेदासदेर्ननरात्र्वसादाननरानवेरमा व्यान्त्री अःविता वुयान्वरावातान् वियायवे न्यीयायवितायान्या वेया <u> ५८: इयः क्रेंब: ५८: खुरु: ५७) या सुरु: चुरु: छुर: धर: दवादः </u> विगायानश्यामहत्राची न्यीयायित्राधानम्याश्वरश्रास्याश्ची रादानविदि। या क्षायर निर्मेशकेंग देया तुरम क्षात्रेर निन्द्र नुमार निम्या हो देश नुःयःसुरुःन्ग्रीयःसेन्दिन्। ग्रयन्द्र्यःक्षृःनुःसुरुःन्ग्रेयःसेन्ग्रान्देनः न्नरम्भूरम्भेरम्भेन्नि । न्नरमें रस्यम्भुस्ये रिस्रमिवेद्रम्भूत्रम् कुन सेसस ग्री न्रीय वर्षे र न्रा इन्विय प्रीय प्रिंग निर्मा न्या कुन में अस्य में प्रमें प्रमें प्रमुप्त निर्मा कुन स्था में प्रमान कि स्था में प्रम में प्रमान कि स्था में प्रमान कि स्था

यिष्ठेश्रायाचे। नगराची न्या शुप्त्राय्या सुर्श्वाया से या निर्म्श्राया <u> शुर्-तःवःवर्ह्हेत्रःवरःगुर्यात्र्यःवस्त्रां स्रायः तर्ह्हेयःगुर्वाः वर्गुरःगुर्यः शुरः</u> वर्त्यानासम् सा अन् निर्देश स्त्री स्त्री स्त्रा स्त्रा निर्दा गैर्भार्सूर्-र्-तुर्भासाम्मा-रु-नक्ष्म्नानुः इस्सर्भानेश्वास्मः नुर्भाद्यान्यः क्षेत्राः न्दः र्रें या पार्ये वा न्दरावर्षे या हे प्राप्त विद्या स्त्री स्था यः तुरः दः प्यरः र्कें या निवेदः रु निवया या निव्या मी या मी रामि रिवा से रिवा न्नरःल्रेर्भः क्रिन्यः व्यास्त्रः न्याः स्त्राः व्यास्त्रः व्यास्त्रः व्यास्त्रः व्यास्त्रः व्यास्त्रः व्यास्त्र केरः अ: ग्रुर्यः ग्रुरः श्ले : नः नर्त्रः त्र अ: न दुः तुना खुतः करः र् : अर्केना विद्युनः धरः गश्रम्भःभिरा श्रूरःश्र्र्याणयान्यः चत्वान्य्यान्यान्यः वित्रायः है । इयायन्य ग्रूरः ट्य. तर्ग्रे र. केंट. यर. ये शेटश. ततु. ब्री र. रू । तदी. ट्या. केंश. तर. वि. श. श. त. नदुःमंदेः इसःनन्दः दः सुदः नी इसःनन्दः देशः गुनः स्रे सः यस्ने सः धर:बुर्हा।

यश्चित्रः श्चित्रः श

मास्र व्यवस्तर द्वित्राण्य सर्तु प्रमुण्या वर्षे द्वारा द्वित्र वर्षे द्वारा वर्षे द्वारा वर्षे द्वारा वर्षे द रेयाग्री अळव हेर धेर पर पह छेत हैं पवर केंग्री मुख अळव ग्री भ ग्रुद्रश्याचे नक्केट्रिन्देश की ग्रुंद्रिन्य प्रमें द्रश्या स्था स्था स्था नक्केट्र रेयाधेवावार्भेः भेगवरार्देगाश्यार्थे हे रेग्यार्ट्ट इयायाय बुवायर नर्झे अरमश्रासाम्वरायदे भ्रिम् नेवा अत्तर्मु मुरायदे मुरायदे मि इसराक्षे के नर में नश्यान र र र र र र इस र स स स स स स स स स स धेव्यवे द्वेर द्वा वश्वर विरावर्षेर वर्श्वर प्रायर दे वश्वर वार द्वर द्वा क्रायास बुवायर पर्से सायायाधेवायते हिरा दरारी चुवा है। क्रायावया रेयायदे द्वाया रेगाय पर् ज्ञाय कर द्वाया विष्य विष्य कुश्रामित भूत्रशा शिष्य हिन्दा नित्र भूत्र स्त्री श्रीत स्वरे देश साम् दिस् श्रीत स्त्री श्रीत स्वरे स्वर स्वर वेश श्रें ग्राश्च श्रायम ग्राह्म श्री मानेश मानेश स्त्री में हे नि हे न त्या नश्रूद्र वित्र हैं श्रेद्र स्मर हो , नवे देश स्थाय हिंद हैं या पवे नहीं देश देश गिवदिः प्यतः यगाः गासः श्रृतः दर्शे । उसा प्येतः प्रसः ने । नृगाः यः श्रेनः प्रदे । ने सा प ८८.क्रुश्य ब्रुव्य श्रुर्य से १८वीं सार्शि विसामासुर सामिति ही रा

वर्तः त्यावित्र। ह्याका सुन स्थान सुन स्थान स्य

न्दः ब्रुवः ॲटः नवे व्ययः दुः अः विद्वः विद

नश्चेत्रस्थायन्त्रीत्व नवार्यास्य इत्रामार्डवास्य देश्वराय हित्र द्वा झन्देन्।यदेन्यपदेंर्यक्ष्रियादें र्देव'गडिग'स्रे। अवयगार्डेद'रेव'र्से केवे'स्युग्त्रा'यश इव'रा'गडिग'डेश' राञ्चर्त्रत्रेत्रराविवायायाञ्चर्याविवार्ष्याद्वर्यायायाये वेराष्ट्री विविवार् ञ्च इत रावस र र र र श्वाचिवा हु इत राधित त्या हे ते श्वेर श्वास रवास गिरुशागाः श्रीयायाय द्वाया यह प्राया स्वी स्वी हेव दि । यह वाया स्वी शास्त्री ब्रेटे ह्या पर्टेर धिव हैं। विश्वाय वश्चेर रेश या श्चेराय हैं ना सर रवारायायायायायर सूर्विति हिर्दे विद्या सुर्वित सुर्वित स्ति । प्राचीयायित्र मुलासर्केनासम्बद्धन्ति । विभागस्य स्थानिस्य निष्धारा निष्या । रेसाझानार्देन पाठेगा स्रे। ने छेन प्याया ने पायें न साम जीवा पो सामित वर-र्-र्गुवायिरक्ष्रियायायार्थेष्रायायविक्षिण्यविक्षयायर्गुरायार्थेवा र्ते। हिंगानवसानहग्रासदे ह्यावर्ते रहे नक्केन्रे स्थानी क्षेत्रे सेट प्येत ग्राट प्रदेर श्रे दे शेट श्र श्रे स्य प्रदेर स्य प्रवास स्था वेस प्रास्ट्र स्थ यदे भ्रेम दें त्रम्भेन रेस या सूर्याय स्वाप्त से सार्वे सा

द्वानी अन्य क्ष्य क्ष्य

चिश्वेशः द्वान्त्रवश्यात्वे। वाव्यः प्यश्वान्तः निः वार्वेनः विदेशः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः

वर्शाङ्गिसान्वीसामवे धेन थे लेसाया दुरावन न्वराष्ट्री स्वासा नर्या वर् ही सकेर् ग्रे ख्राया त्रस्य या ग्राया हिराया वस्य उद्दर्भाग्वेग्। तृःग्रथ्यः विदः यह्रदः धरः वळरः श्रुवः यः दशः धेः वेशःयः लट्रियाः सर्द्रियः अर्थेन सद्यान्य स्था स्था स्था विद्रायः वर्शेतः हिया स गिरुरागितः स्नेनराधें न्यमः वाश्निरासें। यन्मः स्नेनरान्यः श्वनः सळस्यः र्शे से र वार्रे द से प्रति स सर वासुर स स से हेत ववा रे वा सरें त हैं वास ग्रथरर्, अर्गे नद्वायादयाङ्ग्रियायायर में से हो द्रायर क्षेत्र हे नया देया कैंगार्गे विरेराश्चेनरायारं या ग्रीया नश्चेत्रारे या या मार्गिताया विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया र्रायक्षेर्येत्रस्यास्य स्पर्वे स्पर्याते स्वर्शेष्ट्रम्य स्था क्षेत्राचे स्वर्शेष्ट्रम्य स्था क्षेत्राचे स्वर्थे स्वर्ये स्वर्थे स्वर्ये स्वर्थे स्वर्ये स्वर्थे स्वर्ये स्वर्थे स्वर्ये स्वर्थे स्वर्ये स्वर वेशस्याशरेशयशयाशुरशर्शे । पोःवेशयः दुरः वर् द्रार्यः वेरः मुंग्रयाद्याद्याद्याद्याद्याद्याद्यात्र्यात्रया क्रिक्रया व्याप्य स्व न्नरः र्वेनः यः ते : ह्रेन्य अः ने अः अर्वेदः येनः अन्य देः भ्रान्यः धेदः यनः याशुन्यः श्री नभ्रेन्द्रेयाग्रीः बुद्रार्थेन्याधिद्रापित्रभूताग्री विष्याधित्राधित्र धेवाया नेदेश्वासयानवेश्वरानावे न्वराने साया बुरानवे हेर्ना इन् सेवा म् वि विद्वानिकात्वान्त्राचानिक विद्वानिक विद्यानिक विद् गहेत्रसॅर:न्या:पदे:हेत्:न्रः नहेत्:यर:पळर:नदे:श्रूर:न:न्रः। श्रयः त्री विव प्रति पाहेव में र प्राप्ति हेव प्रतः प्रहेव प्रति र कुल क्षेत्र प्राप्ति र या ने प्यटाट कुय क्षेत्राय वे पार्च में निरा कूट पार्क्षेत्राय वे ने वे प्यव यगाधित सर गशुर शर्शे वें सरा सके नरा खेते हिया वर्ते राया सहसा

सम्मान्त्र स्थानि स्था

न्नस्यः स्टर्ट्राः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्

शुःरेशःचरःविःगव्यान्धुनःन्वींशःयःनेःधरः द्वेगःवीः इयःवर्त्तेरः तीयः गुन्ते अःश्री शियाः अळ्वः वयः वयाः वयः सः स्रितः वटः न्रेवः न्रान्ते वरः वरे न्ग्रेयायिम्प्पेर्माक्ष्मियाक्ष्मियाक्षेत्रायाक्षेत्राच्यान्याक्षेत्राच्या ननसम्मानिकानीः स्रान्त्रम् सामानिकानी स्रान्तिकात्रा स्रान्तिन र्वेन पान्य अञ्चेत्र प्राप्तया वान्य भूनय प्रमा विश्व ग्री न्या सुर् देवाची ध्रमा सळव वस विमाये संसे त्या से समायहै वारा पीव है। । दे प्यारा ८८.स्.यष्ट्रियाक्षीत्राचीत्रास्त्रीयास्त्रीयात्रास्त्रीयास्त्रीया धरः हो दः प्रदे वा त्राया श्रुवः या दे वा त्राया श्रुवः या त्राया श्रुवः या त्राया श्रुवः या त्राया श्रुवः या त गश्रद्याश्ची वियाद्र दे निया भीत्र श्रुप्त में नियाद्य भीता से नियाद्य से निय देवानी श्रुः र्से विष्ठ रायसा है। यदसा है दावा से वाया सु त्यो यो दे हिवा ये। सार्से हेव ग्री पावर ग्री अर्दे अग्री क्रुट वट र पाव अर्थ हो व ग्री र स्था । र स्टर यव्यान्त्रीयाविम् कुयायर्वेन स्वायार्थेया स्थितायार्थेययार्भेययार्भेन्या सुम् नु न्वावा तुरु सराधा सर धेत चेवा सन्द कुन से दिवा सात्र स्वा मन्न संदे हिर दे तिहेत्र श्रुवास्य प्राचित्र श्रेष्ट्र श्रेष्ट्र स्था स्टर्म स्टर्भ स्टर्म स् अन्यासु वि याव्यायळव हेराय हेरायय ग्राम्य सुन स्थाय स्थाय रूर्गी ग्रम्भाक कुर्नु पर्मे नर्गम्भरमा भ्रम्भाय भ्रम्भाय ।

स्वायः देवि स्वायः स्वयः स्

ने स्वरान्त्रिक्ष स्वरान्त्र निक्ष स्वर्ण निक्य स्वर्ण निक्ष स्वर्ण न

र्रे निर्दे निर्दे निर्दे ने से सामान्द्र में दि स्यादर्रे माधे नाया है या निर्यानिका यां वे पे पहन प्रत्यायम् स्थित पर्वे विकाद्या प्रमेखायां भी सवयः वर्षेत्रः यश्यान्ते हे स्वान् विवाद्या स्वार्षेत्र विदा दे स्वार्षेत्र व यानह्रम्यान्दास्य सामिता विकासी सिन्या मान्य सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र स नवे भ्रेरमें अन्य वर्ष राष है वा दर्शे क्रिया कर में वा वर्ष क्रिया वर्ष वा वर्ष के वा वर्ष के वा वर्ष कर के व ८८। क्रेयाः श्रूषाः स्थान्यः यानिन्न्याया देयायाद्रास्तिः भून्यायया केरातुः श्रूरासुन्याया स्वीताया स्वीताया स्वीताया स्वीताया स्वीताया स्व वें क्षेत्रास्वापार्वे वें रामन्तर्भात्रे से रामन्तर्भा हिरारे विद्यान्य स्वार्थ गिदेः भ्रम्यश्रास्त्रीयाश्रासाञ्चात्यान्त्रीयाश्रास्त्रश्रम्भारास्तरमित्रहेः र्देवरिकारावे विचायावाके वाक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र हिंदर

स्वाशः रेश्वः वश्वः वर्षे रः वर्षे देशः वर्षे रः वर्षे व वर्षे व

इस्रायान्द्राचित्रसेट्यदेर्देत्राचेत्राचेत्रहेर्त्राचेत्राचेत्राचेत्रहेत्रसूट्र क्रॅंट हेट य व्याय निरमा बुट इस हेत प्र महेत प्र में अंदे इस प्र प्र प्र नवे वन न्याया विश्व से द्रा के स्थाय के स्था के स्थाय के ह्या वेरामश्रम्यायदे हिम्। निश्चेन रेयायदे हुन ही वरमाययापिया बेन्'ग्री'क्य'दर्वेन'न्न कुन्'ब्रे'देवा'सदे'सळव'सेन्'ग्री'क्य'दर्वेन'क्स ते^ॱवनर्यः नेयः दें निविष्णः हुः स्टानिक क्षान्य स्टिन् वेषाः प्रदेः सूटः हेटः हैंग्यायदि यस यस सूर्वय के न धीत है। वसे न से सम्देश ग्रुव सुर्व सर्वे यथा नग्रीय परिंद्र ग्री परिंद्र विंप्य दिश्व वाया स्था स्था स्टा प्रविदासे द धरावर्षेस्रासदे र्हे दे। द्यीयावर्षेर ग्री विष्राचे स्थाप्त स्थाप्त स्थाप वर्षानर्वेद्रावस्था ग्री कें वार्षाद्रा स्रामित्र वेद्राचे प्रमेद्र स्राम्य स्रामित्र स्राम्य स्रामित्र स्राम्य ५ भ्रेमानदेक द्यापे नेया ग्रेकें ग्रामादे या ग्रेसे में माने प्रामेन विरा वेशन्रा नुश्रेम्शन्यः सुदे तिर्देन ते त्यान् श्रेम्शन्य न्यान्य विदः बेर्पारेश्यति क्विंत्। ह्युःग्रायात्रीयात्रात्रशास्त्रातिव वेत्राचेर्पारेश्यापि म्नें भू तु त्यश्च नित्र वित्व के नित्र वित्व के नित्र वित्य के नित्र वित्य के नित्र वित्य के नित्र वित्य के नि ख्वायाधितायया वेयावास्त्रायदे स्ट्रीया विश्वेत्रे स्था स्थित विश्वेत्र ५८-५े-६-७४-भूबाद्धया५८-७५४४४४३-४१-५५-५५ गुन केत्रर्भे र्भेदे न्निन् र्द्धया भे त्र न्य स्थरा ते नातृ र नात्र न् नार्य न्य नन्द्रासे सूर्वश्रम्याय देसार्वे स्वयं के स्वयं सुर्वे ।

यहिरायायाविरा वसयायास्यायायाचीः ह्रियायारे अ. इटा बटा हो।

स्थान्य स्थान

यद्ग्यामःहिनादादे। नक्ष्रियाम् क्ष्रियाम् क्ष्रियाम क्ष्

स्क्रिय्याचे स्वात्त्रे स्वात्त्रे स्वात्त्रे स्वात्त्रे स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्वात्त्र स्व स्वात्त्र स्व

श्रुभारात्य विश्वेषात्रात्री देख्दाताते क्रियायात्री स्वायात्री विश्वेष्य क्ष्या द्वायात्री विश्वेष्य क्ष्या द्वायात्री विश्वेष्य क्ष्या द्वायात्री विश्वेष्य क्ष्या क्ष्येष्य क्ष्या क्ष्येष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्या क्ष्या क्ष्या

यहे अत्यायायाहे या देश विष्या देश विष्या विषया विषया

र्थेवर् रवर्गे पर्वो राष्ट्री प्राप्त क्षु अदे क्षु र्थेवर् राष्ट्र अर्थे र वर्षे बुरःवह्नमार्चेनःश्चेर्रःनवेरधेर। बुरःवह्मार्डशर्चेनःयःवर्मारवेरश्चुः डेगारुम् र्चिम् म्यो स्वी म्यामित्र क्षु स्वी स्वामित्र क्षु स्वी स्वामित्र क्षु स्वी स्वामित्र याश्वरः श्रृंत्र-तुः तर्वो प्रति । न्या प्रते श्रुः स्रोते श्रुं ते प्रेंते ग्री रेंद्र याश्वरः श्ची नर्वेद सर शुर सदे नेद कुर नदे न हुन हुन हुन से र हेर सेद शुर वर्षावनुद्राचिते देवानी देवानी विद्यामा वर्षा ग्रुसम्ग्रेः स्वायायायाया देवे देन मुन्यवे देयाया सुरायवे र्बेन-र्-अ-र्रोट-नर-प्यसम्मित्र-श्री सार्वे हिन प्रमित्र-प्रमित्य-प्रमित्र-प्रमित्य-प्रमित्र-प्रमित्य-प्रमित्य-प्रमित्र-प्रमित्र-प्रमित्य-शुर-५-१३५-४२ हो ५-४६ तु अ-४-५८ खूद-४६ दें दें ने ही दें ५ ना अयः अर्देदः र् नेर्नेर से स्ट्रायि होत्र विस्ताया सुरायि क्षु सुरा में मिराया से स्राय नवेबन्दर्स्यः सम्रानेविन्देन मुनः सविः हेना सः नेमः श्वेबन्दः वर्षे निष्या है। ने हे भू न न बित्र नु स्वेद गादे से भी गाया पाया विसाम स्वेत्र नु सार्से द न न न न न र्रे हे स हे प्रविद्यापि क्षु खुराईन से प्रकार्य हो स श्रमानेति में न श्रमानि हैं ग्रमाने सामिन स्वाप्त माने में में में माने सामिन स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्व श्रेट्राची अर्च ह्वा अर्घ दे श्रें वा हिंवा श्री : ध्वरायवा वा स्राप्ते दे दे दे दे द्वराय दे । हैंग्र भरे अर्थे वर्र वर्धे पर्वे अने । दि वर्ष प्रते हैंग्र भरे अर्थे अर्थे र गरे

₹'अर्,र'₹ग्रथ'पर'अ'मेंवि'नर'शेअश'दनेद'देंश'शश'देवे'देंद'त्रुन' यदे हिंग्य र देश क्रें के र देश विष्ठ में दे त्य विष्ठ स्थाय हैं र ही क्रें र ग्रिय ₹'अर्र्'हेग्रअ'धर'र्जे्य'न'य'श्च'रेअ'तुअ'त्'सुअ'दनेत'द्रेंअ'अअ'दे' ८८:रेग्रथ:वर्रास्ट्रेंग्रथ:रेस्स्ट्रिं, दर्गें र्वेश्रिं। इ.सर्ट्रायावर यश्चेद्राविः इत्यत्तुं विष्ट्रावादान्द्रा क्षेद्रावादाकुरासूद्रावादा मान्यामान्य प्रमुप्त सुप्त सुप्त से प्रमुप्त में प्रमुप्त में में प्रमुप्त में स्था से सार्थ र या 美山村至了四影子中山美山村大部的美山村上美山村中大影子在了五十 श्चेत्र: होत्र: प्रक्रिंटे अ: ग्री: नश्चेत्र: देय: श्वाय: श्वाय: श्वाय: श्वाय: श्वाय: श्वाय: श्वाय: श्वाय: श्व वर्ते दर्गे अःविद्य दे त्यादे द्वदाह्म अद्याहे वा अः सम्हेवः सः द्वदाद्वा के वाः <u> ५८:ब्रॅंस.स.क्सस्य ज्योगस्य स्थूट च ५ वीस्य । ५ स.ब्रॅंस श्रुट चंदे ब्रॅंट ग्रीः</u> सळ्य. १९८. १८८ च्या विष्टा की स्थान विश्वास्त्र का स्थान विश्वास्त्र का स्थान विश्वास्त्र का स्थान की स्था की स्थान की यःश्चेर्प्यते यसः त्रुत्रःस्टिप्यते सेसायः यात्रस्य प्रति सःस्।

र्वेग्रायदेव्यये श्रुं द्रायते श्रुं द्रायते श्रुं देश्येग्र हिंग्य श्रुं राय अळें व्यव्य श्रुं द्राय प्राय्य विश्व विष

यदेर्यायः हेवा हिवाशः श्ली यदेर्यं वेशः है। रुशः यदेर्यं श्लीयशः श्ली स्वेरः श्ली स्वेरः श्ली स्वेरः श्ली स्वेरः स्वरः स्वेरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वेरः स्वरः स्वर

यो से श्री । ये प्राप्त स्वाप्त स्वाप

लर्राय.क्रमाय.म्। रूप.मी.सूर्यायाया.सूर्यायायायाया.सूरी. सुर्रार्ट्सेन प्रमाध्याप्र प्रमा विषय क्षेत्र प्रमा देन विषय रु सर्विःशुस्र-तृत्विः प्रवेःहेवःषः श्वेत्र-तृश्चुः स्रवेः श्चानश्चेतः द्वेत्रः ग्रुट्यःपदे:धुर्द्याध्यः ह्या व्याद्या व्याद्या व्याद्या व्याद्या व्याद्या व्याद्या व्याद्या व्याद्या व्याद्या नर्जेन्रकुषानन्न्राधेन्यवेष्ठेम् वर्नेन्से नुषाने। क्रेन्यान्य कुन् याद्यां सदि द्वा की दूर या शवा व्या व्या वया सारी सार्या सदी श्री खीश हूँ व न्यार्सेट्राचित्रिं न्त्रिया न्यार्थित्यम् न्यार्या न्यार्या য়ৣ'য়য়য়য়য়য়য়ঢ়য়ঢ়'য়ৄয়৻য়য়য়ৣঢ়'য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়ৣঢ়'য়' वर्दे हे दश्चिम्यान्यया दुः वेयान्य हा कुः धेवायम् वेया स्वायान्य प्राय मदे भ्रिम् यराप देवा वी सन्वा मदे श्रु खुर में न या या से सरा न ने न स्व र् र्रोट न मा हिन सम् प्रयो वामय हुँ त्यमा हे त्य न ते हुँ सदे हुँ वाम यश्रुन्यत्ये मिलेदे सुर्द्रि द्रिया से स्थाप्त से स्थाप्त से स्थाप्त से स्थाप्त से स्थाप्त से स्थाप्त से स्थाप

णानुसानश्चर्यात्र्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्र्रेन्द्रस्थात्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रेन्द्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्यात्रस्

श्रेश्वर्तित्त्रीः द्वित्ति वातुश्वर्श्वर्श्वश्वर्याः विद्यत्वर्शः क्षुद्वर्शः क्षुद्वर्शः क्षुद्वर्शः विद्याद्वर्शः विद्याद्वर्शे विद्याद्वर्शे विद्याद्वर्शः विद्याद्वर्शः विद्याद्वर्शः विद्याद्वर्शः विद्याद्वर्शः विद्याद्वर्शे विद्ययः विद्याद्वर्शे विद्याद्वर्शे विद्याद्वर्शे विद्याद्वर्शे विद्याद्वर्शे विद्याद्वर्शे विद्ययः विद्

 धिव मश्रायम्यायाना सेन् मन्या सुन्या स्था ने स्थान ने प्रायम्या सिव स्था ने स्थान ने प्रायम्यायाना स्था स्था ने स्थान ने स्थान ने स्था ने स्थान ने स्था ने स्थान ने स्था ने स्थान ने स्था ने स्था ने स्थान ने स्थान ने स्था ने स्थान ने स

द्राचे त्याचाश्या स्यान्वे क्ष्या हे विक्ति हे ते के त्याचा स्वान्य स

त्ते त्या द्रिष्ठा हे अ र्डे न पुराय प्राय प्राय के प्रा

धेव मानविव पुंति विश्व स्थाप्य मान्य प्राप्त स्थाप्य स्थाप स्थाप्य स्थाप स्

यहिरान्यस्थान्त्रस्यान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्यान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्यान्त्यान्त्रस्यान्

यः भें स्कृत्यमार्देशस्य अवित्राम्ययः न्यान्य स्वर्षः स्वरं स्वर्षः स्वरं स्वरं

श्चेर्य, शुरु, र्युव, युव, श्वेर्य, युवेर, य वर्षेयायमानेमामराग्री । । न्यामानेषामान् । ने पार्के के रान् भें निमाने न्द्ये न प्रमास्त्र में क्षेत्र में न क्षेत्र नर्झे अर्या सेवाया नवायान ने निरारे प्रहें वावा सुसारे ने ने वास समार कर पीवा विटा हैंगाय है स्वाय य है जुः भुं भुं स्वर्ध से स्या श्रु स्वर्श्य है वस्थाः वर्षः त्राम्याः वर्षः देवायः वर्षः हे दिक्षरः वी दिसः तर्मः स्थाः तरः स्थाः व लेव.राष्ट्राच्चेर.प्रे भिताक्या हेत्र.प्रमार्त्याच्चेत्र.च्चेत्र.त्या ह्राड्रातकर.यी. इयायार्थ्यात् स्थायार्ह्मायात्ता धुवात्वतः स्रीस्यू स्रीस्यू स्रीत्या वयाविनामुः सेस्रयाम् छेन्। पानिन्या वियान् । कुन्छे। सा यथा ग्रयान्यम्बर्ध्यात्रे में ग्राम्य हो। विश्वास्त्रे ग्रया क्षेत्र प्रथा न्वरः र्रे न्दर्धकर्दरन्दर्दिनेयाचा नासुयानस्य दे नायदानासुया है। <u>ख्रःक्षतः मार्श्वसः में मार्था ख्रेते मन्या हिन में लिखा हैया पार्ती । लिखा</u> यः हैंगा संवे हेंगा संदर्ग वया स्रुगा सेंग संवे न सुर्दे न संवे र सेंग संवे यव यग येवा वेश गरा सुरस सम महा होते।

द्याद्यान्यक्षेत्रक्षान्यक्षेत्रक्ष्यात् स्थान्यक्षेत्रक्ष्यात् स्थान्यक्षेत्रक्षेत्

यश्रास्त्र प्रमान्य श्रीत्र प्रमान्त्र त्र प्रमान्य प्रम

ने प्यार ग्रुट से स्था श्रुप्ते त्रास्त्रीय या ने त्रास्त्रीट या नि त्रास्त्री ना देवसमासदम्बर्धः शुःश्चेनः यन् दन्नवः निवेरः हैं हे छेटः नः यसः गश्रम्भःभिरा देःष्ट्रःमुदेःदगद्यान्यः चित्रे से त्यः मुद्रः शेस्रसः दग्रम् से ननश्चित्रें क्षःत्रश्चित्रें निष्यः निष्य वननःसदेः कः दशः मशुराः मशुराः न् द्वे दशः नगदः नः न द्वः महिशः शुः सुमाः केत्रचेना ये यस नासुरस से । यदि ते प्यस ननस ग्री द्वाय नि प्यत् या स्थानह्रम् श्री द्वादानि क्षेत्रं स्थाने। श्री श्री स्थानिक निकानिक स्थाने ना ने त्र अर श्वेदाय अँ ना अर शुर श्वेन प्र त्र श्वेर विद्या ने त्य द्याय न पर स्व ८८.५९.५६४.भें.क्ष्य.५५६। ।तश्च.५५४.ग्री.८योद.५.५४.४४.५६४. ग्री:न्यायः नः केश्यकेवा प्रश्नुरायाधेव त्या स्रश्यान्त्र ग्री:न्यायः नः निवे में ग्राम् पुराधेतात्राञ्चेताञ्चेत्राञ्ची प्राप्तायाधेताया । प्राप्ताया । प्राप्तायाया । प्राप्तायाया । प्राप्ताया । प्राप्तायाया । प्राप्तायाया । प्राप्तायायायायायायायायायायायाय रेसाय्वे द्वान्य वित्तु प्यान्य वित्र वित्य वित्र वित्य वित्र में विद्या वित्र वित्र में वित्र वित्र में वित्र वित न्वायः वरः वर्देवाः प्रवेः भ्रवमः विवाः ग्रदः व्यन् । यस्य व्यवेः

यार बना मी देना था वि हेना त्या सुर हु दे हे स हे साथ से दायर द्वाय न नविः भ्रे न्याया वित्राया स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य वहेंगाग्रम्न्यवाद्यविदेश्विम्यविदेश्विम्यविदेश्विम्यविद्याः ये विश्वास्त्र निवास निव यदे हिम् ने न्वायश्रभ्रवश्यदे म् श्रुवाय न्यय ही विद्राय ह्या ह्या सेससाई हे वे इन निर्मा कें रामुवे सम्मिन प्राप्त कें रामुवे प्रमुवे प् र्देर-तुवे हे सेर श्वेन पान सेंदायान निर्माणन निरम् समुद्र-ळंत्रशः के न्यर वाश्वार भूदि । यश्वार प्राची । भूदः प्राची विदे थे । नेयात्रस्य उत्। जुरायेस्य क्षे ने त्रया वायर वाय्य ग्री वर प्रा व्याश्चे वितर्द्रास्त्राच्यायस्य वर्ष्ट्रान्यवे न्वायावि वितर्द्रायस्य खुग्राय पदिते ग्रावन केव में या हैं ग्राय पर हे प्रन्ता हैन केव में या पर पर गश्रद्यार्थे । ने सूर पर सर ग्री सूर भ्रेया ग्री प्राय मुने न स्थार स्था

 यश्यायदश्यान्त्रात्त्रम् व्याविष्णाची विष्णे विष्ण

खुश्रान्नेव् की श्वान्त्र वि स्थित हो। न्नेव नावि ते खुश्राचे ने स्थान है। ने वि स्थान है। ने

यहिश्यः ही ख्वाश्वादित्र ह्या हिंद्या श्री हिंदि हिंदे हिंद

वसवार्याश्चार्याश्चार्याः हिवार्याः देशायः देशायः दुवाः तृः तुर्याः पदेः देशायः

महिस्रायदे दे विद्या से स्वायत् विद्या प्रत्या के स्वायत् विद्या स्वायत् स्

विश्वाश्वर्यायिःश्वरान्त्र विव्यक्तिः विश्वाश्वर्यायिः स्त्र स्त्र श्वर्यायः स्त्र श्वर्यायः स्त्र श्वर्याः स्त्र स्त्र

न्य व्यास्त्र विष्ण न्य विष्ण न्य क्षेत्र स्त्र स्त्र

वदी त्याप हिंगान से। नन्तर हुं त्यावदी ही तबदा समा कुर ही समा

याल्वरायरा अँगार्झ्याश्चार्म्याय्वीराधेत्रात्रार्म्येत्राहे हे मह्मार्म्याया स्थान्या स्थान्य स्था स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य

र्श्वार्ट्स्याम्यस्थित्रः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्व

द्देश्य स्था नेत्र क्षेत्र स्थान स्

वेशःगशुरशःधशःश्री | देःश्वरःश्वेदःग्वरःसूदःसूदःधवशःस्याशः विगानर्स् स्थान्यास्ट्रान्य्याहे कुर्ते महिम् विस्यापादी क्षेट्राम् से विग्रयापा ८८. हे. यह है र है स. हे स. त. लेंची। श्रे. लेंच स. स. ट्रेस त. हे स. स. हे स. त. हो स. निग्रायाप्त्रें याया कुर वियायाया देवे स्याय पुराक्षेत्र यर सें राद्ये याया नेवेर्नेवर्ग्यार्नेर्यो श्वरहेर्येन् वेवार्श्वेय्यवेर्श्वार्सेवर्वेयात्वेयाय वह्रमा'मात्रस'मासुस'ग्री'रर'मात्रस'त्र'पी'मो'मासुस'ग्री'मात्रस'त्रीर' श्रे भेरायर रे रायदे हे हे यह्म रायहें साय धित है। क्षुण सदे सूर्य रा वनानायायायायात्र्यास्टार्स्यानेवे त्रान्त्र्यूनाव्याय्यायकेता यानविवाद्या इत्यत्त्रस्ययादेवे वदाद्यात्व्यत्त्रम्यात्वेदा गशुस्राग्ची मन्दस्याधी मो मासुस्राज्ञे यायदे द्वसाय न्दर वासी न्दर तु हो दाया श्रेव विद्या केंगा मुन्यमें वर्ष ये थे दिया श्री द्या स्थी द्या श्री द्या स्थी द्या स्थी द्या स्थी द्या स्थी द्या स्थी द्या स्

बेदाया केना हुः अपनित्र वह वा क्षेत्र क्षेत्र

द्वाराष्ट्र वार्षः विश्वर्षः विश्वरं विश्वर्षः विश्वरं वि

र्वेगायम् स्पर्वे सुराया हो प्राप्त ने त्या तुर्या महे प्राप्त सर्वे स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं वया प्रवासि सुराया हो प्राप्त स्वयं स

श्रुं समान्यतः श्रुं से सह माने वा निर्माणका निर्माणका

सळ्स्रअःशुःदर्वे सेट्-दुःदहेदःसःद्रः। रूटःद्रः धे क्रुत्रः सुद्धः हेदेःसरःश्वः महिरादश्वद्गास्त्र सळ्स्रयःशुः विषायो यः द्रिषायः द्रश्वायः स्वाद्धेसः याद्वेसः प्रेतः र्दे।

देग्ध्र-पञ्चित्रायदेग्वित्रायाधिन्दी श्रेंवाङ्ग्याध्यावित्राध्या श्रेन्वान्तुन्ध्र्नायाद्व्यान्ध्रियाधित्र्वात्रायदेवान्त्र्व्यान्ध्रियाध्यावित्र्याः श्रेन्वान्तुन्वस्याद्वात्र्यायादेव्यात्रावित्याः ह्वान्यादेव्याः स्रिन्वान्तुन्वस्यादेश्यादेश्यादेव्यायादेव्याः स्रिन्वान्तुन्वस्यादेश्यादेश्यादेश्यादेव्यायादेव्याः स्रिन्वान्तुन्यस्यादेश्याद

त्ते स्वावाश्वर्य । श्रुं स्वावाश्वर्य । विकायश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वाव्य स्वावाश्वर्य स्वावश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावश्वर्य स्वावश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावश्वर्य स्वावाश्वर्य स्वावश्वर्य स्वावश्वय स्वावश्वर्य स्वावश्वय स्वावश्य

गुर्यायायार्वित्राचे। सुराक्षेरायादे हु द्वेराविसायाया श्वेरायादे स्याप्ता

कूँ न्यान्य विवाद्य स्वर्ण क्षेत्र प्राप्त स्वर्ण क्षेत्र प्रित्य स्वर्ण क्षेत्र प्राप्त स्वर्ण क्षेत्र स्

त्व्हर्भः उत्रः न्वादः र्र्वेदिः सः स्थाः स्थाः

र् स्वाराचेवा नर्से सारादे सेवा हिला वर्षे प्रवीरा वी सारावार विवा । देवे सूनरा शुःसुश्रान्त्रोत्रात्रश्रान्यान्त्रोत्राचीः नेसासम्यस्यानाधीत्रास्ये सुम् न्दार्थेः गुनःश्रे येतःगशुस्राधम् देवःकेवः नह्वः धमः गुमःवसः श्री । नहवः धमः अःशुरःर्षेद्रशःश्चेश्चा विशःरादेःग्व्रिरःग्रीःसवरः व्याःगेःर्देवःयन्दःसदेः भ्रम्य भी भ्रें व माया यय ने प्रमान स्थान सबर विया रि.च निर्मात त्योतारा चित्र विषया मान्य विषय मिन्स न्रत्रुयायदेयात्रुपाञ्चेदायाद्वेरान्त्रुयात्रुयात्र्यात्रुप्त्र्यात्र्यात्रुप्त्र्या वर्याने भूमायलन नि वियाग्य रूपाय सम्भावित्री विरुपाय सुन स्यान्नेव मी भूनया सु भ्रेट पार पावट र र पश्च व र पाय या मुट प्रति भ्रेट पा नविवे प्ये भी रासे दाये ही मा क्षेत्र प्रस्का के वा वी

नशुस्राचि वर्गोक्ते दें राज्ञ स्वाप्त स्वाप्त

ग्रयानम् अप्तर्भागम् । विद्यानम् अप्तर्भागम् ।

वर्दे त्यः अविश्वः यात्रः हेवा । श्रेश्वश्वः नेत्रः न्त्रे श्वः व्याश्वः श्रेट्रः या यायमाक्तु नहेत्र न्वे मायादी देयायायमा क्षु यान्वादी वसमाउन यय। विद्रसेट्र्यूर्याष्ट्रप्रयाय। विस्वेयाम्युयाग्रीर्वेर् दी विश्वानम्यत्रे वश्वासर्द्धत्यम्य वश्वाम् विश्वान्य स्वापित्रा राधिताते। अप्रशास्त्राना हेते पाश्रम् सेता सेता हैं या स्था स्था सेता हैं या गुरु साम हिन्यम् न्द्रेम्य ह्रा अपने विद्या के विद्या हिन्य के विद्या है वि यश । श्रुः सः न्या दे : बस्र १ उत्या । विश्वा संस्था या स्या नर दरे : यशः सक्रम्यम् त्रा विभागस्य सम्य स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा स्मा म्या विराद्या प्राद्येव र्षेषा सर यश्चिस स्वरा स्वरायि सास द्वा स्वरा यासासुराधरायार्मियानराम्ची द्वेटायानिवाटान्यरावस्य उट्दे प्रमा न्वेव धेव वा भ्रेट प्रवि स्व अन्त प्रवास अस्य स्व वा स्व वि स र्न्निन्द्रिक्रम्भी विषया विषया विषया स्वरं धेरा विशयरें र दें।

तर्ने त्यायात्र स्वापित्त स्वाप्त स्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

यतः क्रिं-त्वाशिष्टश्वाश्चर्यात्र स्त्र स

त्दीःयात्वः विवादः दी मान्यः विदाः विद्यात्वः विदाः विद्याः विद्य

हैं ग्रथान्य स्थ्री ना स्वा क्षा क्षा त्या देश सम्बद्ध स्था स्था प्र क्षेत्र स्था स्थ्री स्थ

यदायारीयात्राचे। यशाक्तात्रभेताद्यीयायवे सळस्य संस्थानितः र्वेन पान का धोन ने साम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्र गिरेशः श्रें अः मिरेश्रें तः तुः न्वरः ग्राश्वायः मिर्देशः न्वरः तुः वश्चरः वः पेतिः सः यार.बुर्य याश्वर.य.योय.य.जशा जश्न.र्ट.स्.तश.स्रेप्त.स्या. श्रूर्यात् वित्राम् वित्राम् यादान्यवितः भ्रूतः भ्रुता सर्वेदि । द्वीतः सर ग्रस्य रादे भ्रेर्द्र या विता स्रे दिर में दे से दार का धेव की देया ग्रस् श्रेवाया गहिरायायायम्भेरात्रेयाची भ्राम्या श्रुम्य म्हिरायह रायाया यशः मुः नक्षेत्रः नर्वे अः सरः न १८ राधेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः स्वेतः नश्चेर्रिस्य में जिस्ति स्त्रीत्य स्त्रीत्य स्त्री क्षेत्र स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स् न्नो इ श्वेन हिन्यम उन्नु प्रह्म न न्या हैन र में स्थानी खुराया गवर्र्, नश्रुव्रस्ते व्यवश्रम्स्य राज्ञेस्य राज्ञेस्य राज्ञु रावर् । वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे । र्शेग्राशः ग्रीः नुर्गे श्रामः सम् सिं प्यानः ग्रामः । ध्रायः हेतः ग्रीः सळतः हेनः ळमः नाः वितः हुन्गेविःसरःगशुर्थःभेर। द्धयःनविवःसःग्रुश्वःदःदवः दर्गेरःसूरःनवेः हेशन्द्रीम् राक्षेत्रस्म स्था धे कुर्यस्म स्था स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य यश्चर्यं विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य

विस्तायिः ह्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः ह्यास्यः स्वास्यः स्वतः स्वास्यः स्यास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वास्यः स्वत

रट्टा विव की हैं ना पासु ट्रिंट क्षेत्र का स्व पास के स्व की स्व

नः क्रुटः प्रदश्याया अकेष्टः याया विसाया करो विष्या के विष्या क्रिया या सूर नुदे श्रूर न न्दा अके न पा क्रुर न्दर न उर्थ पा हेर हैं न वा है साम न ने वा भ्रुमात्व्रुमार्से अ। व्रिमासाक्षात्रेते स्थूरामान्या हेरार्चेन सुरान्दानहरूपा दिन्याययायाचेयायात्रास्त्रिन्छोन्छोन्यास्यान्याययात्रेयस्यायात्रेर रटासर्वाक्षातुरिसूटावळरावरावस्यासुटसार्सि । साकुःयावेसामार्सिवासा यासार्वेनामान्द्राकुर्वेनामास्यासार्वेनसार्वे प्राप्तानामा वे र्राया शुर्या शुर्या विस्था शुर्या हुस ने सारी हेता हो त्राय देया वयाव्यापादे कुषापर्ययापाष्ट्राचुषाया कुष्याचे यावे याव्यादे या है। ये ह्मूराया बेसामदे नरार्परारे निविदार्ते । ह्मुराबेसावेसाम के रूरानिवाधीः हैंगायादरिकाशुरगर्धीयराह्येदायवे हुटाग्रीकाह्मसानेकाशी प्रविदायराह्येदा यदे त्राय विवाद्या देव त्राय सूर वदे हुर वादर्शिय या सूर् निवर्ष्ट्रम्यायाष्ट्रियायाष्ट्रम्यानिवर्ष्याः मित्राय्यायायाया प्रायायाया विवर्ष यार्यमायद्य । क्रूटायायवे क्रांसाद्यी सम्बन्धाययदादेश क्रियायमा ह्याँ ।

ग्रम् कुन मदे में अपने मन्तर म

स्वार्थां विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्र विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्त्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्त्य विद्यान्त विद्यान्त्य विद्यान्त्य व

वरी वर्षाप हिंगा तरो अंअअ प्रतित श्री श्रूर अके द र्शेन पाशु अपार रुरःधेवःवःदेःसळवःकेरःयःधेवःयशः हियःयरः वया देःद्याःसळवःकेरःयः वे·शेसशर्नवेद'द्रशन₹सशरे'प्युट्र'वर'गश्रुद्रश'र्वदे'मुर्द्रस'ह्या क्षे अंसमाद्रेवत्रमात्रसम्भाने सळ्वत्तेत्रमात्र वृद्दान्य म्यूर्या गुद्र सेसस-निव्जी धे भेस ग्रुस ग्राम् सुराया ने न्या सक्व हेन संधित न्याधियःत्रमः यायिष्ट्यः सदः द्विमः हे। व्याः क्षेतः स्त्रीमः यया व्यान व्यान <u> भ्रेरःश्रेःक्वांपदेःह्वायःद्युदःवरःस्व</u>ित्रंक्वायःक्वतःवयःवाशुद्यःग्रहः। वेगाळेत क्कें रायसामधीत ता दीरासे केंगा मदे हगा सर्वे नामसासाह्या यानिवरणिवरपिरेष्ट्रीम् वर्देन्सी त्र्यान्। वयानुयासुरस्यकेन्रेचर गशुस्रासळ्दाकेट्रायायहुटाचायायसाह्यूटावस्रास्टरास्ट्रीटागदेसे जेवासा मायायके रेसाहे स्वानानिक र्वे सामानिक रामि सामि से सामा न्वेत्रॱर्वेन ग्रम्। ह्या होन् ग्री ह्यूम् वस्य उत् श्रीमा वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य इत्यास्य स्वास्य र्षेर्प्यते श्रेम्।

श्रुम्प्रस्थात्र्व्यः से न्यान्यस्य स्थात्र स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्र स्थात्य स्थात्र स्थात्य स्थात्य स

ययानुसासु ते स्वेदावि द्वु ते महुदान हुन त्र से स्वयासाया सळत हिन् स्वया छदा त्र स्वया स्

चल। ले.ले.श.चीश्वराचीशान्ते नान्तर्हेतायाः श्रुद्धाः व्याप्तराक्षेत्राचार्षः व्याप्तराक्षेत्राचित्रः व्याप्तराक्षेत्रः व्यापत्तराक्षेत्रः वित्रः वित्रपत्तराक्षेत्रः वित्रपत्तराक्षेत्रः वित्रपत्तरः वित्रपत्तः वित्रपत्तरः वित्रपत्तरः वित्रपत्तः वित्रपत्त

पि.क्रेम अभ्यम्भरनेव.मी.क्रॅट.स.चवि.स्.मीट.स्ट.रं.मीट.संदु.लम् ननशन्दरस्य नहत्र श्रीन्यायन निवेश्येत स्वर्भ वया विवर्धेत ग्रथानदेष्ठेषायय। येययन्तेष्ठभूनयादिनः हुन्द्रान्द्रान्येययः स्यामी सूर् सूर् स्यानस्यापदे स्यायाय स्यूर मी प्राय प्राय स्यूर वार्या मी दि से मार्थे स्वाया राष्ट्रिया मी द्याय प्रविश्वी से स्वार में वार्य हे पहेंचा व जुर से समासे राजा व का जो का प्रवे रेसा प्रकार हेंचा दर्जी का सा गर विग ने भूर व कुर गर्थे नर विग्न र विश्व ग्री विश्व ग्री र र र र धिर बेर दर्द प्रदार प्रता है। या या क्षेत्र प्रया क्ष्र प्रता चुर प्रता चुर प्रया से र गर-नर्भाग-तर्रेन्त्र-देश-देश-त्राक्ष्य स्ट्रेन्द्र-त्रम् व्याप्त्र-व्याप्त <u> ५८:अअं'नह्र्वःग्रे:५गवःनःह्र्यशः५८। श्वेदःग्रमःवर्:न:५८:श्रेमःवःग्रेशः</u> यदे देश रायाय अ र्स्ट्रेट या छिट्र यर उत्र हम्य या यदेत्र या पृष्ठे या पाट छेट्र ग्राट व्यार्शे वियादमा हैग्या देया देया न्या स्थाप स्थाप स्थाप स्थापी । बूट अळे द रें व ना शुक्ष रें द ना शवा ही जो भे श शु की रह र जा र । शुना श र्थेगामी द्वादायाववरगश्याञ्चर भ्रेयाश्वरहिंगाया विवाय वदाया दे निवन्तुः श्वाकाः सञ्चन्त्रीः श्वरः सकेतः विवादः न्यः विवादः विवादः

वेशन्त्रश्रद्धार्यस्य व्यवस्य विद्यस्य स्वर्यस्य हिते यश्रिरःदत्रुयःग्रीःग्रथःशुःनव्यायःमदेःयदःरयाःधेयाःकुरःययःह्मरःयः यद्यायराध्यायवयाग्री:द्यायःचविदेःसह्याःहःसयःवह्र्यःद्रा প্রথ্য नह्रवाधी:न्यायःनविदेःसह्याःषुःधशाननशःशी:न्यायःनविःनक्तुन्सरः वर्त्वरायाधेर्परायाश्वरमानेरा समायह्रवायमासायरमायदेणमा नन्याः शुःन्यादः यावि दे स्थायस्य स्यायस्य स्वरं त्यसः निरं निरं निवि याः ब्रुवः भ्रे अः शुः वर्हे वाः द्वे अः यः दृदः। अअः वह्रवः वयः वद्यः यदेः हे अःशुः भ्रेअप्रिते प्रसामित्र विकास के स्वाप्त के सिर्म स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप खूत क्रे अ धीत परि देश पा को दाय राजा शुर्या या अया नहता ही खूत क्रे या ग्री-रुअ-शु-नर्ने-क्रूट-श्रुट-क्रुट-नेन्नेस्स्य क्रिन्य-ग्रीम ह्रूट-क्र्स्सासायद्य-प्रदे म्रेट-५-स्र-अन्स्रायदे हिन हे ५ है स्ट-रग्राय प्राय देवा प्रक्र दशःव्याशःयादशःवैद्यायाशुद्धाः चेद्राः ५८। ५०० वर्षः ५८ स्वरः ५६० ग्री:न्याय:चिव:वर्डेव:य:थॅन:यर:याश्चर्य:यदे:धेरा वर्दे:न्या:वे:वेव:हः हैंग्रथं धरः दगवः विदेशांद्रथं धेदः धरः हे विद्याः हेदः छेदः ये या गुर्यः वर्गाम्यार्से स्वास्यया ग्रीया विना तुर्म श्रूरायर ग्रीते।

गहिरायायामहिरा नदेवामहिरार्शे स्थानिर हैं ग्राया देया नदेव यहिरार्चेरासेरामें हियारारेसासे । प्रायंतिरा यहिरा गुर्हेन हुंसिर हैंग्रभःरेसन्दा देवन्यर्देन्य्यया की हैंग्रभःरेस से । न्दारे दी शेशशन्तेत्रः सबरः बुगाःगीः न्रोदेः देन् ग्रायाः यशः कुनः बुनः बनः गर्धेशः हे खुग्रशर्थेग् ने हेर र्वेन गुन पर्ट्य राज्यहरा सेसरा द्वेन सवर त्रुगानी प्रमेवे वेद्रानामया ग्रीमाञ्चन के गान्ने प्रमुक प्रमाने वेदाने शूर-पदेःगशुग-क्रूट-पीश-हेर-येद-ग्रुश-दश्यःसस्द-द्रिश-शूश-पदेःख्रेदेः अन्दिराम्बर्यायाम्याम्बर्यान्यस्य स्त्राम्बर्याम् द्वाम्बर्याम् स्त्राम्बर्याम् त्यामा हेवा निर्मे या निर्मे यस स्वाया स र्शेर-वर्गेर-पर्ना वशक्तिमीशासुशास्य माश्रामिशासिर-वर्गेर यःगहेशायशा शेसशाद्वेदार्घदायदायाः श्रुद्धायाश्रुसायादादुदाः यानुयापानेयापयार्देवानीयापके नदे न्याने सुन सून सेयान सून्याया वयः ईरः वञ्चयः प्राय्यया प्रवः प्रवेशः ग्रीः सूरः रेयः वर्षे स्रयः हे व्यक्षेः नःदेंन्याययः सेस्यान्नेन्यवरः बुवानी न्रेते देन्याययः श्रीः रेने नश्चेत्रकरा नर्देवे सुराये द्वाराये देत्र या देश माना सुराय देश हु। सुरा न्ता श्रुःश्रेन्ये न्यदेः में न्या श्रुया यदेः सुर्या न तुरः श्रेष्ठे हेन ने त्यः मैसाराः ञ्चना'स'त्रसम्भानक्षेत्रम्भावस्य पर्वेत्रम्भानक्षेत्रम

खुरु। झारवारा विरुष्ठा र्रे रे रें र विते द्राया थारा वर्षे न दरा में र वहुवा वी इयादर्रिन ग्रीयादर्गेन प्राप्त उदार्य वाया सुन क्षेत्र में व न् क्षुन्य षरषर होत्र संषेत्र या दे त्या ते श्चित्र संभित्र स्वाप्त से समादित हो । हैट'टे'व्हें त'व्यं में अअ'यर गुअ'यथ'कें व्हेर खुअ'मिहेश'र्से सें र व्हेट' मन्द्रा हो नदे सुराने ह्यु स्तुरा हें हे तकद्वी सुरादें राजावरा मरास्ट्र न'ने'भेन'ह'नश्चन'नगाद'नश'र्थेन'र्'र्थेन'र'श्चेंन'रा'ग्रंथा'ग्नर'र्र्दर'रेश'यर'र्ज् न्वीयायरावाश्रुंद्यार्थे। विषयाउदाह्मययायारावाद्याः भूवया मदे सुरा से सरा न्दा सामा कुमा सदे सुरा से सरा महिरा महिरा पिरामा यथा है: श्रेन्-न्-रग्रथः प्रश्यापि विश्वायः श्रेग्रथः श्रेन्यः श्रेन्यः है-श्चेन्द्रगाकुवा सदे खुरु ने नविव लवा वी इस सम् से खूट ला कुट मवारा मः अः सुरुष्यः संद्वेदः यादेः से वार्यः याः यः वेर्यः यदेः हें वर्यः ग्रीरुष्यः स्वारुषः यगामी इसाधर यह राष्ट्रे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे के वर्षे वरत इस्रश्राण्ची क्रुन् व्यापीन ग्री इस्रान्ने साझान्या सामित्रा के साचित्रा करापीन ग्रान सर्ने निरायनीयान निराम् निरामित्र स्थानियानी स्थित स्थ सेससारम्यारास्यान्द्रीम्यान्द्रसायहेन्द्रायदेन्तुःनानेन्याने सेन्त्रस्यसा स्याय अप्याय म्याये प्रदेश या ये यय स्याय स् कें सेससर्गम्यास्यायायास्य स्थाने द्वीर देव रहे । दिन हे स्थानिस

च्यानः हेते या श्रुमः वेत्रः वेत्रः या श्रम्यः या श्रम्यः वेत्रः या वित्रः वेत्रः या वित्रः वेत्रः या वित्रः व

विक्रवि । विक्रवित्राविक्ष्यान्तिः स्वर्णस्यते स्वर्णस्यते स्वर्णस्य विक्रवित्राचित्रः विक्रवित्रः स्वर्णस्य स्वर्यस्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वर्णस्य स्वर्यस्य स्वर्य

त्रभावन्य द्वित्य क्ष्यावर् न्य स्वत्य स्वत्य क्ष्य स्वत्य स्वत्

गःलूर्री क्षेत्रभः क्ष्याः अस्तयीयः सपुः री अः श्रीः बरः क्रिः क्षिरः याष्ट्रिशः भःलूर्रे । क्षेत्रः वर्षे स्ताः री श्राः श्रीयः सप्तयीयः सपुः री श्रीः स्ताः स्वारः स्त्रीः स्ताः स्वारः स्वार

 स्तिः सुर्थाः भीत्रः भीत्रः भीत्रः सुर्थाः सुर्थाः सुर्थाः सुर्थाः सुर्थाः सुर्थाः सुर्थाः सुर्थाः सुर्थाः सुर् स्तिः सुर्थाः सुर्थाः

वयः द्र्याविवाः द्रश्चात्र विश्वात्र विश्वात्य विश्वात्य विश्वात्य विश्वात्र विश्वात्र विश्वात्य विश्वात्

 स्वार्ति स्वार्ति । स्वार्ति स्वार्ति

र्द्रन्त्रीःद्रन्त्रम्थलःश्चीः नदेः क्षेत्रः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चीः स्वान्त्रः श्चिः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः स्वान्त्रः श्चिः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्त

भेभभद्मेत्रभव्यः व्रवामी द्येते र्द्रण्या स्वाभयः द्वि क्री र्द्रण्या स्वाभयः व्यक्षिणः व्यव्यः व्यव्

शुः यदे शुः ने प्ये भे या हैं हो गुव प्यया न हुय प्यया शुः या न ए छु हा यः श्रेंग्राश्रामदेः न्रो मञ्जानिशाग्रीशासर्वेद सम्माश्रम् । ने या हुन श्रेयशरंश्वायशर्हे हे पळटा वी सूरावसूट पात प्यवाप्त प्यवाप्त र क्रायार क्रुट के अवार्य वाया के दारा क्षु अदे के सुर्त्व वितर् रात्रे कु हु भु तुर्दे । १९ रु अ थ र्से ग्राया रात्र र त्राया राया र त्राया र से ग्राया र त्राया र त्र मिनः सदे खुरा क्षेत्र वृद्। अन् किन के वा वी राजा वे वर्ष किन विकार र्येययार्य्यात्ययात्र्यात्रात्रात्रात्रात्येयः स्वित्रात्रात्रीः स्वित्यात्रात्य्यात्रात्यया ब्र-१ से नदे से प्या ही खुरा क्षेत्र हैं नुदें। विस्य क्षेत्र ही खुरा न्य हिना हुमिर्मिश्यास्याल्य रुष्ट्राम्य विष्ठ म्यान्य विष्य विष्ठ म्यान्य विष्ठ म्यान्य विष्य विष् मदेन्त्रीयाविरान्ते दे बदे में राष्ट्रिया विषया धेवा धेवा स्वर् बूट न ते से वा तसुवा कृत्रिं । शूरे वा क्या मा कृते वा का सा से न से वा का सा से न से वा का सा से न से वा का स यायहेयामरासूरामाने यहता हैन सुर्वे । इसा स्नेन सी स्था से रामी सुरा से दे वरावागवर्गाय वर्षे श्रेवाणे गर्भे नावाजी गर्या निष्ठा । श्रें रापदे रहा वशर्षेयाग्रीयानवेदयापाने विवाहाद्रस्यापये कुःयया कुःत्र हैया पान्ना यक्षणः भूति । प्रवास्त्र विष्ट्र प्राप्त विष्ट्र विष्ट्र प्राप्त विष्ट्र विष्ट्र प्राप्त विष्ट्र विष्

इया श्रेव ग्री शुर्व दे राजवे श्रु स्वरे श्रु सर्वे द्वा सर्वे द्वा प्राप्त प्राप्त हैं। परि:भूगर्भाग्यासु स्यास्त्रीत् मी खुर्भागी में मार्था खुर्भागिया है सामित र्देव पीव वया श्रुयार्थे। । प्रमे पा दुः पा देश ग्री व्यवस्था से प्यया ग्री प्रमे वि यर्केग् मुगुर्य प्राप्तेव मे प्राप्तिव प्राप्ति में विश्व के स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप शुः सुर्यायादेयाया शुेन्द्रायि में नार्वयाया में मियाया निर्मे हिन् ग्री सेन वश्यक्षेत्र हो ८ द्रोते श्रु खुश्यायय हो दि र्वे र त्र श्रु ८ हु से ८ त्या हो त्या यादे । विद्यान के विश्व के विश यदे सुरा भी क्षे र दिरा यह वा वा शुरा यह व रा भू नु दि रो वा वन या से द मदे धिराहे। श्रुष्या ग्री श्रृंव र प्यों नदे श्रृंद र पान्य अया वे निहेद ग्री श्रृंद नाम्बार्यास्त्रीयास्त्रियास्त्रा श्रुप्तयान्ते स्राप्यसानी स्वरास्त्रास्त्र ८८। श्रु. ध्रमः प्रमाश्रुवायदे ख्रमः न तुरः न ते ख्रमः रम् मः प्रमा तुरः नु मुं नदे हैं प्रयामुं सुयासूर प्यार सुयार म्यायाय हुना प्रयास हैं त्रापे धैर:र्रे॥

श्चु खुअ-८८-५व्रेल-वर्ष-वर्षे-वर्षे-तर्भूर-८गुदे-ग्नियअ-धर्वे-ग्नियल-र्भूव-

यशक्रान्त्र अभिता श्रुष्ट्र अधिशा भित्र विश्व वि बॅबायाड्याचीयाम्यारामभ्रेत्रित्रासम्बद्धत्रायान्द्रायदे यद्वार्यद वर्त्वूट्यर धे भे अ हैं हे गुद्र यश्च तृष्य रायश वाश्चर्य है। कुट दे हिट ग्रीः तेृगाः यथा वेगाः पायदेवेः यया ग्वितः क्षंदः यः से दर्गे यः ग्रीः सुं शुरु यदेः नः केत्रः रेविः हेरारे वहेत् वनवा वेषा श्रेषा हेषा देषा है। यहेत् नु नु स्राप्त य.रेगू थ.ग्री.ज्येयाय.तर्भ्याययाच्या.तर्भ्या.तर्भ्या.य्या. <u> ५८.स्.सदेःश्वानभ्रेट्र</u>स्थायवराष्ट्रेयायायाययाययार्थः वर्षेन प्रमानक्ष्म हो देन सा वन वेना प्रावि । वस से विनाप से प्रमा वर्दर-देवाश-देश-पदिःशायाधर-ह्यून-पतिवः पर-विवः दे । पत्र-धिवः वदिः र् न्यूर्याये वर्षाया याप्रयाप्रया याप्रया प्रदेश वर्षे वर्षे या वर्षा सेन्-पंते-न्न्-सु-वन्-र्केन्-पंते-कृ-नते-धुन-र्केन्-स्न-न्ते-स्न-न्ते-स्न-न्ते-स्न-न्ते-स्न-न्ते-स्न-न्ते-स्न-श्रुनः प्रदे मिवे मिश्रुमा स्रदे सुर्या सुर से स्राय स्राप्त स्राप्त स्रिय स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्र रा नहत्र में हिंदा त्रा केंद्र पा हमा में हिंदा में स्था मे स्था में स्था म वश्वानायते स्वायापा प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप् यानहर्ने से यान के द्वारा नियान महत्र में नियान के निया के निय ने श्रु सुराया गुन गुन पदिये गान्यय नग श्रे व के या वे गान हे न व न है

दशः भ्रीत्वत्र भ्रीत्र श्री विक्रण्य त्याद श्रुवः विक्रण्य विक्रण्य त्याद श्री विक्रण्य त्याद श्री विक्रण्य विक्रण विक्रण्य विक्रण विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य विक्रण्य

महिश्रासंत्री हॅन कुंदिन्याश्रयसंत्र प्रक्षुर्मिश्र स्वर्थ हेन विद्याले स्वर्थ हेन किं स्वर्थ हैन हैन किं स्वर्थ हैन किं स्वर्थ हैन किं स्वर्थ हैन किं स्वर्थ हैन हैन किं स्वर्थ हैन हैन स्वर्थ हैन स्वर्थ हैन हैन स्वर्थ हैन हैन स्वर्थ हैन स्वर्य हैन स्वर्थ हैन स्वर्य हैन स्वर्थ हैन स्वर्थ हैन स्वर्थ हैन स्वर्थ हैन स्वर्थ हैन स्वर्थ

रेस्रायानियदेर्न्त्योर्द्र्याम्ययाने। सेते ह्निक्रिक्ष्याः स्त्रास्त्रेत्र्याः स्त्रास्त्रेत्र्याः स्त्रास्त्र

अर्देन् ज्ञहान्द्रा वहानी श्रूह्मा अके दार्श्व न ज्ञान के स्वार्थ के स्वर्थ के स्वार्थ के स्वार्य के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ

दिन्याययायाञ्चरान्हिन्देवायाग्रीः क्षेत्रयन्त्रीः वा ध्यादिन्यायया ५८१ ध्रयः उतः देन्या अयः यहि अः धेन ५८: से ५८: हेन हेन में वा प्रियः इवः देनः वार्ययः यः यदः। येनः वेरः स्वारः स्वारः स्वारः हिनः हेनः हेवारः स क्षु-तु-सर-ध्रेत-वेग-स-८-क्रुट-क्षे-देग-स-ग्रुस-८- बुत-सॅट-नदे-क्षे-देत-ग्री:दिन्याययः न्ता लु: नने यः क्षेत्र हेन हिंगायः यः क्षेत्र नक्षेत्र ने यः न्तर बुदः ब्रॅट्-चते श्रुं देव श्रुं केंद्र ग्रायय धेव या ब्रॅट् केंद्र हेंग्य प्रवेश अयय देव र ग्रें द्राये दिन्यायय वे स्रय देव ग्रें दिन्यायय पीव हे। सूर प्रसेस्य ग्रें श्रुरामाधितामानानिया न्येदे दिन्यारायाधितामदे श्रिम सुरान्येतान्त न्यान्नेवन्द्रश्चुः शुक्षाश्चीः देशायर न्यूकायदे न्येदे वेदे वेदि व्यावस्यका ग्रम्भरादेवामी द्रियामायाधिवाते। अर्थादेवामासुसाद्रामासुम्यासादीः वार्डें ने त्यान्वीर्या के हिरावह्मयान्य सुरान्ते व स्थान ने वे विषय ॶॱॸॺ॒ॱॸॸॱऒॱऄॺॱ**ॸॕॱॾ॓ॱग़ॖ**ढ़ॱय़ॺॱॸॸॖॺॱॸढ़ॱॸॗ॓ॱॻॸॱॻऻॶॸॺॱॸढ़ॱॺॖऀॸऻ र्देव ग्री दिन ग्रायय वे अवस बुग यये देव ग्री दिन ग्रायय पीव है। अवस व्यापिते देव दे त्या श्री नर्वे द्या सवर व्यापित या से हो द्री खूद क्रे राशी यने निर्मा के स्ति हो निर्मा का स्वास्ति हो निर्मा के स्वास्ति हो स्वासि हो हो स्वासि हो स्वासि हो स्वासि हो स्वासि हो स्वासि हो स्वासि हो हो स्वासि हो स्व

देशस्यदे स्थान्य विद्या श्री स्थान्य स्थान्य

ने त्र शर्चे स्त्र स्तर हो ।

विश्व शर्चे स्तर स्तर हो ।

विश्व शर्चे स्तर स्तर हो ने त्र त्र मान्य स्तर हो स

त्र्व ग्राट माबुद त्र ने दिन में त्र मान क्षेत्र मान हिन स्थान स्थान हिन स्थान स्थान हिन स्थान स्थान स्थान हिन स्थान स्

र्शेवाश्राशीःवान्स्रश्रान्यां स्थेव स्थेव स्थिव स्थित स्थिव स्थिव स्थिव स्थिव स्थिव स्थिव स्थिव स्थिव स्थिव स्थित स्थिव स्थिव स्थिव स्थिव स्थित नुशर्री दिन प्राथय ने यथ ख्वाश र्षेत्र कुर न न ने व कि कि साम दे हुर श्रेश्रश्चात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्र उदानुः थूरा नाथे दार्वे । विशानन रात्रा शे विनाम या दे ने दा शे विना यश्यान्दरने यश्चा बुदायह्या यो सुराध्दायराव १५ दे । वन देव यश्या नवे के साधार वरे निरास मुदाराम सुराया वरे निया के यासय मुदायसा न्नरःगशुस्रायानभूरःनरादेःनदिःयानभूरःनरःषरःसर्वेदःयसःन्नरःदेः ने निर्देशक्ष । निर्दान्ति श्रुयाया निर्देशका ८८। देवशहेर्षेर्वित्रदिन्यासयानु विवासाने यहिसासूर सार्से परान्या वर्शन्ति श्री भ्रव भ्री भार्यादेव न् प्रयोग् है। विश्वा माश्रुद्य प्राप्त पारे व प्रया बूरर्दे। ।नन्तर्कुषाधिः अप्तरात्रा ननरानाशुस्रायानभूरानवे र्सूत्रन्ति ग्रथ्यः श्रीःग्रन्थ्यः द्याः चित्रे वाः यः द्राः । द्रयः चित्रे वाः वे द्रयः वाश्यः वर्देन्द्रमें अया ने क्षेत्र अर्देन् यम् ज्ञा क्या व्या येव की देश मं वे द्वर ग्रुं अप मं न अप मं न वे अह्या केंग्र केंद्र द्वर प्रमा निलं मान्सूरानि भेता विष्या भेता निष्या भिष्या भेता निष्या भिष्या भेता निष्या भेता भेता निष्या भिष्या भिष्या भिष्या भिष्या भिष र्रेया हु कु यश हु खूट निर्दे कु या हु । बुट यह वा नी श्लूट निर्शास दे रहेया नन्द्राचे क्रें न लेंद्र दे । विश्वाम्य द्राप्त प्राप्त प्रमान्य विश्वास्य

र्हेर्यान हुत्यानन्याः भुन्तुयानि र्हेन् यार्वेन् न्यायान्ये यात्रयास्य सुन्देन्।

परिश्वान्ते। देविश्वीर्दिन्याश्वयः अर्देव्दि। देविश्वीर्दिन्याश्वयः विद्वश्वीर्दिन्याश्वयः विद्वश्वीर्दिन्यः विद्वश्वीर्वेष्टिन्यः विद्वश्वीर्दिन्यः विद्वश्वीर्यः विद्वश्वीर्दिन्यः विद्वश्वीर्वेष्वेष्वेष्वेष्यः विद्वश्वीर्यः विद्वश्वयः विद्वश्

गहिरायाची रेसायानवे प्रदेर्त्व ग्री दिन्यारायाने यस हुत हुत बद्गार्थे अप्याद्दार् अय्यक्षात् रेदि ग्राययादेवे वर्षे द्यार शुरायवे हुता गैराहेरायेवाद्या देंदाग्रयाग्री सेस्राग्रीशास्त्र हेगा ग्रेटा में वाग्रया रायानहेत्रत्रभान्नायदे श्रुः अदे श्लुर्नावेत्रभानत्रभान श्रुत्रस् सबदुर्न्न की.दूर्यामका.की.चर.की.ह्यामार्नमानी श्रूयामदे बरायहिया. ग्रायनिव गृष्ठेय न हो र से न हो हैं ग्राय र स हो है र में वि । रेस पान ने परे देवानी देंद्र प्रायय प्रयाय स्वाय स्वापी के मार्चे वा तुराय का प्रायय क्षु यद्रः भ्राच्चित्राया श्वर्याया बुद्रायह्वा व्याया हेत् श्वेताश्वर्याया यात्राहे या धरादर्वशामा क्षेत्रायमार्वेनामानुसामक्रमास्री दर्नात्रेन्स्यासान्त्रासेन्त्रीः यस-तु-देग्रास्ट्रेश्यदे द्वर-तु-तुस-ग्री यस-ग्रीव्यन् ग्री-सवर-तुर-वदे देवानी दिन नामया सँगाम दे । या ब्रायदे । यो जो या खु । यदे न । तो सम्बन्धा । यो सम्बन्धा । यो सम्बन्धा । यो स ने या क्षेत्र प्रदे बुद पहुना या क्षेत्र यस सामग्री दे प्रते प्रते प्रते प्रते स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त ख़्त्र क्रे अ ग्री केंत्र केंद्र अ इस्र अ देस पा निवे प्रते केंद्र ग्रम या भी अ क्रेंद्र या

स्त्रान्ते बुर पहुन में न स्त्र में न स्ते पुरा स्त्र स् स्त्र स्त्र स्त्र बुर पहुन स्त्र स्त्र

वर्रे वा वि के वा रे सामा निव मिये रे वि की वि निव वा से के वि से कि सी हैं। न्रें अपादेव नर कन सेन यस न्रा नेते खुवा अर्थे वा वी हेर कें व दे स्या मुँवायमाधिव नेम वर्ने वार्भे वायमेव माव हेवा वार्मे ने वर्ग प्रवेश हेरा व्याक्ष्याच्या क्ष्रीं स्प्राचित्राचाद्येया स्वरास्त्र स्वरास्त्र स्वरा स्वरा मुँवायमाधिवायवे भुना वर्देन से नुका है। हैंगाय धिवायवे भुना सूर सकेर में न पाश्यापार मुर धेव प्रिये श्री र में । दिस व पाल्र पाल्व वस नन्द्रायात्र्राचराळदासेदायसाद्दाह्रसार्चेतायसानी वासूदार्से रासे रुटा बेरा थटा वर्दे वा वर्षे वा वर्षे व दे वाहे राया वरा कर से दाया यह इसर्ज्याययान्त्री प्रास्त्र हें राद्वे गुनःहेदेः वेदः वेद्याया देवे वेद्याया वदः दयः नरः कदः सेदः यसः दरः इसर्ज्यायायसाम् वर्षात्राच्यात धुन् बुर् बुर् विन्याग्रेगाय्याक्षे देरान्य संवेदाय्या देयान्य कर् बेद्रायसः तुषा स्वारार्थेवाची हेर वेंच न्वर चात्र इस वेंचायस विवासर नवगःग्रहःतम्यायः नः सेदःह्य विशःमासुहसः मदेः धुन् देशः दः देशः यः नविः मदेर्दिन्यामयान्दरने यमायदमामदेरहेर्जेन विभार्से दासहेन सर्देन शुअ:र् हेंग्रअ:सर:अर्द्धरशःग्रट:यहेंद्रःस्यःयस्य:द्र्यःग्रे:ग्रि:विट्र:सरः थॅर्नराधेवाबेम् धरावाडेवावासे रेजिहेशायानमळ्नासेनायसन्र

इयार्चेषाययाची वासूर सुरासुरायार पेता यार प्रता र्वेग्या वाल्या दशन्त्रन्त्राचे व्ययः दे विषेशन्दर्भे वाषायः सर्द्धर्यः सर्भे रिके प्रि है। र्रेग्रियायाव्यवस्थायय्त्रायये व्ययः देः यहिष्यायाः अस्यायः स्वीकारीः हिन् सर बेन्-धरः र्ह्ये रचार्यायाधेव धर्मान्या क्रुवाचिवाधिव धर्मायित्र स्थायित्र स् क्षेत्रायान्त्रेश्राञ्चतः त्वारावे ह्या ध्येत्राध्य स्ताया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया वित्राया हेर्जेन वहिराया है राया श्रास्वार्या श्री विद्रास्य प्यारा विद्रास्य विद्रास धरायरायेराधमा द्विम्रामान्वराद्यान्वराधिः धरारे महिसार्ट्या सर्द्धरमानविःस्रेम् वर्देवेःदेर्गममयः इराहेम् रेचेनायः साम्माना स्री। विर धराधेरादे। स्थाने मानुमा सेससादरा द्वी साने दे त्या है सान हरा वर रवार्यायाधीत्रायवे द्वीराद्या स्वरायकेत र्वेच वार्यस्यापार स्वराया स्वरा रोसरासाधित्रप्रसाधियात्रपुरित्रीम्प्रदा। यक्षियास्रास्यास्यास्या धेव'सर'वशुर्व'सूव'सूवे अंग्रेअंसर्यासु'न १९५५ से 'रुट'नर'वशुर'नदे ध्रेरःवेशःवेरःवःगरःक्षरःविशःयेवःयःवेःनध्राःयरः चुर्वे।

यान्तवन्त्रायाः वाश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश

त्रज्ञेत्यः त्राह्ण क्षेत्रः त्राह्ण व्याद्र त्राहण व्याद्र त्राहण व्याद्र त्राहण व्याद्र व्य

म्रासेन् में मुन्निन्न निर्मायमेया मुस्रसायस्य स्वीत्र म्या स्वीत्र मुस्रसायस्य स्वीत्र स्वत्य स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्र स्वीत्य नदुःग्रिग्। नदुःग्रिशः ५८। नदुःग्रिशः ५८। नदुःन्रवेरःन्न् १८। यशक्रिश्न वर्षे शक्षेत्र। न्वत्रशक्र स्वाद्यादार्ह्वेदेश्यायश्चायश्चाराक्त्रश धरावनिराधिरार्दे। विवायाञ्चायेराग्री त्ययाव्याद्यादरायाव द्वार्देशायादयाया वे नार्या क्रिंव प्रया यय त्रव से नार्य या त्रव से नार्य स्वर्थ से नार्य से नार्य से नार्य से नार्य से नार्य स <u> तुरःङ्गृत्तेरः नद्धनः प्रश्रेषः प्रश्रेषः प्रान्देषः शुः प्रदेषः शे तुर्यः प्राने श्रेनः तुः</u> कैंग्रा ग्री व्ययन्ता दे त्यापत्र व्यानदे न्या दे किंदि है दायर् दे स्थान् अःहेवार्यायदे श्रुः खुर्या रहेत् कट् श्रुर्ये द्वाया द्वाया देवः श्रीः देवः वीर्येदः वार्यया द्वा ब्रायह्वासम्बर्धनावरास्रवेदायसासारवातुन्वायावात्रान्ता क्षेत्रायवे ब्रा वह्रवान्त्रमास्री स्त्रीत्राचित्र बुदावह्रवा सार्वेतावरास्त्रीयावसायात्रान्त्र सुरा र्रे विश्वास्य साम्नर्धेन दे । सन्दर्भा धेना कुर यथा सुरु द्वेतः

बुत् क्षेत्र श्री अ श्री प्रति प्रति क्षेत्र क्षेत्र स्थित स्थित

र्श्वाययय। श्रूं नाययविद्वात्त्र निष्णे क्षेत्र न्यायया श्रूं नाययय श्रूं नायय श्रं नायय श्रूं नायय श्रं नायय श्रूं नायय विद्य नायय विद

रेश्राक्षां ने नित्राची र्या र्याची र का विष्या के कि स्वापित के स वशुरार्से । पायर वर्षा भेषा वर्षा ख्राया या भी भी प्रायति वर्षा द्यादा ननिवे भ्रीत्वारक्षेत्रियायायदे विवाली क्रिन्तुरवायद्विवाली क्षेट्राची क्षु हेर् क्षुया नदे विवाले। क्षुर्ण्य क्षेट्राचार क्षेत्रीय कारादे विवाले हिर्यर उत्र क्रियाय क्षेत्र विदेश विष्याय है किंत्र हैर्यों विषय ये विषय रेसप्येत्या न्टर्स्याहेस्यीस्येत्राचेत्रस्यप्रहेर्स्यूट्यान्य राते दिरावत्र्या देश तुरावी द्वारावी द्वारावी राष्ट्री राष्ट्री राष्ट्र राष्ट् ये यस सुद्र नुस्र मित्र <u> २८.खेयोश कूं यो. थे.केट.च.लट.लट.यू श्रश्नाचश्चाचश्चाक्षेश सुट.की.</u> न्वायदेखेक्ष्ये अप्रीक्षायञ्चनमाने। नेदेन्नवायाद्यक्षेत्र्यीयाद्ययाद्याया

हे नरः श्रुँ रः नरः गशुरशः श्री।

स्यास्त्रीत्वादित्वाद्गेर्शास्त्रात्वे स्थान्य स्थान्

र्ने श्रेम् प्रमे अर्क्षिण विश्व स्थान क्ष्य प्राया श्रिम श्रेम प्रमे स्थान स्यान स्थान स

मिडेमान्दा यनुस्यान्स्य प्रमुद्दान्य स्थान्त्री । मिडेमान्दा द्वेषानु प्रयोग्ये सेसाय्य स्थान्त्री स्थान्त्री

ग्रीत्र प्रक्षित्र म्याप्ते प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षिते प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्र

तूर्से के शहुवा है। वाहु अर्थि हिया पहें न्या है न्या प्राप्त निवास निवास है हिया के स्था के स्था है न्या है न्या है न्या है न्या प्राप्त निवास है न्या है न्या प्राप्त निवास है न्या प्राप्त है न्या प्त है न्या प्राप्त है न्या प्राप्त

क्रवास्त्रभावस्यास्त्रस्यास्त्रभावस्यास्त्रभावस्यास्त्रस्य स्वित्रस्य स्वत्रस्य स्वत्य स्वत्रस्य स्वत्य स्वत्

गशुमानी वारा मुरान्य मान्य मान ८८ से बिया ब्रिया ब्रिया स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप रेस्रामार्सेन्यामा स्वेतास्य स्वास्थित स्वास्थान स्वास्य स्वास्थान र्शादिर ग्री हैं ग्रां रेश संग्रिंग्य स्वार्ते ग्रांस स्वारे र श्रे दे हैं ग्रांस से संस् युव ग्रीय न १९ मा वसय उर् न से १ रेस नहव मर ग्रीय है या स्वा इ सुर न इन्दिन्ग्रायान् न सुराज्यात् वात्यान् वात्यान् वात्यान्याः इ८.५६ग.मी.ल.भीय.मी.भी.मी.मी.या.या.हो देव.स्योग.५२.१८.मीय.५२४. नुःषःहेःनरःश्वेरःनदेःवरःनरःगश्रुरशःश्वे विवःग्रटःह्याःवेः यश.रु८.री.श्रीय.ता.श्री.शर.स्.लू८.राश.टे.रेया.श्र.श्रुट.क्रिशश. व्याग्रुर्यास्त्रम्, र्ज्यात्र्वात्र्वात्र्य्या मुस्या ग्रीया ग्राप्ता स्वार्याया प्राप्ति र्वे।।

 यश्चरार्दे हैं निविद्याय हैं अदि श्चु निश्च निष्ठे निष्ठे निश्च निष्ठे निष्ठे

महिरामती श्रीमत्मप्तामा विष्यामी श्रीवरम्या न्यवरमाया स्थाप वेगान्यवायात्त्रस्थायाळग्यात्रयात्रीः श्रुन्यान्ना कुःळेवार्यायास्याया सर्धित वेगा राज इससाय सार्टा सर्ये ए हु व रावे क्वें न राज्या वर श्रायाञ्चनायम् स्रायायायम् स्वाया सुन् से निवेदे नित्या सुन् स्ययाया वर्देर्-कवार्या ग्री-क्रेंश्ची र्युर्-पान्ये अपन्य स्वर्पाया अपन्य वर्देवे श्रुं न या वे वर्देन कवा शा श्रें न या भे तथा ने वा पर सुन श्रे विवास नाशुस्रान्तीःमानुषान्त्रसासन्तरम्,नाङ्गीस्रसारादेःस्रार्द्धदेःस्यापास्यापान्सेमासा र्सेन्द्रासहस्राध्य क्षेत्र राजवे कवा यायाया नु हो द्राया स्था सु से दे ही । अन्याश्राने द्वेटायाने दाहे वायायते खुवाउन हिटायर उन खून क्रेया ही नरे केत क्रेंनशक्त क्रेंन्य क्रेंन्य के क् र्। यशन्दर्भेश्वेशःश्चिम्मुन्दर्भश्यासरःश्चेरःनदेःवर्देदःर्धेदःयः ळग्रायाययात् होत्याधेव दे।

देश श्रीं त्र शः श्रीं दः प्रः हे दः हैं ना शः प्रदेः प्युत्यः यत् । श्रुदः प्रदेः प्रदेः प्रदेः श्रीं दः प्रः हे दः हैं दः प्रदेः प्र

ह्यर सेसस (वृ.च :यस है। वर वी दिव खुर ही :रेवा हु। हुन पर रहत है) हिर्म्स् इव्सेर्ट्य दिश्ये अस्त स्वया क्रेव्य हिर्म्स स्वया सेव्य हिर्म्स स्वया सेव्य स्वया स्वया स्वया स्वया र् वुर नवे नदे नवे दे ने र क्रेर्ने देव के दे वि क हेर की देव से सम् विस्रसः (वृ.चः व्यसः वदः वी दिवः देवा ग्रुः ह्यदः सरः उतः क्रीसः सः देः व्यद्सेवासः यदे सुरा भे रा सु सु र प्रदे रहें र न न ने न न ने र स न न न न न स स स सु सु र न न न न धेन्टें र ने ने न अद्धेर अ ख़्व न् र न व का र का क्रें र हिन् क्रें अ पर न न शुर का राष्ट्रमःर्से । यदादेष्ठेनायया ननदानेयान्यानेयाने नार्से निर् रेसाराने है। रेग्रायाये प्राराधिया ग्रीया व्यावके क्याया स्वाया कुरा र्शेम्था ग्रिया विसेयानाने सूमायया स्रेथा पेता विस्था स्रिया यःश्रेष्यश्राम्। विदःमी देवादी है चायशा विश्वाद्या वदादेवा हिद्यारायशः भ्रेशमधी । भ्रिमदी प्रमुम्यम् छेन् भ्रिम्मे । विश्वाम् शुम्यामधी मेवाया यशक्राश्री । देवे भ्री राधे दान दे ना के दारे वे दे ने साम्या मुन्यमाग्रद्द्वरार्दिनेमामा इसमानदे नदे दि दे मुन्या पदानेमा यर गुरें। विश्वाल परे देश क्रेंट हिन क्रेंस यर पश्चिर या विश्वाल परेंद्र स्यायान्यात्रेयाची सेवायायाया नहेत्र त्यानेयाय मास्याया स्वा

শ্বন্ধ এই প্রত্তি শ্রু ব্রান্ধ ক্রা শ্রু শার্ম প্রত্তি শ্রু শার্ম প্রত্তি শ্রু শার্ম প্রত্তি শ্রু শার্ম প্রত্তি শ্রু শার্ম শার্ম শ্রু শার্ম শার্ম শ্রু শার্ম শ্রু শার্ম শ্রু শার্ম শ্রু শার্ম শ্রু শার্ম শার্ম শার্ম শ্রু শার্ম শার্ম

नसूर्याम्बुसार्धेन्यः सृष्टीः महिर्यायाम्बुसान् से विदेन्ने ।

हिन ग्री क्षेत्र या न हो न । न क्षेत्र में या या वे क्षेत्र या न वे विषय है या या वे विषय है या या विषय है या व र्श्वे द्रायाप्तरे अपद्रा दे से से प्यार्श्वे अपवस्यार्श्वे अपने द्राया है अपने द्राया है अपने द्राया है अपने द र्श्वेन्याम्बुयाम्बुयाधेन। नुयामे श्वेन्यान् भेन्यान् भाग्यान् भेन्यान् भेन ननरानुसान्दा यसार्श्वेसानुसाग्चीरश्चेनामानेसा श्वेसायसार्थ्यास्य य वित्रायि श्री मान्या वित्र वित्र वित्र श्री मान्या वित्र श्री मान्या वित्र श्री मान्या वित्र श्री मान्या वित्र श्री मान्य वित्र स्थी मान्य वित्र स्थी मान्य वित्र स्थी मान्य वित्र स्थी मान्य स्थी स्थी मान्य स्थी स्थी यथा ८८.सू.ची चशुट.रूथ.हूच.सर.श्रूस.स.यश.च बट.ही शु.शूच.सह. ब्रायह्वासर्वेवाग्रीवरातुर्वेद्राग्रा विवानेवार्वेवाग्रीत्र्रीत्या ने न्यते भूतरा निष्या भूगा से निष्ठी न भू निष्ठा सम्मा से त्रास्त्र स्था सुन र्बेट्सी'द्रेशमुन'वसुन'रवेटेर्देन'दुः श्रेंद्र'रा होद्र'रा'द्रा शेशशदनेतः र्वेन'व्याञ्चु' स्याप्त्युन'पिरे'र्नेव'र्नु श्चें न'पाने न'पान्ना श्चु' स्याप्ति व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति व र्दिन्यायायाचीयासुन्यायदेःषोःनेयाचीःसुर्देन्यदेर्देव्दर्शेन्याचेन्या न्दा क्रिंगः प्रते बुदः वह्या विताव श्राक्षेत्र स्वे बुदः वह्या विताय वे दिवः र्भेर्प्याचेर्प्याक्षेप्रविष्यस्थेर्प्यवेधिम् देस्य न्स्रीर्प्रेसाची र्वेष्यस्थ वर्चेन में भें निया चुरम्न परियान वर्षा वर्षेन प्रभें निया स्वास्य स्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य धेव'यय'द्या हैंगय'रेय'ग्रे'र्यमय'द्येव'ग्रे'र्युट्य'य्यंद्रियाट' वगाधितः त्रा शेसशः द्वेतः वितः प्रशाह्य । प्रश्ने दः देशः मश्रेष्ट्रिन्यः सञ्ज्ञासरः बुद्दास्य मिन्स्या सुनः सरः से विस्तान्य सः सिनः ग्रम्। बुद्रास्मिन्द्रस्यागुद्रान्त्रीःसबर्विनाःसः इस्रसः नम् नावदःसरःसः

षर:रुष:बुर:दुर:नरे:ब्रुग:हु:द्युन:परे:बन्य:बु:बुर्:प:बुर्:प:बेर्: र्वे। क्रियाश्वारेशमी:वेयाश्वारविवामी:श्वेर्पाश्वीर केर्याश्वार्याम्य स्वराहिता यदेर्देन्द्रः धेन्दे। श्रुट्रायाश्चार्याया याद्यात्राया श्रुट्राया श्रूट्राया श्रुट्राया श्रुट्राया श्रुट्राया श्रुट्राया श्रुट्राया श्रूट्राया श्रुट्राया श्रूट्राया श्रुट्राया श्रूट्राया श्रूट्राया श्रुट्राया श्रूट्राया वर्ळर कु न से द प्रवे भे र हो कुर ने क्या वर्जे र सबर भे व प्रवे द न र वीयाधे भेयावाश्यावश्चेत्र त्यायाया धेते ख्वाक्त स्वाया स्वायाया स्वायायाया स्वायायायायायायायायायायायायायायाया शेशश्चित्रची भेशश्चित्र श्चित्र स्वतः वित्र स्वतः वित्र स्वतः वित्र वित् ग्रम्भेस्यात् नदे तुर्यामास्य स्ट्रास्य ग्रम् न्त्रम् मुदे र्स्य त्यादे इस्रयायाष्ट्रायराकेवारी विनय्यादे विन्वादेता हैन शेर् शेर् शेर्मे वायाया विद्यायात् वर्वे नवे ने अप्यापित् प्रमाण्या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप *ই*ল্ম'নিয়'য়ৢ'নিল্ম'ঀয়ৢ৾য়'য়ৣ৾৾ৢঢ়'য়৾য়'দিয়'ড়য়'য়য়'য়য়ৢঢ়য়'য়য়য়'য়ৢ 到

यशक्तान्त्रात्वरात्वर्याक्रश्चर्यात्रात्वर्याक्ष्यात्रात्वर्यात्रः श्चित्रः वहत्वर्याः वहत्यात्रः वहत्यात्रः वहत्यात्रः वहत्यात्रः श्चित्रः वहत्यात्रः वहत्याः वहत्या

प्राचित्र में प

चान्यस्त्रेयाचार्यस्त्राच्छा । विकान्यस्य क्ष्र्र्वाय्यम् न्यास्त्रस्त्राच्छा । विकान्यस्य क्ष्र्र्वाय्यस्य क्ष्र्र्वायः क्ष्र्याच्छा । विकान्यस्य क्ष्र्र्वायः क्ष्र्यः विकान्यस्य क्ष्र्र्वायः क्ष्र्यः विकान्यस्य क्ष्र्यस्य क्ष्र्यः विकान्यस्य क्ष्र्यस्य विकान्यस्य विकान्यस्य क्ष्र्यस्य विकान्यस्य विकान्

नवि'स'यन्त्रश्रम्भ सरशःक्त्रश्रदे प्रची युन'स'केव्'से'नक्त्रप्र'न्त्रशः विद्या

वि:क्युमःप्रमानी:वर्षेष्वःयश्वे । श्वेः संगित्रे संगित्रे संगित्रे संगित्रे संगित्रे संगित्रे संगित्रे संगित्र संगित्

गशुस्र मास्ति । प्राप्ति स्वाप्ति स्वा

यश्रश्चर्यम्भः क्यात्र्यम् अत्यात्रात्र्यम् व्यव्यात्रः स्वात्रः स्वात्रः

क्षेत्र-क्षेत्र-त्र-त्र्वेत्-त्र-व्यक्ष्य-त्र-व्यक्ष-त्यक्ष-त्यक्य-त्यक्ष-त्

महास्त्रभूराविः द्वाराया व्रियायायुरायदे द्वारायदे द्वा

विष्यः विषयः स्वार्थः विषयः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्यः स

नेति तिं न्याययाप्य प्याप्त पार्टी निं में प्याययाप्त प्याप्त पार्टी निं से प्राययाप्त प्याप्त प्राययाप्त प्याप्त प्राययाप्त प्रायय प्यय प्रायय प्रायय प्रायय प्रायय प्रायय प्रायय प्रायय प्रायय प्रायय

कुःन्वरःश्र्वाश्चरनुद्दाः सुद्धाः स्वाधः स्व

न्त्रितः इ.या.यक्ष्रायाय्या क्षेत्रायदे यदे । यायायहर हो इयदे । न्याये प्रश्लेष वर्षेर्र्, व्रेंच या बेश होर्वे । दे यहिश हो केर द्वर हे रेस विव ह्रेंच स्रान्त्राम्याम् विवादित्त्वीत्रत्र्यं स्राम्यान्याम्यान्यस्यः विवाद्याः नदे नाय अहर दे। ग्रां हैं न ग्रां कुन कुन ग्री से सस ग्री द्रीय विस्त्र हैं न रावेश हुर्दे । पर्वेग पर्ने प्रायम प् विनायाने के ना के सुरक्षेत्र के ना के न वरःवर्गःवर्ने दरःवर्ने वे अर्रे क्रेंद्रायुग्रायः विदःयर कुरः वदः वेदः व यानिन्यान्त्रम्ययाद्वर्दे । देनिक्ष्याः निन्दित्राः मैं रासरे प्रवर्गविष्यं दे। दें रातुरा तुरा से ससाम्या वसाया से रास वाप्या सदे ख़ूत क्रे रा भी द्वाद न के गुर हैं न भी द्वार न वि सदे। वि स्वार ग्वितः इस्रार्भः ग्रेप्तियः कैंग्वाद्यान्य प्रदारम् सुसार्य राज्य प्राप्ति । विवासियान न्नरःचित्रः अः व्यान्यः क्रुनः ह्रिया अः यमः कृतः यः यः अः न्नरः या नु अः वर्ष्ट्र श्री : भ्रें र व्याप्ट्रे : भ्रें व या सु द हैं वाया पर १ वर्ष द सु द से वाया पर १ वर्ष मॅिट्सिटेमें ट्सिनिवेस में निवान कुर्ने में निवास से मिल्या में में से मिल्या में मिलया में मि नन्द्री विश्वस्वायःदेयायश्वास्त्रर्भी सळ्द्रद्रमेशःस्यायदेः र्द्रेट्या ब्रियाश्यी ख्राया पुर्या की क्षाप्त हो क्षाप्त हो स्ट्रिट्य के द्राया के वा कि व्याया मदे सकें मा मु से प्रमूर नदे नदे न के द में दे मु म स दे में न हो र से द यन्तराम्डिमानुः र्क्षम्यायान्ते मित्रयदे प्यतः मित्रयदे प्रमान्यवे पास्ते। दे

यायहेगाहेत्यस्य प्रत्याप्त प्राप्त प्रत्याप्त प्राप्त प्रत्याप्त प्रत्याप्त प्रत्याप्त प्रत्याप्त प्रत्याप्त प्रत्याप्त प्रत्य प्रत्य

सुर्नि हासुर न द्वानि स्वानि स्वानि स्वानि स्वानि स्वानि सुर्नि स्वानि स्वानि

या देरदेवास्याकुः सः या तुराया विष्टा देवार्ये केवे देवायाया देवः केव खुग्राय वर्षाय त्यर हा विर केव तु से कें र पहें व दरा विर पिये कुरस्यस्तिन श्रिवायस्यस्य वित्ति वियायस्य श्रिवायः नडुःश्रेत्रान्दा वर्ष्ट्रावेदेर्रम्याया नायान्त्राहेर् क्रियायासुरायाद्वा मह्नदेरियायाया वहवायासेन्यदेरक्रास्र्रिन्स्री र्बेसम्भूत्वात्रा रयाचीवे रेग्रामाया नर्गेत्रसर्वेगार्भेग्रसर्वेत्या ८८। कुलानः क्रेट्रा अहंदा हैं वोडेगा सदे देगा राजा क्रेंट हेट क्रेट हेटे र्शे । श्रेंनामर्हिन यान्नेन त्येना व्यामणेया ह्न श्रा करावश्रदान हे न्त्राच्या रवा तकवा वार इत श्रुवा या अदे अकुं तर्वे र हो र या ध्रुवा या गर्सेन्न्सर्सर्हेन् हेन्यः क्षेत्रेन्येन्यः क्षेत्रायः क्ष्मा नः वर्षा हिराया न्द्रायेत्। भ्रेयानार्येत्या भ्रामश्रदः श्रमयाहेत्यनेनाया भ्रेम्यर्येत्या र्वात्रा अरमा मुमान्या हे अत्यासान्या में निमाना स्वीत्रा हे र्वे त्यायिव या नगे पर्वे त्यायिव या स्रायाधिन हैव या इस्र या सुर्वे क्षेरविश्वराध्यम्या वार्वाया ह्या है। दें। देवार्ग्यरकवायायाने व्येद्राया क्षे.च ह्याल्वार्थाके स्वास्था सुराचारा वावराया स्वासावावरास्या नन्द्रपदेद्रयाक्षेत्राः इसमाग्रद्धाराकेरः सुदः दर्वे सः समास्रुसः से ।

व्यक्षः स्वावित्रः स्

नेतः नश्चेनः रेशः ग्रीः तकेन्यः विश्वे श्रुः हैं स्थ्रेनः या वाश्वनः हैं हे रें भ्रुन। श्रुनशहें हें श्रुनः या धें भेशः हैं हैं श्रुनः केने प्रेने श्रुनः श्रुनः या क्षाः या विवया धिर्ने स्याः विवया धिर्ने स्याः विवया धिर्ने स्याः विवयः स्थाः विवयः स्थाः स्थ

गहिरायावित्र, यक्षेत्र, यारायावित्र, यक्षेत्र, य

वै। इक्त्राचियायेयाश्वराक्षे। क्षेप्राध्यक्षाक्ष्राच्या रेसानविन्दे हु: हु: माठव ग्री ह: विश्वा ग्राया से खु: दसास्रापिये । प्रस्था भी पिर्देग'दग्रद्रास्थर'धूर'ग् विग्'द्राह्य न्याद्राह्य विश्व द्राह्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य गश्रद्याश्री १ १ ने नास्रव कि नि ने नास्रव की कुत वा ने सामित्र वित नि सम रोर्डिं प्रमान्दर्भ्यादेर मुलेया म्याद्र स्मानेया से स्टर् विस्थान्य विदेवान्थेरव्यार्थेद्वार्ये विश्वान्यविक्षात्राचित्रं गश्रम्याने। यदे प्राप्या सळे व दुवा हे या होते। सप्ते म दुवा से। वाईवा र्हेराग्री परिराधे स्वित्र प्राचित्र र्शे.यिष्ठेश.मा क्षेट.योद.यक्चिट.मा क्षे.यद.र.यवे.मा योशट.योवश.ग्री.श्रं. गहेशरायें। श्रिंगरहें वा अहसामवर्ग ग्रेवरग्री वियाग्रेता स्था म्या इत्याम भ्रमानेता क्रमानेता क्रमानेता स्रमानेता स्रमानेता ग्रम् इत्यन्यम्यामिष्यसून्यास्ति। क्रुन्यावद्यस्यावे त्रासुप्रके के समित्राम्याद्वरा होत् हो सुरक्षे कु वित्रं त्रास्यस्य सुर श्रे कु नर न न ए ग्रम् दि र ने न निष्या में में निष्या र्रे क्षंत्रेयानिवन्त्रयायान्यस्तर्ये स्थान्यस्तर्या से साम्यान्य नवित्रक्तरमे कुर्यापे भेषा ग्रीप्रम्य राष्ट्रा नभू निष्ट्री । भ्री नापि स्वास्त्र स्वार्त् स्ट्रेट दिंगा मी सुनरा द रेस निवेद दस सामित सूट र्से मा वह द दट पो नेस ग्री:कुट:बुर:श्रेय:श्रें:बेट:पादश श्रेट:पादे:पर:दिन:स्पर:बेंदि:हायद्वादः क्रूर्यो क्रूर्या व्याप्त यात्र यात्र या व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्यापत व्

ग्रेन कुं इरमान ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा मिन ग्री स्वा ग्रा मिन ग्री स्वा ग्री स्वा ग्री स्वा मिन स्व मिन स्वा मिन स्वा मिन स्वा मिन स्व मिन स्वा मिन स्व मि विद्यावस्य प्राधिव ग्राम् कुरविरक्षे दे स्रम्य से से प्राधित स्रम्य से से प्राधित स्रम्य से से स्रम्य से से स् स्याग्री इत्त्राया हिनायर कुं नाधे वर्ते । श्रे ने वर्षे वर्षे श्रेराम श्रिराम श्रि नःनिवरःरेश्रायःनिवरः । यदःयदेःग्वयः भ्रम्ययः दः। द्वेःययः श्रीःग्वयः अन्यान्ता गरिन्द्रमार्यदेशम्या अन्यान्ता क्रियायानी मान्या अन्या भीरामान के निष्या के स्वाया निष्या के स्वाया निष्या के स्वाया निष्या के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्व नुवे ननुषा वे रानुवे हेरासूर सूर विवा यो रेवायान वि रेया नविव वावया वा क्षेत्रम्भन्यप्रत्यवियाम्हेशः क्षेत्र्याक्ष्याक्षाक्षाक्षः व्या गहिराचिगाये गिरुपामी स्ट्रेट द प्यें द संप्ये द श्री चिगाये से से त से द सर याश्रुद्रशःश्री वियाये देयाश्राचित्र याद्रेश चित्र भ्रुपाश्रुद्र सुयाश्राये भेशः ग्री विवा खेत्र । खुरु प्रवा धेर प्रे से के श्री विवा खे खेरा विराह्य अर प्रदेश के र्हेन्गी कुट क्रम्भ ही में प्रदास्त्र भी कुट क्रम्भ हो प्रमान्त्र प्रमा ध्रम रा.र्टर.श्रेर.धेर.योशर.योषश्य.श्री.तर्री.यश्री श्री.श्रास्टर.श्री.यर्ट्टर.पश्चिताय. शुःदर् न्या भे हेवा यन्दरभे वायय व भेरा देशे भेरा सम्दर्ग मदिः कें रेष्ट्र- कुराक्षे नान्दर श्चन कुराक्षेत्र कें रावत् निया नियान्दर वह्यानः क्रेन्यायय। यान्यायवे ध्याय सूरान्तः क्षुत्र हेन्यव्यायान्ता

श्राम्या व्याप्ता स्थान्त स्थान स्य

खुग्रभायदे रे श्चिताया वस्त्रभावदे रे त्रीया भारते स्त्रभाव वित्र श्चिता स्तर स्तर स्त्रभाव श्चिता स्त्रभाव स्

चित्राः त्रियाः स्वार्ध्याः स्वार्धिः स्वार्धिः स्वार्धिः स्वार्धिः स्वार्धिः स्वार्धिः स्वार्धिः स्वार्धः स्वर्धः स्वार्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्य

इट्यायान्त्रम्थान्त्रम्यान्त्रम्थान्यान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्थान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्थान्त्रम्यान्त्यम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यम्यान्त्रम्यम्यम्यम्यम्यम्यस्यम्यम्यम्यम्यम्यस्यम्यम्यस्यम्यम्यस्यम्यम्यस्यम्यस

मॅ निस्ति स्वी स्वाकायित में स्वाकाय में स्वाकाय स्वी स्वाकाय स्वी स्वाकाय स्वी स्वाकाय स्वी स्वाकाय स्वाकाय

त्ते न्यान्य स्वतः विकास स्वतः स्वत

स्वायः देशायः स्वायः वित्रायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वयः स्व

युग्रभायदेवे सें स्पर्यस्था गृहेश सुर द्वा स्मर रहे द प्रवे सें त पर्वे प्येत प्रवे । धेरा वर्देर्से कुरु है। देर्ग कुर द्वा सर वेस सव हगार पीत सर र्श्वेर-दुगागी वेद वेश-दुः अर-चन्द्र पदे श्वेर-दः या व्यवस्था से विदावेशः सर में र दे क्षेर न निर ग्रार स्वार से स दर वार्य के के विषय हैं द वार दे दिवा हुर न्नुःसरः र्ह्नः पदेः र्क्ट्रेनः पर्वेः धेनः प्रायः प्रायः प्रवेः श्री रः है। स्वायः रेसः यथ। वालभःवाल्य मु: श्रुटः न् नु: अरः छुं नः नः लटः श्रेरः नश्रभः मुशः न् नुः सःश्वरायायात्र्रियाते। वेयादरा ग्राययार्श्वरायया त्यायिराययाःश्वेगा कुःश्रें ग्राथः ग्री:ह्ग्राथः इयथः श्रें रः सूर् ग्री:भ्रूयथः शुः ग्रीहरू थः यं दे। र्यरः र्रेति सुर इस्र साध्या शास्य पाया यह गारा हैं गारि है । यर सें राया दरा वरः र् देवा पदे र् या ग्रे ह्वाया धेव विदा येयय द्वेव सेवाय ग्रे स्नाय र शुःवळरःनवे श्चेना कुः सेनासःनवे दे। क्रेंटासःनवे देवे सह्वार्धेनासःशुः वळर्नविःह्याशाधिवःया नेःयावे क्वरःक्वरं क्वरः वश्चियानान्वी शासरः ग्री इसामा सर्वेदान द्वा क्रिंदामा सुरामा सुरामी है। क्रिंदा के वा साम स्वाप्त क्रिंदा में स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप हुर्देदः अः सेदःदी विशःविदः हुः या श्रयः यस्या शुद्रसः प्रदेः ध्रीरः दी।

र्शेन् श्रुन् श्री भूत्र श्रुन् । प्राया श्री म्या श्री स्वाया प्राया श्री म्या श्री स्वाया प्राया श्री स्वाया प्राया श्री स्वाया प्राया हिन् हो स्वाया प्राया हिन् हो स्वाया प्राया हिन् हो स्वाया प्राया हिन् हो स्वाया प्राया हो स्वया स्वय

त्रेन्द्रभग्ने व्यायात्र से व्यायायात्र से व्यायात्र से व्यायायात्र से व्यायायात्र से व्यायायात्र से व्यायायात्र से व्यायायात्र से व्यायायात्र से व्यायायायात्र से व्यायायाया

चै तु अदा दे अहें न अद्ये अदे व अद्ये अदे व अद्ये न हें ल्या क्षें अद्ये अद्य

सुर्श्याश्वाद्येर्धेर्धेर्यं स्थित्रेर्धेर्दे स्थान्य स्थान्य

न्तुःसदेःव्रान्त्र्वःयरःगव्रयःयंत्रे र्य्याः हेवः श्रीत्राः हेवः स्वर्धेवः श्रीः वहेंत्रस्य नश्चर्तिया प्रति श्चिरः र्रे । । दे त्या सुर द्वा स्ट्रिं स्पर्दः नर्द्धन् पाने र निवस पा हुन न न है स इव ही न हुस से दि इया वर्हे र ही। सब्यानुसर्से वनराव्यापस्य (वृप्तः हे दे दे हे से से दे परान् दे राष्ट्र स्व मुरायाद्य्यातायावात्त्रेयाभ्रेयाभ्रायवीरायद्वायात्रायान्या र्शे । दे प्यट रें र तुरे हेर विस्थार गर रेंदि हेवा खे वाहेवा वावतर् र वार्थे बेट्रानुष्ठ्यायाय्ययाक्षायाः विद्यान्यत्रे विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य ने भू नुदे रुं य ग्री अ ने अ निव कें र नुदे हे व अ ग्रायर ग्राव अ ग्री परिं र व्यान्ता ने वया है। या ने वया है तया है। या ने वया अधीव या नि दे वर्षान्ययान्द्रा देवसमाद्धनार्हेराग्ची नरमावसम्बनार्धारे रेर विस्र सार्य में निर्मा के स्रिस स्रित हुना न कु में निर्मा से न नु में सार्य स् नक्षेत्रभाषाया देवे ग्राह्म स्ट्रेन ग्री से विश्व माने नवे स्राह्म स्ट्रिन स्ट्राह्म स्ट्रिन स्ट्री रेसाधराश्चे विद्या दे इसस्य ग्रीसाम्बद्धार में श्वेद ग्री व्यस सुद विवादी साधर

त्रुसः भिरास्य ग्रीः ने स्वराद्धिः का वर्षः स्वराद्धिः स्वराद्धिः

देः त्रश्चाश्वरः वाद्वशः क्षेः विद्वरः विद्वशः विद्वशः विद्वरः विद्वशः विद्वरः विद्वशः विद्वरः विद्वशः विद्वरः विद्वर

नः निहेत द्वा नि स्था नि स्था

য়्येन् श्चे 'तर्वे 'क्ष्म'त्र गुरु क्षु त्रि चुर से स्या क्ष्य स्या चुर प्राचित्र क्ष्य क

णराक्तियान्तराने हिन् ग्री श्री हे साइव ग्री साधी श्री त्र श्री त्री त्र श्री त्र श्री त्र श्री त्र श्री त्र श

राक्ष्रशहे स्रूरावरा ज्ञाराचरा वाहेराया स्रूरावा व्याया ग्री स्रूरावा व्याया ग्री स्रूरावा व्याया ग्री स्रूरावा ग्रुग् क्रुर् यश्चुर् यर वर्दे द द्वे श्वा दे स्ट्रिं क्षेत्र क्षेत्र श्वा यह स अन्य शुः भूर नदे नु या विष्र प्या पु या शुः यु र न ने व्या प्या शुः या इस्रभःग्रीभःहे नवदः ५ ग्रुरः यस्य न सुनः यस्य सुन् स्य स्था ग्री:भूत्रशःग्री:दे: प्यरःग्रह्मग्रह्मरायशा प्यरःदर्शरः स्वरं नश्चनमःमःसेदःषदःषयःमुःभ्रनमःवर्देःवदःविगःदमःनश्चनमःमःदः हिन्सेन्न् र्सेन्न प्रेत्र नियायियाययायिक्ष सिन्द्र नियाययायायिक्ष सिन्द्र नियाययाययायय यव ने अ हो द द द द र यह अ स (ब् न र न माय न आ अर प्या र के अ हो हु व थ्व इसस्य वादी न वादि न विषय के यर में यश्व पर हे य दव शे भ्रवयावया इया वर्शे र पर र है र परें या यवशायाक्षेंद्राया वियाशातु शायि देशाया प्याया प्याया भी सामित्रा विद्याया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाय रान्दा यूनायाने यायया न्याया र्वाया स्वाया स्वया स्वया विष्या स्वया विष्या स्वया विषया स्वया विषया स्वया विषया व्यामित्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् । यवायमात्र्यायये स्नाव्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र मित्रे कु त्या देवे के व दे त्यू मूर मूर मार्च सामी स्थान हैं धेर:र्रा।

देशन् भुदे त्युवाराया ह्याद्यास्य र्क्षेष्य श्रास्य त्युश्राष्ट्र स्थाया स्या न्वें अय्यक्ष ने वे वाके र व्यू र ये है अ भ्रुवा अ वाके र न् वश्वर वाक्षर त्रस्यायानुहरकुनानुःसेस्यायहण्योद्रान्त्रेहरसामसानेससार्वेदे पिराया स्याया स् यावयुवायायावेससारेदि।वससावदाद्वीसायरावासुदसायाविसासी वयात्राक्ष्याहे सूराधेवा कूराया त्याया राष्ट्रीय राष्ट्र मदे सक्ष स्थान म्या मार क्षेत्र त्या मित्र स्थान मार क्षेत्र त्या मित्र सक्ष स्थान स न्हेंन्गी वर्षेयासम्भेत्र हुः झानवे केंन्या स्यामी सेससाने हेन्स केंगा हुः शेष्यूर्यन्ति नदेष्विर्दे ने राष्ट्री न विष्ट्री ने प्रति । र्ने.र्नेर.सुर.सुर.सुर्व.सुर्व.सुर.लर.सूर्या ब्राया ग्री.सूर.प्यूर.युर. अन्यःविनाः धेन्द्राः सेन्द्रः भूनः धेन् वेयः होन्यायाः विश्वः सूनः नयः नन्गाः भुः नुयाः विक्रत्या केन्याः या स्टार हो। क्रिं स्वर क्षया ग्रीया क्षया स्वर न्ध्रिन्यदेश्वर्ष्यन्यम्यम्यदेश्वर्यस्यस्यस्यस्यस्य

येवे संत्वस्तुं सर्देत् दुं चेद्रात् वे स्वाद्धाः स्वाद

त्रु: क्षेट्र: ग्री: प्रक्ष: ग्रीक: क्ष्राक्ष: क्ष्राक्ष: प्रक्ष: प्रक

नःगहेशःथॅर्ने। इस्रिन्चे स्ट्रिं इर्पे व्याप्तरं व्याप्तरं वित्र द्वा यरयाम्यान्यानायाने स्थाने । स्याने । स्थाने । स र्रे विवयः अपियः ग्रीयः वर्ष्यः ग्रीयः है । यर्षः मुयः वर्ष्यः वर्षे । त्यः वर्षे र नदेः खुनाराः श्रें वः धीतः वा वदेवेः खुवादी सूरः नवितः विस्रारः नगरः दसरः ग्री विपाये हे विक्रिया हैं ट दुवा वक्क द्रायदे यय द्रया पर सर वहेवाया यायमा भेरवगुरानदेरनदेरमदेरके भाराके निक्रमा स्ट्रिंट द्वारम् हिर धराश्चे विद्या दे इस्र राग्ने सार्य विदाय साह्य दे हैं हि के पार्श्वे दा दुर्गा वहा है। एअः क्रेंट्या त्राया रहें हे दे भ्राण्या पुरा वया क्रेंट्य है स्यापा उदा प्र शेसर्अं संभाष्ट्रस्थ र देवा उर् सर्व सुय र हेवारा मंदे सर्वे वा हु से वशुरानवे नदे नक्षेत्र संवे दे में राशुरानवे । वार्श्वराणवा नद्वा थ्वर ग्री:बुदायह्वार्देहे पळदावी विदायसदासदिव दु गुरु हो। यहेवा हेव ग्री: पिस्रशास्त्रवरसे न स्माना वाराय वाराय न स्मानी स वजुरः नःधेवःदे॥॥

यर्भेत्रभाषा यर्भेत्रभाष्ट्य र्त्ते न व द्या न व त्या व त्

क्ष्रिं स्ट्रिं स्ट्रे क्ष्या स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रे स्ट्रें क्ष्या स्ट्रें स

भुग्गश्यग्राङ्ग्याय्यायः क्राय्यः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप स्वार्गः त्राव्यः स्वाप्तः स्वापतः स

वन्नाःग्रम् अदिन्यः श्रीः वर्षे म्या स्वार्थः अर्थे म्या स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

डे अग्वास्त्र के त्र कुत्र में निविद्य अग्वस्त्र के विद्या विद्य कि स्था विद्य कि स्था कि स्थ